बरिस 7 अंक 25

सिरिजन

www.sirijan.com

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

जुलाई-सितम्बर 2024

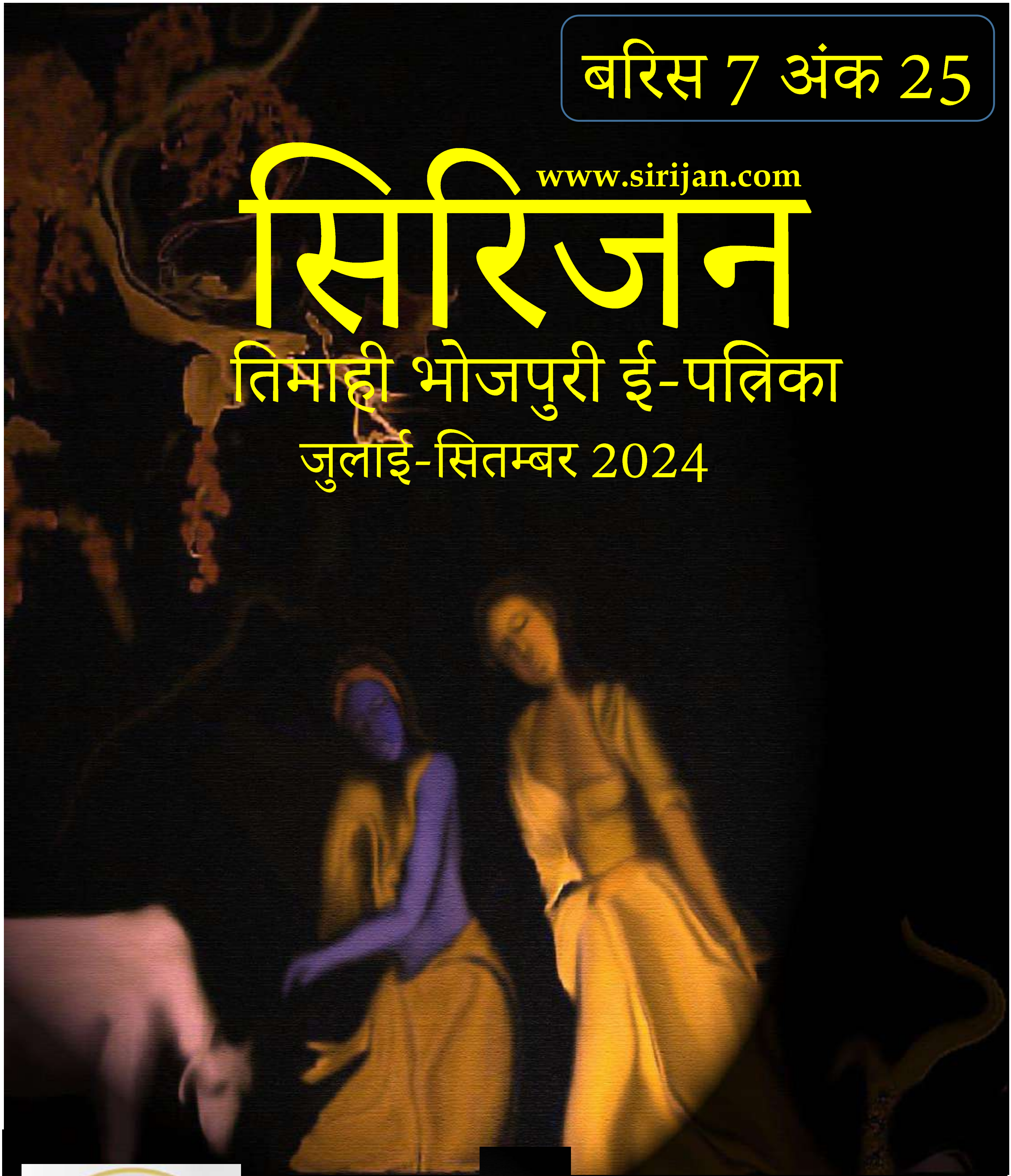

/jaibhojpurijaibhojpuria @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका
सिरिजन (अंक 25: जुलाई-सितम्बर 2024)

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)
		2. नरसिह तिवारी , (दिल्ली)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
	:	
उप सम्पादक कार्यकारी सम्पादक सलाहकार सम्पादक	: : :	तारकेश्वर राय संजय कुमार मिश्र राजीव उपाध्याय
सह सम्पादक	:	1. भावेश अंजन
		2. अमरेन्द्र कुमार सिह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविद सिह, 2. मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
	:	
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

मुखपृष्ठ के चित्रकार - श्री दिनेश पाण्डेय, पटना

अनुक्रम

संपादकीय

- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 4

आपन बात

- आपन बात - तारकेश्वर राय / 6

कनखी

- डमरुआ के विआह-डॉ. अनिल चौबे /9

कथा-कहानी

- जड़ से जुड़ाव - संगीत सुभाष / 13
- ओकर हिस्सा के दरद - कनक किशोर / 17
- चले के बेरिया - विद्या शंकर विद्यार्थी / 19
- प्रीत के कोहबर - बिम्मी कुंवर / 25

गीत/ गजल

- ऊ नामी आदमिन के........ - मनोज भावुक / 12
- मिले ना ठिकाना - संगीत सुभाष / 14
- हियरा के अखरा - सुरेश गुप्त / 21
- ओ रे निनिआ - बिम्मी कुंवर / 31
- बात दिल के - अनिल कुमार दूबे "अंशु" / 42
- बेवजह बात - अनिल कुमार दूबे "अंशु" / 42
- मन के बतिया - अनिल कुमार दूबे "अंशु" / 42
- जियरा जुड़ा गइल - शिब्बू - ग़ाज़ीपुरी / 49
- भोजपुरी परम्परागत झूमर गीत - मोहन पाण्डेय भ्रमर / 54
- लउकत खाँटी प्यार कहाँ बा - कृष्णा श्रीवास्तव / 56
- जिनिगिया के कथरी - शालिनी रंजन / 57
- कहऽ नमस्कार सबके - अरविन्द तिवारी / 60
- कइसे लोगवा चलिहें ,,,,, - अरविन्द तिवारी / 61
- धुमिल मन किसनवा ए हरी - मधुसूदन पाण्डेय / 62
- ए सखि हमरी दुवरिया - मधुसूदन पाण्डेय / 62
- घर भर के पोस देले - गणेश नाथ तिवारी / 64
- इनरा - सिद्धार्थ गोरखपुरी / 71
- सफर जिनगी के - रामेश्वर तिवारी 'राजन' / 72
- लागल आग बुझावल जाला - मनोज कौशल / 73
- हम गीत कहाँ से ले आईं? - सुमन सिंह / 74
- बाउर दरुइया - ऋषि तिवारी / 75
- करऽ ना छिछालेदर - गोपाल दूबे / 76
- मनुहार सुना हे जगजननी - गोपाल दूबे / 76

कविता

- काश! हम राह बन जइतीं - कनक किशोर / 15
- दर्द के रेखा - कनक किशोर / 15
- महाजनी सभ्यता - कनक किशोर / 15
- सुख के चान - कनक किशोर / 16
- अखिलेश्वर के दोहा - अखिलेश्वर मिश्र / 18
- चार मनहरण घनाक्षरी छन्द - नित्यानन्द पाण्डेय 'मधुर' / 24
- माई - माया शर्मा / 34
- चिरई - शशि बिन्दु नारायण मिश्र / 37
- खुश बानीं हम गाँव में बानीं - सन्तोष विश्वकर्मा सूर्य / 53
- शत-शत नमन... - सुजीत सिंह / 55
- वर्तमान में भविष्य के...- सुजीत सिंह / 55
- कलजुगिया माई - शालिनी रंजन / 58
- गाँव के राजनीति - कुमार अजय सिंह / 59
- सते आगरह के उषा जे बनली......- नक्क मझव्वी/65
- ठीक बा नू ? - नक्क मझव्वी/ 66
- मन - सुहानी राय / 69
- कहानी ससुरारी के - दीपक तिवारी / 70

पुरुखन के कोठार से

- अंजन जी कऽ एगो गीत / 5
- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 8

आलेख/निबंध

- भोजपुरी भाषा-साहित्य के विकास यात्रा - प्रो. जयकान्त सिंह ' जय' / 10
- भोजपुरिया समाज में गारी गवला के परम्परा-सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा / 22
- भँइस-भँइसा - मार्कण्डेय शारदेय /38
- लोकगीतन में युग-बोध - डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद / 43
- तोहार किरिये,हम ,,,,,, - उदय नारायण सिंह / 50
- दहाए लगली दिल्ली राजधनिया -बिनोद सिंह गहरवार/ 63

संस्मरण

- धोखेबाज हँसी - मनोज कुमार वर्मा / 32
- पैनल इन्स्पेक्सन - इन्द्रकुमार दीक्षित / 35

हँसी-ठिठोली- निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 67

सतमेझरा – 1-3, 68,77-79

रचना में भाव प्रदर्शन

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

अपना पद्य, छन्द,भाषा, विषय आ भाव से जे पाठक भा श्रोता में आनन्द पैदा करि सके उहे रचनाकार ह अउर उहे रचना ह। कवि के काम संसार के अनुपम सुन्दरता के अनुभव कइल अउर ओके ललित भाषा में प्रस्तुत क के पाठकन के हृदय में आनन्द अतिरेक उत्पन्न कइल ह।कवनो छन्द के सहायता खाली सुने में नींक लागे खातिर कइल जाला। यदि छन्द गावल जा सके त छन्द के चुनाव ओकर विशेषता हो जाला। रचनाकार के रचित विषय, भाव से ही पाठक अपने हृदय में परमानन्द के अनुभव करेलें। रचना में भाव, लेखक के सबसे अधिक जरूरी अंग होला।भाव व्यक्त करे में कवि यदि समर्थ ना भइलें त छन्द, भाषा आ विषय ढेर देर ले रचना के सहायक ना रहि पावेला। छन्द भाषा व भाव प्रदर्शन के विशेषता एक जगह देखे के होखे त तुलसी बाबा के मानस बढ़िया उदाहरण बा। यदि साधारण गद्य के केहू छन्द के जामा पहिना के पद्य बना दे ऊ कवि ना ह। कवि ऊ होला जे ओ में रस भर देव।

उदाहरण-राजा जनक जी के दूत जब जनक जी के चिट्ठी लेके राजा दशरथजी किहाँ अयोध्या जी चहुँपलें त दशरथ जी अपना पुत्र लोग के विषय में तरह तरह के प्रश्न करे लगनीं। पुत्र लोग के विशेषता तुलसी बाबा दू लाइन में दूत की मुँह से अपनी शब्दन में क़हत बानीं-

देव देखि तव बालक दोऊ।
अब न आँखि तर आवत कोऊ॥

केहू साधारण रचनाकार होइत त लिख दित-"अब न नींक मोहि लागत कोऊ" लेकिन फेरू चमत्कार कहाँ रहि जाइत। कवि अपनी हर एक लाइन की साथे, हर एक शब्द की लगे स्वयं खड़ा रहेला। कहे के ई बा कि लोकोत्तर चारुता के साथे भावपूर्ण रचना दीर्घजीवी होला, सराहल भी जाले।

कुछ लोग सुमधुर कण्ठ ख़ातिर ना काठ की अलमारी खातिर भी लिखेला। अइसन साहित्य से समाज के कवनो लाभ ना होखे। ह ताखा पर देवकन के कुछ लाभ जरूर हो जाला। भोजपुरी भाषा में भी कुछ साहित्यकार अपने जीवन के अमूल्य समय, जवानी के सदुपयोगी समय आ अपना मन मस्तिष्क के सारा शक्ति कठिन भाव, दुरूह भाषा की रचना में, एह आशा से बिता रहल बा लोग कि जब समझे वाला अइहें तब समझिहें। त तनी समझ लिहल जाव ! अइसन रचना स्वयं रचनाकार के नुक़सान के कारण बनेले। रचना में भाव, भाषा आ लालित्य के उपस्थित रहल बहुत ज़रूरी बा।

आज के भौतिकवादी युग में केहुवे के लगे समय नइखे कि ऊ शब्दकोष खोलि के रचना पढ़े बइठो। अपना रचना जीवन के सफल बनावे खातिर रचनाकार के आपन आवाज विशाल जन मानस तक चहुँपावे के परी। आ ई तबे सम्भव हो सकेला जब रचनाकार समाज के हृदय से आपन हृदय मिला के बोली।

बड़ा भाग्य से आदमी कुछ रच पावेला। रचनाकार, कवि मानव समाज के रतन होला। ऊ समाज के आदर्श होला। ओकर रचना आ जीवन मानव समाज की खातिर उपयोगी तथा निरन्तर मार्गदर्शक होला।

निहोरा बा कि खूब भावपूर्ण लिखल जाव आ एतना रचाव कि लोकसाहित्य के सरोवर गहागह भरि के उफिना जाव आ जनमानस तक पहुँचवला के का काम 'सिरिजन' करते बा।

◆◆◆

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

अंजन जी कऽ एगो गीत

जबसे तोहार अँखिया

जबसे तोहार अँखिया,
मन मे समा गइल बा
निकली त कइसे निकली
रास्ता रुन्हा गइल बा

कुछ काम ना सोहाता
हमरा ना कुछ बुझाता
सबलोग भोग जग के
अइसन भुला गइल बा
जबसे तोहार....

जे जे निहारे हम के
उहे बढ़ावे गम के
बाया जे जवन लागल
ई तन झवा गइल बा
जबसे तोहार.......

तुहि बताव बतिया
ऐ मीत ऐ संघतिया
सनकी नियर बा पपनी
अंजन रचा गइल बा
जबसे तोहार.......

जबसे तोहार अँखिया,
मन मे समा गइल बा
निकली त कइसे निकली
रास्ता रुन्हा गइल बा

◆ ◆ ◆

भोजपरी गीत सम्राट
पं० राधा मोहन चौबे
'अंजन जी'

लोकतंत्र तबे फलेला-फुलेला आ हरियर कचनार, पोढ़-बरियार लउकेला जब ओकर रहनिहार मतदान में बढ़-चढ़ के हिस्सा लेलन। आपन देश जइसन विशाल लोकतंत्र में देस चलावे खातिर फैसला लेवे में कुल्हि नागरिक के हर समय प्रत्यक्ष रूप से भाग लिहल सम्भव नइखे। त एकर एके उपाय निकालल गइल, मतदान। मतदान से जन प्रतिनिधि के चुनाव होला आ ऊ लोग देश चलावे खातिर नीतिगत फैसला लेला। जनता के पास एक मोका होला मतदान के, जब ऊ आपन पसन्द के प्रतिनिधि चुन सकेला, एकरा खातिर राजनीतिक दल में खूबे चढ़ा ऊपरी होला। राजनीतिक प्रतिस्पर्धा पार्टियन के सत्ता में काबिज रहे, नागरिकन के हित के रक्षा अउरी सेवा करे खातिर मजबूर करेला। जवन प्रतिनिधि भा राजनीतिक दल जनता के कसौटी पर खरा ना उतरे ओ' के बदले के उपायो मतदाने बा। लेकिन हाल ही में सम्पन्न भइल 2024 लोकसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत 65.79% रहल, ई मतदान 2019 के मुकाबले 1.61% कम बा; असम में सबसे ज्यादा 81.56%, बिहार में सबसे कम 56.19% मतदान रहल। ए तरे के चुनावी उदासीनता के परिणाम गंभीर हो सकता। जब आदमी चुनावी प्रक्रिया में भागे ना लीही, त ऊ आपन सरकार चलावे के तरीका में आपन बात, आपन मत राखे के मौलिक अधिकार के त्याग कर दीही । एकरा से अइसन सरकार बन सकतीया जवन आपन नागरिकन के हित के अनदेखी कर सकतीया। ओकर नीतिगत निर्णय में बहुमत के विचार अउरी राय प्रतिबिंबित ना होखी। एकर दूरगामी परिणाम भयावह हो सकता, लोग राजनीतिक प्रक्रिया से अउरो अधिका निराश हो जइहन, बाद के चुनाव में मतदान अउरो कम हो सकता। लोकसभा 2024 चुनाव में कवनो एक दल के बहुमत ना मिलल, गढबन्धन के सरकार आपन काम शुरू क देले बिया, दस साल बाद आपन संसद में एह बेर बिपक्ष बा नेता प्रतिपक्ष के पद भरल बा। देश के हर नागरिक के लोकतंत्र में आपन मतदाता धर्म के निभावे खातिर दृढ प्रतिज्ञ होखे के परी तबे सही मायने में लोकतंत्र मजबूत होई।

खेल जगत क्रिकेट में भी आपन देश के विश्व कप जीतला पर पूरा देश एकजुट दिखल जशन में सबकर सहभागिता रहल चाहे ऊ कवनो धर्म, जात, पंथ, वर्ग के होखस। भारतीय क्रिकेट टीम पहिलका टी20 वर्ल्ड कप-2007 में महेंद्र सिह धोनी के कप्तानी में जीतल रहे। एकरा बाद भारत के 17 साल के इंतजार करे के परल, लाख कोशिश के बावजूद विश्व कप के एकदम नियरा जाइयो के कामयाबी दूरे रहे। 2024 में टीम इंडिया दोबारा चैंपियन बनल। देखल जाए तो 2007 के तुलना में 2024 के विश्व कप जीतल काफी स्पेशल बा कई मायने में। 2007 में टी-20 प्रारूप अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में बिल्कुल नावा रहे आ पहिला बेर एह प्रारूप में विश्व कप खेलल गइल रहे। खिलाड़ी लोग पर मानसिक दबाव कम रहे। 2024 तक टी-20 विश्व कप में टीम के बीच के प्रतिद्वंद्विता के एह बात से समझल जा सकता कि पाकिस्तान, न्यूजीलैंड, श्रीलंका जइसन बड़की टीम सुपर-8 में भी ना पहुँच पवलस। केतना जबरदस्त मुकाबला रहे काँटे के टक्कर। उहे दूसरी ओर पहिला बेर टी-20 विश्व कप खेल रहल अमेरिका के टीम पाकिस्तान के पुरान धुरन्धर टीम के मात देके इतिहास रच दिहलस। खेल में कुछऊ असम्भव ना होला, ई बात फिर सही साबित भइल। कप्तानी के स्तरो प ई जीत बहुत विशेष बा काहें कि 2007 के जीते वाली टीम के कप्तान धोनी जहाँ 26 साल के उमिर में भारत के विश्व कप खिताब दिवावे वाला सबसे युवा कप्तान रहलन ओहिजे 2024 के जीते वाली टीम के कप्तान रोहित शर्मा 37 साल के उमिर में कप जीते वाला सबसे उम्रदराज कप्तान बन गइलन। रोहित शर्मा के अंतिम विश्व कप रहल ह, फाइनल में जीत के बाद रोहित शर्मा, विराट कोहली अउरी रवींद्र जडेजा जइसन दिग्गज अनुभवी खिलाड़ी के संन्यास भारत के जीत के अउरी यादगार बना दिहलस।

बीतल तिमाही में गरमी के भीषण ताण्डव से देश के अधिकांश भाग त्रस्त रहल बा, आसमान से बरसत आग के चलते तापमान 50 डिग्री तक चहुँप गइल, जवन लोगन खातिर जानलेवा साबित भइल। रोग ब्याधि जोर पकड़लस लोगन के असमय जान से हाँथ धोवे के परल। गरमी के चलते न त दिन में राहत मिलत रहे ना राते सुकून से बीतत रहे। रातो में लू चलला के कारण जीयल मुश्किल रहे। कंक्रीट के जंगल में ठंढक ढूँढल बेमानी बा। पानी खातिर तरसत

धरती पर जब बारिश के फुहार पड़ल त लागल अब दुख दूर हो जाई लेकिन काहे के दुख दूर होखे। एतना न पानी परल कि का काहे के चारु ओर पानिए पानी। आपन राजधानी के त बुरा हाल हो गइल। दुनिया के शीर्ष दस में शामिल आईजीआई एयरपोर्ट टर्मिनल-1 के छत बारिश से गिर गइल, लोग के असमय जान गइल। पानी भरला के चलते अंडर पास के बंद करे के परल, सड़क पर मीलों जाम लागल, मेट्रो के सेवा बाधित भइल। आम त परेसान रहबे कइल, खास लोगन के घरो में पानी घुस गइल। नवका संसद भवन के सामनहूँ जल जमाव चिन्ता के बिषय बनल। मानसून के पहिलका बारिस राजधानी दिल्ली के आपात स्थिति से निपटे के कुल्हि तैयारी के पोल खोलके रख दिहलस।

1 जुलाई 2024 के तारीख से आपन देश मे भारत में नवका आपराधिक कानून लागू हो गइल। अंग्रेजन के जमाना से चलल आ रहल भारतीय दंड संहिता, दंड प्रक्रिया संहिता अउरी साक्ष्य अधिनियम अब इतिहास हो गइल। एकरा जगह लागू भइल भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता अउरी भारतीय साक्ष्य अधिनियम। नवका कानून पूर्ण रूप से स्वदेशी बा, काहे कि ई कानून के बनावे वाला भारतीय, लागू होखी भारतीय पर अउरी खास बात ई कि एह के बनावे के श्रेय जाता भारतीय संसद के। नवका कानून से जुड़ल विधेयक भी बीतल साल संसद के दूनो सदन, लोकसभा अउरी राज्यसभा से पास हो चुकल बा।

नवका कानून लागू होखला के चलते 'जीरो एफ आई आर' से अब कवनों भी आदमी कवनो पुलिस थाना में प्राथमिकी दर्ज करा सकता, भलहीं अपराध ओकर अधिकार क्षेत्र में ना होखल होखे। आपराधिक मामलन में फैसला मुकदमा पूरा होखे से 45 दिन के भीतर आई अउरी पहिलकी सुनवाई के 60 दिन के भीतर आरोप तय कइल जाइ। अइसन बहुत सारा बदलाव आवे वाला समय में देखे के मिली। चुनौती त बटले बा, एकरा के अच्छा से लागू करे के दारोमदार तंत्र के ऊपर ही बा। आवे वाला समये बताई कि एकरा में सरकार, न्याय पालिका केतना सफल भइल।

परब तेव्हार से धनी आपन लोक समाज में एह तिमाही के कुछ खास परबन के आगाज होई। हर साल आषाढ़ महीना के शुक्ल पक्ष के पूर्णिमा तिथि के हर्षोल्लास के साथ आध्यात्मिक अउरी शैक्षणिक गुरु जन के सम्मान में गुरु पूर्णिमा पर्व के मनावल जाला। गुरु से ही ज्ञान मिलेला अउरी जीवन पथ प्रकाशमान होला। गुरु ही जीवन के ऊँच-नीच के समझावेलन। त उनकर खास सम्मान होखहीं के चाही। महाभारत के रचयिता वेदव्यास जी के जन्मदिनो एहि दिन परेला त उनकर याद में भी ई पर्व मनावल जाला। एह दिन स्नान-दान गुरु के आशीर्वाद प्राप्त करे के परिपाटी चलल आ रहल बा आपन सनातन समाज में।

सावन महीना के शुक्ल पक्ष के तृतीया तिथि के हरियाली तीज भा छोटकी तीज या सावन तीज नाम के पर्व मनावल जाला, जेमा सुखी वैवाहिक जीवन अउरी पति के लमहर निरोग जीवन खातिर भगवान शिव अउरी माता पार्वती के पूजा अर्चना कइल जाला, साथ ही प्रिय चीजन के भोग भी लगावल जाला।

सावन महीना के पूर्णिमा के दिन एगो खास पर्व दस्तक देला जेके रक्षाबंधन के नाव से पहिचान बा आपन लोक समाज मे। रक्षा बंधन अपना देश मे मनावे जाए वाला अनमोल अउरी प्यार भरल त्योहारन में से एक बा। ई भाई-बहिन के बीच के बंधन के प्रदर्शित करेला। रक्षाबंधन आनंद अउरी प्रेम के पर्व ह। हर गुजरत साल के साथ उनकरा बीच प्यार स्नेह बढ़ावे में बढ़ चढ़ के आपन भूमिका निभावेला ई तेव्हार।

15 अगस्त यानी की स्वतंत्रता दिवस के हर भारतीय के दिल मे एगो अलगे जगह बनावेला। विशेष महत्व एहि खातिर ना कि गोरन के चंगुल से देश आजाद भइल बलुक एहि से कुछ दिन के बाद पहली बेर हमनीके मौलिक अधिकार मिलल, जइसे कि शिक्षा के अधिकार, न्याय के अधिकार, बोले के आजादी, मन माफिक धर्म माने के आजादी आदि। ई महज एगो राष्ट्रीय पर्व ही ना ह, बल्कि ओह वीर सपूतन के श्रद्धांजलि भी ह, जे देश के आजाद करवावे में आपन तन, मन धन सबकुछ त्याग दिहलस। चाहे ऊ रानी लक्ष्मी बाई होंखस, शहीद भगत सिह या फिर मंगल पाण्डे चन्द्रशेखर आजाद राजगुरू खुदी राम बोस अनठेकान नाँव बा। सभकर एके सपना रहे "आजाद भारत"। आज हमनीके ओहन लोगन के सपना के दुनिया के हकीकत के नजर से देख रहल बानी जा। साफ कहि त ओहन लोगन के सपना के दुनिया में जी रहल बानी जा। आजादी के संघर्ष के देखी के एहसास होता कि आजादी जाने-अनजाने डहर में गिरल कवनो सिक्का ना ह जवन किस्मत से मिलेला, बल्कि ई ऊ हक है, जे के पावे खातिर आपन सबकुछ भी दाँव पर लगावे के पड़े, तबो पाछे ना हटे के चाही। देश आजाद रहो स्वतन्त्र रहो एकरा खातिर अपना स्वारथ खातिर देश के तोरे वाला वाला जयचन्दन से सावधान रहला के जरूरत बा, पुरजोर विरोध के जरूरत बा। निज हित से राष्ट्र हित ऊपर राखे के कोशिश हर भारतीय के नैतिक जिम्मेदारी बनता।

ईंटा, गारा, पाथर से बनल मकान के माई ही घर बनावेले ओही तरह शब्दन से भरल पन्ना के पत्रिका के आसन पर काबिज करे के अधिकार त देवतुल्य पाठके लोग के हाथ में बा। हमनीके त बस बिनती करे के अधिकारी बानी जा।

राऊर आपन,

तारकेश्वर राय

उप सम्पादक, सिरिजन

स्व. पं. धरीक्षण मिश्र जी के कविता

साँप के सुभाव

मणिधर साँप सिर्फ कान से सुनल जात
सामने जे आइल से सब विषधर बा ।
दूध केहु पियावे त विष और तेज होला
माथा में भरल सदा ऐसने जहर बा ।
कौवा का समान जौन खालें पचा जालें सजी
एही से नाव एक परल काकोदर बा ।
एक दोसरा के धइके आपुसे में लीले का
घाते में घूमत साँप आठहू पहर बा ॥4॥

ले के समाधि पवन पी के देहि साधि लेत
योगी अस बीतत महीना दुइ चार बा ।
भोगी नाम इनके प्रसिद्ध पहिले से हवे
भोग एक मात्र भैल जीवन अधार बा ।
छोट-छोट साँप घूमे तेज गति से परन्तु
बड़का का देंहिये के बोझा भैल भार बा ।
बच्चा बिया के खा के सीमित परिवार राखें
लूप या नसबन्दी के ना अबे प्रचार बा ॥5॥

दुइ गो जीभि वाला ई जातिए प्रसिद्ध हवे
चैन से रहे ना जीभि जानत जहान बा ।
दूनूँ ओर मुँह वाला दुमुँहों मिलेले कहीं
पोथी में पाँचो मुँह वाला के बखान बा ।
एकनी का राजा का हजार मुँह होला तब
कौन कहीं एकनी का मुँह के ठेकान बा ।
छोटका से बड़का ले सबके बा ईहे हालि
एकनी से फइले रहला में कल्यान बा ॥6॥

◆◆◆

भोजपुरी के आचार्य कवि
पं. धरीक्षण मिश्र

डमरुआ के विआह

कांगरेस के वादा खटाखट हो सकेला। बिहार में पुल फटाफट गिर सकेला। दू मिनट में मैगी सटासट बनि सकेला। बाकी बड़ लोग के विआह जल्दी नइखे हो सकत। अब अनन्त अम्बानी के विआह देख लीं। एतना दिन में बीजेपी के सरकार बन गइल बाकी डमरुआ के विआह अबे ना निपटल। अरे ई विआह होता कि गुजरात के इलेक्शन?

सभे सेलिब्रिटी के नेवता दियाता आ जियो रिचार्ज के दाम बढ़ा के चन्दा हमनीं से लियाता। हमनिए के भरोसे पूँजीपति लोग सन्तान पैदा करेला का?

एक दिन संगीत, एक दिन हरदी, एक दिन विदेशी संगीत, एक दिन फोटो खिचाई, एक दिन भजन, वगैरह वगैरह........ए जी, आषाढ के विआह हेतना लम्बा रोपाला? किचाइन मचा दिहले बाड़न सन।

बचपन से एह बेरा ले ढेर ढेर विआह देखे के मिलल बा। महंग से महंग शादी में जाए के बदा भइल। बाकी कबो शादी कार्ड हिलाके देखावत फोटो सोशल मीडिया पर ना डलनीं !

डमरूआ के खूबसूरत शादी कार्ड पा के कुछ लोग अइसन झमकावत बा जइसे शादी के कार्ड ना होके पासपोर्ट होखे। आ ई लोग विआह में ना, विदेश जाए के वीजा पवले बा।

आदमी के यदि बड़का दरबार से नेवता मिलियो जाव त गम्हिर रहे के चाहीं। हमरे के देखि लीं डमरूआ के माई हमके परसनल फोन क के कहली कि- पंडी जी, रउआ आवे के बा। एह बेरी कवनो बहाना ना चली। जले रउआ पाँच गो घनाक्षरी ना सुनाएब तले वर कनियाँ सात फेरा ना घुमी लोग। हई प्लेन के टिकट रउआ वॉटसेप पर भेज रहल बानीं। हम केहू से अबे नइखीं बतवले।

रउआ से बतावत बानीं। बड़का के विआह में ढेर फजीहत होला। हम भोगले बानीं धोनिया के विआह में जा के। लोग विश्वास ना करी।

जले वापसी के दिन ना नियरा जाव तले शादी के कार्ड सम्हार के राखे के परेला। जइसे कि आधारकार्ड भा ड्राइविग लाइसेंस होखे।

विआह स्थल पर घुसत में रउआ हाथ जोड़बि आ निकलत में ऊ लोग हाथ जोड़ि ली। खइले होखीं चाहें नउजी !

अपना विआह में फूफा के कोहनाइल आज ले इयाद बा, दू गिलास कोलाकोला पी के मानल रहनीं उहाँ के। ए कुल विआह में फूफा उफर परे केहू के कवनो मतलब ना होला।

अइसन वरयात्रा कइला से ठीक बा कि राहुल गाँधी के संगे

एक सूटा लगा के आदमी नीलकण्ठ त खुदे अपना के बुझे लागी।

सबसे जियादा आज कल के विआह में मोबाइल से फोटो खींचे आ वीडियो बनावे वाला बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना टाइप के लोग दुकहाँ से पैदा हो गइल बा।

एके साथे ई दर्जन भर से अधिका लोग स्टेज पर दुल्हिन दूल्हा के अइसे बार बार घेर लेला जइसे केजरीवाल के बार बार इडी, सीबीआइ घेरत बिया। ई त साधारण बात भइल। डमरुआ त जियो के मालिके ह। गुजरात वाली सढ़आइन बतावत रहली ह कि वर कनियाँ के जोड़ी मस्त बा। जब दुनू जने स्टेज पर डांस करेलें त अइसन लागेला कि अजगर से लिपट के नागिन नाचत बिया। फिलहाल हम जा ना पाइबि विआह में, एही से इहवें से डमरुआ के विआह के सुभकामना। आसिर्वाद।

◆ ◆ ◆

डॉ. अनिल चौबे

सम्पादक, सिरिजन

भोजपुरी भाषा-साहित्य के विकास यात्रा

' भोजपुरी ' भारतीय आर्य भाषा परिवार के जीवन्त बेवहारिक भाषा ह। जवन भारतवर्ष के अलावे नेपाल, मारिशस, फिजी, सुरीनाम, गुयाना, ट्रिनिडाड आ टोबैगो, जमाइका आदि दुनिया का कई देसन में बोले, लिखे आ पढ़े जाए वाली भाषा ह। आज ई दुनिया के पावर लैंग्वेज इंडेक्स, विकिपीडिया आदि के भाषा - सूची में आपन महत्वपूर्ण जगह बना चुकल बा। एकरा गीत - गवाई के संयुक्त राष्ट्रसंघ के युनेस्को से मान्यता प्राप्त हो चुकल बा। कैथी, महाजनी, देवनागरी आ रोमन लिपि में लिखाए - पढ़ाए वाली एह भाषा के लोक साहित्य, लिखित प्राचीन आ आधुनिक साहित्य, व्याकरण, शब्दकोश आ भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के दिसाईं उनइसवीं सदी से लेके आज के एकइसवीं सदी तक अनगिनत यूरोपीय आ भारतीय विद्वान लोग द्वारा बहुते महत्वपूर्ण अध्ययन - अनुसंधान, लेखन, संकलन, संपादन आ प्रकाशन के काम भइल बा। सत्तर का दशक से भारत का कई विश्वविद्यालयन, महाविद्यालयन आ विद्यालयन में एकर पढ़ाई - लिखाई हो रहल बा। एने नेपाल आ मारिशस आदि देसन में भी लइकन के भोजपुरी भाषा-साहित्य पढ़े - पढ़ावे के सिलसिला प्रारंभ भइल बा। दुनिया के भाषा वैज्ञानिक लोग वर्तमान सदी में दुनिया के कई एक भाषा के मरे के भविष्यवाणी कर रहल बा उहँवे भारत के भाषाविद गणेश प्रसाद देवी अपना हाल के भाषा - सर्वेक्षण के आधार पर बतवले बाड़न कि आज भोजपुरिए दुनिया के एगो अइसन भाषा बा जवन बिना राजाश्रय के अपना भाषा प्रेमी साहित्यकार, कलाकार आदि के रचनात्मक काम - काज के बदौलत बहुत तेजी से बढ़ रहल बा।

भोजपुरी भाषा के क्षेत्र - विस्तार आ जनसंख्या

दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह अपना ग्रंथ ' भोजपुरी के कवि और काव्य ' के दूसरका संस्करण के पृष्ठ संख्या - 2 पर भूमिका में डा ग्रियर्सन का ऐतिहासिक ग्रंथ ' भारत के भाषा सर्वेक्षण ' (लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया) के भाग - 5 के हवाले से बतवले बाड़न कि भोजपुरी भारतवर्ष के लगभग पचास हजार वर्गमीटर भू-भाग में बसे वाली जनता के बेवहारिक भाषा ह। सन् 1901 में भइल भारतीय जनगणना के अनुसार जब भारत के जनसंख्या उनतीस करोड़ चउरानबे लाख छत्तीस हजार रहे तब भोजपुरी भाषी के संख्या दू करोड़ रहे। दुर्गा बाबू के अनुसार जब सन् 1941 ई. में भारत के जनसंख्या अड़तीस करोड़ अस्सी लाख रहे तब भोजपुरी भाषी के जनसंख्या दू करोड़ चउंसठ लाख मतलब भारत के कुल जनसंख्या के के 14.5 प्रतिशत हो गइल रहे। आज भारत में ही एकर जनसंख्या लगभग अठारह करोड़ के आसपास बा आ नेपाल, मारिशस आदि आउर देसन के संख्या जोड़ दिहल जाए त बीस करोड़ के आसपास पहुंच जाई।

भोजपुरी भाषा के प्राचीनता

भारतवर्ष के प्राचीन भाषा सबसे भोजपुरी के तुलनात्मक अध्ययन - अनुसंधान से विद्वान लोग का एकरा प्राचीनता से जुड़ल अनेक तथ्यात्मक जानकारी उपलब्ध भइल बा।

ई भाषा वैदिक काल में गण भाषा भा जन भाषा, उत्तर वैदिक काल में भोजी, बुद्ध के समय पूर्वी बोली - भाषा कोसली, पाणिनि - पतंजलि के काल में पूर्वी भाषा कोसली आ कारुषी, एगारहवीं - बारहवीं सदी तक पूर्वी भाषा कोसली आ ओकरा बाद ऐतिहासिक राजवंशी भोज आ उनका नाम पर बसावल भोजपुर नगर के बोली 'भोजपुरी' के नाम से जानल जाए लागल।

वैदिक भाषा का ध्वनियन के रागात्मक तत्व, सुराघात मतलब ध्वनि - राग, बलाघात, लयात्मकता आदि भोजपुरी में आजुओ मिलेला। ऋग्वेद में ' जानऽता सङ्ग में महि ' , सायं करत, करदारे, उपनिषद में ' सत्यं वदऽ , धर्मं चरऽ, गीता में अजानऽता महिमानं आदि आजुओ भोजपुरी में ओही बलाघात, स्वरांत आ स्वराघात के रूप में जानऽता (हिन्दी में - जानता है), संझा करत, कर तारे, सत बदऽ, धरम आचरऽ, आदि प्रयुक्त होला। वैदिक संस्कृत आ लौकिक संस्कृत का शब्दन के त भोजपुरी में भरमार बा। जवन खड़ी बोली हिन्दी में पावलो ना जाए।

अइसहीं ऋग्वेद के य, ष आदि ध्वनि जइसे यजुर्वेद में ज आ ख हो जाला उहे स्थिति भोजपुरियो में पावल जाला। कोसली, पालि, अवधी के प्रधान ध्वनि - प्रकृति

' न, र, स ' भोजपुरियो में बा जवन मागधी में ना पावल जाए। बहुते विद्वान भोजपुरी के मागधी आ शौरसेनी से अलग मध्यदेशीय भाषा से व्युत्पन्न सिद्ध कइले बाड़न। अइसे डॉ ग्रियर्सन के बिचार से प्रभावित विद्वान लोग भोजपुरी के आधुनिक भारतीय आर्य भाषा के अन्तर्गत पच्छिमी मागधी के

बिहारी वर्ग के भाषा मानके मैथिली आ मगही के सङ्गे राखेला। बाकिर एकर ध्वनि आ भाव प्रकृति कोसली आ अवधी से एकर निकटता सिद्ध करेले।

भोजपुरी प्राचीन आ आधुनिक साहित्य

-

भोजपुरी में लोक साहित्य के अकूत भंडार बा। जवना के लेके यूरोपीय विद्वान बीम्स, हार्नले, ग्रियर्सन आदि से लेके भारतीय विद्वान संकटा प्रसाद, राम नरेश त्रिपाठी, कृष्ण देव उपाध्याय, गणेश चौबे आदि के अनगिनत अध्ययन - अनुसंधान, लेखन, संकलन, संपादन आ प्रकाशन के काम बा।

जहाँ तक लिखित प्राचीन साहित्य के बात बा त शोधी विद्वान लोग के अनुसार सातवीं सदी के भोजपुरी कवि इसानचंद, बेनी भारत, आठवीं - नवीं सदी के सिद्ध आचार्य सरहप्पा, सबरप्पा, भुसुकप्पा, चौरंगिप्पा/ चौरंगीनाथ आदि, दसवीं - एगारहवीं सदी के गोरखनाथ, भरथरी, गोपीचंद, बारहवीं सदी के व्याकरण ग्रंथ ' उक्ति व्यक्ति प्रकरण ' के रचइया पं. दामोदर शर्मा, अमीर खुसरो, ओकरा बाद के संतकवि स्वामी रामानंद, कबीर, रविदास, धर्मदास, दरिया साहेब आदि उनइसवीं-बीसवीं सदी के साहित्यकार रविदत्त शुक्ल, राम गरीब चौबे , भारतेन्दु हरिश्चंद आदि के बाद भोजपुरी के पद्यात्मक आ पद्यात्मक साहित्य के रचे वाला साहित्यकार लोग के साहित्य के लेके दुर्गा शंकर प्रसाद सिह के ऐतिहासिक ग्रंथ ' भोजपुरी के कवि और काव्य ' कृष्ण देव उपाध्याय के ' भोजपुरी साहित्य का इतिहास ' आदि जइसन दर्जनो ग्रंथ लिखा - छपा चुकल बा।

भोजपुरी के व्याकरण, शब्दकोश आ साहित्य के इतिहास

जहाँ तक भोजपुरी भाषा के व्याकरण आ शब्दकोश सम्बन्धी रचनात्मक काम के बात बा त सन् 1868 ई. में जे आर रीड अपना शोध आलेख ' नोट्स आन दि डायलेक्ट करेन्ट इन आजमगढ़ ' में भोजपुरी भाषा के व्याकरण पर जम के काम कइले बाड़न। सन् 1880 ई. में डा ए एफ रूडोल्फ हार्नले अपना प्रमुख व्याकरण ग्रंथ में पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत भोजपुरी व्याकरण पर महत्वपूर्ण काम कइले बाड़न। भोजपुरी व्याकरण के दिसाईं डॉ ग्रियर्सन के काम भी बहुते महत्व के बा। एकरा बाद एजा एम चाइल्ड के ' ए शार्ट ग्रामर आफ भोजपुरी (1904), शिवदास ओझा के ' भोजपुरी के ठेठ भासा बेयाकरन (1915) से लेके अब तक लगभग दू दर्जन से अधिक भोजपुरी के मानक व्याकरण छप चुकल बा।

अइसहीं भोजपुरी शब्दकोशन के जहाँ तक सवाल बा त हार्नले आ ग्रियर्सन के सन् 1885 में छपल शब्दकोश ' ए कम्पेरेटिव डिक्शनरी आफ बिहारी लैंग्वेजे ' सन् 1925 ई. में छपल डॉ ग्रियर्सन के ' बिहार पिजेंट लाइफ ' सन् 1940 ई. में छपल एल सेंट जोसेफ के ' भोजपुरी शब्दकोश ' सन् 1959 ई. आ सन् 1966 ई. में छपल वैद्यनाथ प्रसाद आ श्रुतिदेव शास्त्री के क्रमवार छपल ' कृषिकोश ' , सन् 1966 ई. में छपल प्रो. बृजबिहारी प्रसाद के भोजपुरी शब्दकोश ' से लेके अबहीं तक लगभग दू दर्जन से ऊपर भोजपुरी के शब्दकोश छप चुकल बा।

भोजपुरी साहित्य के इतिहास लिखे के परम्परा दुर्गा शंकर प्रसाद सिह के ' भोजपुरी के कवि और काव्य ', डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय के ' भोजपुरी साहित्य का इतिहास आदि से प्रारंभ होके आज तक जारी बा। जवना के परिणाम ई भइल बा कि अबहीं तक डेढ़ दर्जन के आसपास भोजपुरी साहित्य के इतिहास सम्बन्धी पुस्तक प्रकाशित हो चुकल बा। अइसहीं भोजपुरी भाषा के विकास परम्परा आ भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के लेके दर्जनो किताब छप चुकल बा। जवना के अध्ययन से भोजपुरी भाषा - साहित्य का विकास यात्रा के सम्यक् ग्यान - बोध सुलभ हो सकेला।

◆ ◆ ◆

प्रो. जयकान्त सिह ' जय'

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ नामी आदमिन के साजिशन बदनाम कइलन स

ऊ नामी आदमिन के साजिशन बदनाम कइलन स
एही तिकड़म से सारे खूब नू चर्चा में अइलन स

केहू पूछल ना ओकनी के त एगो काम कइलन स
खुदे संस्था बनवलन स आ खुदही मेठ भइलन स

दिया हम नेह के लेके सफर में बढ़ रहल बानी
ऊ नफरत के भयंकर आग में जर-जर बुतइलन स

बेचारा का करऽ सन, बम में दम त बा ना सिरिजन के
केहू के खींच के टङरी ऊ आपन कद बढ़इलन स

बना देलन स सच के झूठ ऊ अपना थेथरपन से
मगर सच सच रहेला ई ना लबरा बूझ पइलन स

जहाँ तक हो सके, दूरे रहीं कींचड़ आ लीचड़ से
परल एहनी के पाले जे, ई ओकर नाश कइलन स

कबो पनरोह से पूछीं जे जमकल पाँक के पिलुआ
दहइलन सन ना पानी से त बाँसो से कोंचइलन स

कहाँ पानी गटर के रोक पवलस गाछ के बढ़ती?
निगेटिव जीव कतने राह में अइलन स, गइलन स

जोगाड़ू फूल माला मंच बैनर जय हो जय हो से
बिना कुछ करनी धरनी के फलाने जी कहइलन स

भला असमान पर थुकला से ओकर का होई 'भावुक'
मगर बकलोल जिनगी भर बस ईहे काम कइलन स

◆ ◆ ◆

मनोज भावुक

जड़ से जुड़ाव

टा लोग के जिद्द कइले फुलेसर गाँव में बचल आपन घर - घरारी आ जमीन बेंचे शहर से अइलें। फुलेसर शहर में रोजगार करत रहलें। रोजगार बढ़िया चलल त पूरा परिवार उहवें राखे लगलें लेकिन गाँव से नाता ना तुरलें। परब- तिउहार पर पूरा परिवार के साथे गाँवें आ जासु। बेटा लोग के पालन-पोषन आ पढ़ाई लिखाई शहरे में भइल रहे आ उहवें बढ़िया नोकरियो लागि गइल रहे। ए से ओ लोग के कहनाम रहे कि गाँव के सबकुछ बेंचि के शहरे में फ्लैट ले लिहल जा। कुछ देर खातिर फुलेसरो का गाँव के टुच्चा राजनीति, अदगोई- बदगोई, एक दूसरा के टंगखिचउवल सोचि के ई सुझाव अच्छा लागल।

फुलेसर गोदान से तीन बजे दिन में भटनी उतरलें। गाँवें आवत-आवत साँझि हो गइल। उनुके आपन घर साल भर से बन्द परल रहे। ए से ओ राति के पड़ोसी किहाँ रहि गइलें।

रात में सुतलें त नींनि नदारद। बचपन से ले के ए बेरा ले के गाँव के केतने बात सनिमा जइसन मन के परदा पर चले लागल। सोचे लगलें कि भलहीं घर बनावल बाबूजी के ह लेकिन ए पर पलस्तर आ रंग- रोगन करावहीं खातिर त हम काँचे उमिर में परदेस चलि गइनीं। हमरा खाली पलस्तर आ रंग - रोगन करावे में जेतना मेहनत करे के परल बा ओकरा से जियादे मेहनत क के पिताजी ई घर खड़ा करवले होइहें। एक्के बचावे, सरिआवे, सइहारे आ चमकावे खातिर हम का का ना कइनीं? माथ पर मोटरी धोवनीं। फुटपाथ पर सूति के रात कटनीं। पुलिस के डंडा खइनीं, लोग के बदबोली सुननीं आ अपने सिरिजावल कइसे उजारि दीं। गाँव- जवार के लोग कही कि फुलेसर इहाँ से उजरि गइलें।

ईहे सोचत सोचत कब नींनि आइल पता ना चलल। बिहाने उठते दुआर पर गइलें। ओसारा के मोका में बइठल पंडूक के जोड़ी देखते गूटरगूँ करे लागल जइसे साल भर बाद अपना गोसेयाँ के गीत गा के अगुवानी करत होखे। ताखा के खोंता से मुँह निकारि के गौरइया चीं चीं करे लगली जइसे जानत होखे कि अब हमनीं के भोजन खातिर दूर ना जाए परी। अंगना में राखल बाल्टी के पानी में पूरा चोंच डुबा के पानी पियल जाई। कोल्हआड़, गोनसार, होरहा, गेहूँ - धान के बाली, बगइचा के आम सब आँखि के सोझा आवे लागल।

फुलेसर के आँखिन के कोर भींजि गइल आ निरनय क लिहलें। पाकिट से मोबाइल निकालि के बड़का बेटा के लगे फोन लगवलें आ कहलें - 'बाबू, गाँव के घर - घरारी आ खेत कवनो कीमत पर ना बिकाई। आ अब हम इहवें रहबि। शहर के फ्लैट में तहन लोग रहिहऽ। अपनी माई के समय निकाल के जरूर पहुँचा दिहऽ।'

फुलेसर कुदारी उठवलें आ दुआर पर जामल खर- पतवार साफ करे लगलें।

◆ ◆ ◆

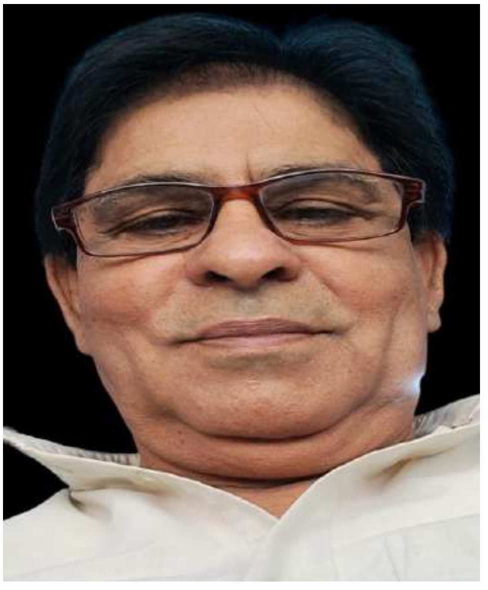

संगीत सुभाष,
प्रधान सम्पादक
"सिरिजन"

www.bhojpurisahityangan.com

मिले ना ठिकाना

पता पूछले से मिले ना ठिकाना,
कदम के हिलावे-डुलावे परेला।
मिले राह पटपुर न जाज़िम बिछावल
कुशा काँट कंकर निरावे परेला।

अगिनि बा त सहि लीं बिघिन बात सहि लीं
जलन बा त सहि लीं तपन बा त सहि लीं
जरत जेठ में छाँह चाहीं सफर में,
त छतनार दरखत लगावे परेला।

इनरदेव रुसिहें प्रलय जस बरिसिहें
भुखे पेट बालक बिरिध जन तरसिहें
निहोरा चले ना लगा जोर दम भर
किशन जस गोबरधन उठावे परेला।

कते रोध-सुरसा अचानक झपटिहें
लिहें थाह बल के डरइहें डपटिहें
कबो रूप दूना कबो बनि के मच्छर
पवनपूत जइसन थिरावे परेला।

फफाइल नदी ना पता बा किनारा
रयन अंधियारी मिले ना सहारा
भरल जोश में होश-पतवार से तब
नया नाइ चौकस चलावे परेला।

◆ ◆ ◆

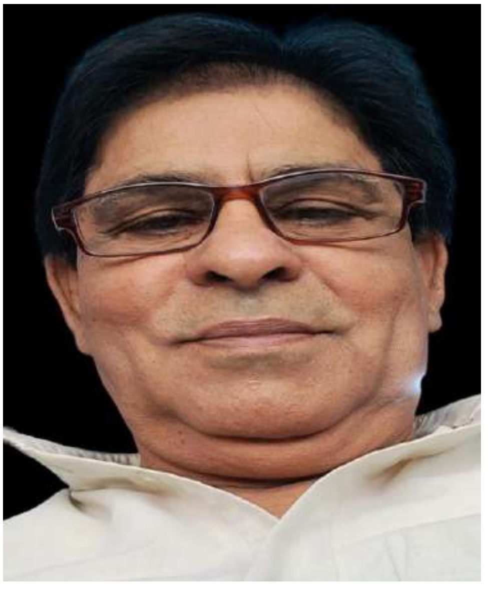

संगीत सुभाष,
प्रधान सम्पादक
"सिरिजन"

कनक किशोर के चार गो कविता

१. काश ! हम राह बन जइतीं

हम राह बन जाइल चाहींला
हम जानत बानीं
ओह राहि में
कवगो घुमावदार मोड़ आ रूकावट मिली
उबड़-खाबड़ त मिलबे करी
बाकिर आस के चमकत किरिनों,
श्रम के ताप आ संघर्ष के जज्बो भेंटाई

जे ओहि राहि प चलत लोगिन के
थाके ना दिही
आ संघर्ष के जीत होखेला
देर-सवेर
एकर भरोसा दिआई
हमार जिनिगी सफल हो जाई।

◆ ◆ ◆

२. दर्द के रेखा

जनि उकेरीं
हमरा जिनिगी में घुलल-मिलल दर्द के
हम त पैदे भइल रहीं
तरहथी प दर्द के रेखा लेले

ऊ दर्द के रेखा
जे हमरा हथेली में बंद बा
रउवा उघार के का करब?
का मिली रउवा भा समाज के?

हम मेहनत से आपन हथेली के रेखा के
धधकत धूप में
खेत में आ कारखाना के भट्ठी त
मिटावे के प्रयास कइनीं
बाकिर दर्द के रेखा
जस के तस
आजुवो बा

जिनिगी में पइसल दर्द
आजुओ दहकत, सुलगत, टभकत रहेला
आ हम ढोअत रहिना ओह दर्द के
सहज ढंग से
ओकरा से प्यार जे हो गइल बा
अब ऊ अपना जस लागेला।

◆ ◆ ◆

३. महाजनी सभ्यता

सब काम के पीछे
गरज महज पइसा

राजा के राज एह खातिर कि
अधिका नफा
महाजन पूंजीपतियन के नावें,
साँच कहीं त
देश दुनिया में
महाजने के राज बा
.

दु भाग में बँटल बा समाज
बड़का हिस्सा त
मरे-खपे वालन के
ढेर छोट हिस्सा
ओह लोगिन के बा
जे आपन शक्ति आ प्रभाव से
बड़का समुदाय प कब्जा कर लेले बा

बड़ भाग के लोगिन संग
कवनो तरह के हमदर्दी नइखे
ना तनिको रियायत
ओह महाजन वर्ग के,
बड़का हिस्सा के लोग के
अस्तित्व बा खाली
आपन मालिक खातिर पसीना बहावे
खून गिरावे के
आ एक दिन चुपचाप
एह दुनिया से चल जाये के
(प्रेमचंद के हंस में प्रकाशित आलेख ' महाजनी सभ्यता ' के एगो अंश पर आधारित कविता)

◆ ◆ ◆

४. सुख के चान

दुख के चादर ओढ़ले
मनई के आँगन
इंतजार रहे
सुख के एगो छोट टुकड़ा के
काहे राह भुला गइल
सुख के चान

अमावस्या त घरे बइठल रहे
इंतजार रहे
पूनिया के चान के
रोटी आ बेटी दूनों भार भइल
काहे राह भुला गइल
सुख के चान

चान पे जा के का करब
उहाँ ना खेत-बधार
मशीनीकरण हाथ काटि के
कइलस बेरोजगार
छोट पेट रोटी के तरसे
काहे राह भुला गइल
सुख के चान

नून, तेल, लकड़ी के फेरा
कटनीं जिनिगी आपन
सुबहित रोटी मिलल ना हमारा
ना केहू समझल आपन
हम मजूर रोजी ला तरसीं
काहे राह भुला गइल
सुख के चान।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची (झारखंड)

ओकर हिस्सा के दरद

देश के विकास के साथे गाँव में स्पष्ट बदलाव नजर आवत रहे। खपड़ा-नरिया के जगह कंक्रीट के छत। हर -जुआठ, गाइ-बैल गायब। ओकर जगह ट्रैक्टर आ हार्वेस्टर।कुँआ के जगह प बोरिंग आ चापानल। डोली के जगह बहुरिया कार में। गाँव के लइकिन के छोड़ीं पतोहियो सब स्कुटी पर भागत नजर आवत बाड़ी स आज। गाँव के गली के चौड़ाई नइखे बदलल बाकिर ओकर पक्कीकरण हो गइल बा। बिजली त का कहीं, सोलर लाइटो गली चउरास्ता पर नजर आवत बा। बाकिर गाँव के ओह विकास के तरे दुख दरदो ढेर छिपल बा ई बात कहलो पर के मानी?

मधेसर का' के दुआर पर बइठल दू-चार गो बुजुर्ग बतकही में उझराइल रहे। हमहूँ केहू हमउमरिया ना लउकल त उनुके दुआर पर चल गइनीं। बात चलल गाँव के विकास आ बदलल रूप के त मधेसर काका के ना रहाइल कहले महेश काल्ह अइला हा पटना से आ गाँव के विकास देख, माई-बाबू से भेंट कर काल्ह लौट जइबऽ। हमरा से ढेर पढ़ल-लिखल हवऽ। पत्रकारिता से जुड़ल बाड़ऽ, देश-दुनिया देखत-समझत बाड़ऽ। बाकिर अतने कहब कि हर चमकत चीज सोना ना होखे। भगभग उजर कफन के नीचे लाश रहेला। चेहरा के उपरो एगो चेहरा चढ़ल रहत बा। जवन चमकत विकास लउकत बा गाँव में ओकरा नीचे मरल गाँव पड़ल बा। पहिले ताल-तलैया, गाछ-बिरिछ से बधार भरल रहे, किसान-मजदूर एक दूसरा के पूरक रहे, दुआर पर गाइ-बैल से, आँगन में मेहररूअन से शोभा रहे। गोतिया-देआद सुखे-दुखे काम आवत रहे। ई सब खोजलो से अब ना मिली। शहर में चाकरी के चक्कर भाई-बेटा, नवही गाँव से गायब। गाँवे हमा-सुमा जस उहे बाँचल बा जेकरा कवनो दोसर जगह निबाह नइखे बबुओ। किसानी से किसान के पेट नइखे भरत। ओकर सब कमाई मशीनरी भाड़ा, सेठ घरे आ बैंक के करजा भरे में चल जात बा। बढ़िया दिन के सपना गाँव आ किसान खातिर ना ह ऊ दूनों के हिस्सा के दरद से उबार दूनों के मौत के साथे होला।गाँव आ किसान मौत के ओरि तेजी से बढ़ रहल बा। ओकर हिस्सा के दरद केहू दोसर ना बूझी।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची (झारखंड)

अखिलेश्वर के दोहा

०१.
कहवाँ बाटे जा रहल, देखीं आज समाज।
शिक्षित मनई ही करे, ढेर अनैतिक काज॥
०२.
उन्नति बा अनघा भइल, बेटा बसे विदेश।
बूढ़ मतारी बाप के, देला ढेर कलेश॥
०३.
अपना माटी से रखीं, सब दिन नेह लगाव।
सचहूँ ना खटकी कबो, घर के तिनक अभाव॥
०४.
भाई भउजाई बहिन, पत्नी आ संतान।
सही मिलल तऽ स्वर्ग बा, ना तऽ दुख के खान॥
०५.
कब्बो मत बाँटी सबन, बूढ़ मतारी बाप।
ना होला सँचहूँ इहाँ, ए से लमहर पाप॥
०६.
जे संतति खातिर कइल, तन मन धन सब त्याग।
उहे बुढ़ापा में चखे, बसिया रोटी साग॥
०७.
बूढ़ पुरनिया के करीं, आजीवन सम्मान।
उनके आसीर्बाद से, भरी बखारी धान॥
०८.
वृद्धाश्रम बा बढ़ रहल, चिंता के बा बात।
बतलाईं ए' रोग से, कइसे मिली निजात॥
०९.
सभे बुढ़ाला एक दिन, सबकर होला अंत।
राजा महराजा अउर, योगी संत महंत॥
१०.
बूढ़ पुरनिया के सँघे, रहे जवन परिवार।
कम साधन में खुश रहे, बहे मधुर रसधार॥
११.
बूढ़ पुरनिया से सदा, करत रहीं संबाद।
पइहें अपनापन बहुत, रही सभे आबाद॥
१२.
बूढ़ पुरनिया के लगे, बइठीं पूछीं हाल।
फर्ज निबाहीं प्रेम से, मत समझीं जंजाल॥

◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र
नरकटियागंज, पश्चिम चम्पारण

चले के बेरिया

धनेसर ढेर दिन पर अपना गांँवे आइल रहन। गोतिया-देयाद के प्रेम-भाव में पहिले लेखा लस ना रहे जवना से भीतरे-भीतर ऊ बहुत दुखी रहन। केहू लागे केहू के उठन-बइठन ना रहे आ ना नीमन से बोलचाल। आ एतना से का होखे ओला रहे कि केहू से चलते राह में भेंट भइल त कुशल छेम के पुछपुछाव भइल आ नाहीं त आग के दहकत बोरसी में अरमान बोझा गइल। अइसन राम-सलाम आपस में कायम रहल आ चाहे ना, सुखाइल मध के छाता बराबर रहे। रिश्ता के बरगद कवन काम के कि छाँह आ आत्म-संतोख ना दिहलस।

तबो धनेसर नजरी के पानी आ खून के दाहे अपना गोतिया के छोट भाई बनारसी के समझवलन कि ए बनारसी वर्तमान के जिदगी जीअल जाला आ प्रगति के दौर में अंधविश्वास के राहे डेग ना धइल जाला। धनेसर के ई इशारा बनारसी बो के बेमारी के लेके बनारसी से रहे।

धनेसर भाई जी गांँव पर आइल बानीं, ई जान के बनारसी बो के करेजा के तकलीफ ना अड़ाइल आ छोहे आके आपन आँखी के लोर पोंछत कहली "भइया जी, लागता अब हम ना जीअब, रिगना के बाबूजी के हमरा पर तनिको ध्यान नइखे, ,,,,,।" बेमारी से हिलल आ सुखाइल चेहरा के ई दुख भरल आवाज रहे। एक लेखा जिदगी के डोंगी बेमारी के धार में फँसल रहे आ धार से पारे के रहे। आ पारे के दायित्व त बनारसी के रहे।

"ना ना, अइसन जन सोचऽ दुनिया में हर रोग के दवा बा। तू दवा करावऽ ठीक हो जइबू। हमरा पूरा बिस्वास बा।" धनेसर उनुका के सांत्वना देत कहलन।

"लोग कहता कि दोसर काँट बा।" बनारसी बो के निरास भरल स्वर रहे। जइसे बेमारी से बेसी अंधविश्वास तूर दिहले होखे आ आँख के सोझा अन्हारे अन्हार गेंड़री मरले होखे।

"लोग गलत कहता।"

"त सही का बा ?"

"तोहरा बेमारी बा।"

"लोग माने के त इयार नइखे आ रिगना के बाबुओ जी कहताड़न कि बेमारी रहीत तब नू पइसा लगइतीं, हम।"

"ओकरा संघतो त छोटे बिचार आ अंधविश्वासन संगे बा। जहाँ जिदगी के गाड़ी के पहिया फलका में फँसल बिया ओकरा के ऊ खाई मान लिहले बा। पूरा देहाती होखे के प्रभाव बा ओकरा पर आ दोसरे कंजूस। परिवार का ह ई ओकरा समझे नइखे ।अस्पताल गइल रहू, तूँ ?"

"ना, ऊ कहत बाड़न कि जवन चीझ दुआ से ठीक हो जाए के बा त दवा का करावे के बा रे ?"

"तोहार हृदय का कहता ?"

"हमार अबला जात के हृदय का कही मरद जात के अंकुश के आगे।" रिगना के माई एतना कहत फफके लागल। ओकरा जइसे दिनों में रात के चकोह नियन लागल होखे। आ मरद जात खाली दुआ के चक्कर में परल होखे आ बेमारी लगला पर पइसा ना खरच करे के तइयार होखे त एकरा के का कहल जाई? ऊ कइसन दिन रहे कि जब रिगना के माई नया-नया आइल रहे त बनारसी संगे सहर जाके मुस्कात फोटो खिचवले रहे। तहिया त ऊ ई ना सोचले रहे कि जवन

सवांग आज एक जोरे फोटो खिचावता तवन बेमारी लगला पर हमरा के दुआ पर नीमन होखे के कामना करी आ पइसा के बक्सा में ताला मार के रखी। समझदार एकरे के न छोट आदमी के बिचार के टांड़ कहेला। ना उगे ना केहू के उगे देला। दरदहीन होला अइसन लोग। बक्सा के रोपेआ परिवार से बढ़के होला का? उहो अपना जीवन संगिनी से? अगिनी के सात फेरा में ईहो त दुख-सुख आवेला। बनारसी के चतुरई बनारसी के ले ना डूबल त फिर बात का?

समय के चक्का चलत रहल बाकि बनारसी ओही अंधविश्वास में अपना मेहरारू के घुलावत आ माटी लगावत रहलन। कमा के बिटोरे के सिवाय बेमारी में खरच करे के हाल ना जनलन आ रिगनो पर उनुके प्रभाव कायम रहे। रिगना के माई के दुआ मिलल आ ना दवा। ओकर आँख सदा खाती बंद हो गइल। संग के पंछी आकाश धर लिहलस। पंछी के उड़ान धरते बनारसी पसर के छाती पीटे आ रोवे लगलन। बक्सा के रोपेआ खोंढ़ ना भइल बाकिर घर खोंढ़ हो गइल। बक्सा के तरी के का दोष रहे एह में दोष त बनारसी के रहे। बनारसी के जीव से ना बनल कि जेकरा संगे सुख-मौज कइलीं ओकरा खातिर त्याग करीं। रिगना अलगे माई रे माई कहके गिरत उठत रहे। दुनिया में माई कहाँ रहे? ऊ त सुत गइल रहे। हरदम खाती। गाँव के समझदार लोग बनारसी के समुझावत कहल - "समय त बहुत मौका दिहलस बाकिर तूँ सजग कहाँ भइलऽ? अब भूल जा कि रिगना के माई हमार आपन केहू रहे।"

बनारसी झोंक से उठलन आ उनुका ई ना बुझाइल कि अब हम सुतल पंथी खाती कतना रोपेआ लोग के धरावत बानीं, ओकरा बिदाई के चादर किने ले आवे खातिर, ओकरा चले के बेरिया।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी

रामगढ़, झारखण्ड

हियरा के अखरा

हियरा के अखरा दियरा से
नेहिया के ननकी दियरी के जोरल जाई
पसरी जब टहकार अँजोरिया
अंजुरी अंजुरी दुनू हाथ सहोरल जाई।

खनखन खनखन बोली के संगीत बना के
झरझर झरझर लोर गिरे तऽ गीत बना के
फूल खिले जब फुलवारी में
भर के अपना अँकवारी में
तितली से जिनगी के राग बटोरल जाई।
पसरी जब ....

बदरा त घुरियाईल बाटे आवत नइखे
काहे दो कोहनाइल बा, बतलावत नइखे
कहिया दू गो बून गिराई
कब ले हमनी के तरसाई
कहिया ले झंउसाइल खेत अगोरल जाई।
पसरी जब टहकार....

पुरखा के जन्मावल गछिया टूट गइल बा
डाढ़ी से पतई के नाता छूट गइल बा
धरती त मसुआइल बाड़ी
गतरे गतर घवाइल बाड़ी
इनका के सरधा के रस में घोरल जाई
पसरी जब टहकार.....

◆ ◆ ◆

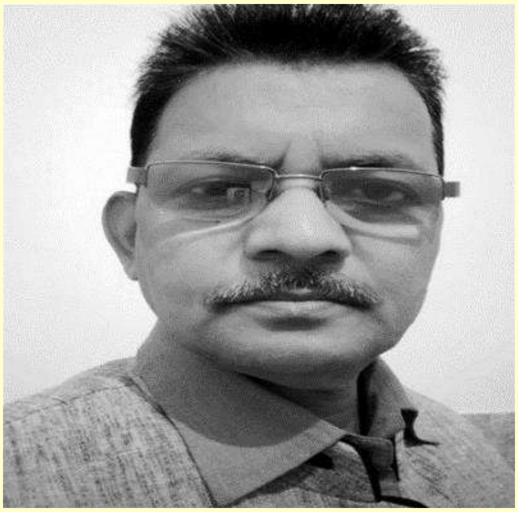

सुरेश गुप्त
बेतिया

भोजपुरिया समाज में गारी गवला के परम्परा

भोजपुरिया समाज में लोक परम्परा के जड़ बहुते गहिर आ विस्तृत बा। ओइसन-ओइसन परम्परा जौना के सुनि के भा देखि के विचित्र लागेला लेकिन नीमन एतना लागेला कि नजर से बिसरलहूँ ना बिसरेला। हालांकि जगह बदलले पर परम्परा में कुछ अन्तर हो जाला लेकिन ओकर हीर ना बदलेला। एहीसे पतोहि लोग अक्सर सासु से कहत लउकेला कि "हमरी नइहर ए तरे ना होला, हे तरे होला।"

लोक परम्परा में शुभ अवसर पर गारी गवला के बहुत बड़हन महत्व बा। विवाह संस्कार भा जनेव संस्कार के शुभारम्भ "माटीकोड़" से होला। माटीकोड़ की बेरा ननद भउजाई के एक दूसरा के गारी गावल सुनि के जौन आनंद आवेला कि लोग हँसत हँसत गिर जाला। ओही में यदि कौनो पतोह तनी लंगेड़ होले त सासुओ के गारी गावे लागेले।

बजाउ भइया चमरा, बजाउ डुगडुगी।

ए बूढ़ी हरजइया के खोलि देखो लुग्गी ।

कौनो शुभ अवसर के रोमांच मेहरारु लोग की गारी की बिना अइबे ना करेला। ऊ गारी जौन गुदरावेला, सुहरावेला, अउरी सबसे बड़ बाति कि आपस के प्रेम बढ़ावेला। कई बेर त ई गारी अइसन हो जाला कि एइपर सालन ले लोग ठहाका लगावते रहि जाला। कुन्ती फुआ की गारी गावला के जोड़ ना रहे। जब एए गारी गावे लागें त उनकी सामने केहू मेहरारू ना टिक पावे। भउजाई लोग भागि चलो। उनके दुलहा पण्डित रहलें। साली के बियाह करावे आइल रहलें। बियाह की बेरा जब कुन्ती फुआ पर गारी गवला के खुमार चढ़ल त पंडिजी माने अपनी दुलहे की मुँह पर हाथ ले जा- ले जा, हाथ चमका चमका के लगली गारी गावे ।

राउर मेहरी गँवार, घूमे दिल्ली बाजार ।

घूमि रोजो पटावेली, दूसर भतार । ए पंडीजी ।

राउर जोइया छिनार ए पंडीजी॥

सुनि के जब सभे हँसे लागल तब उनका बुझाइल कि ऊ अपने के गारी गवली ह। लजा के भागि गइली। लेकिन आजु पच्चीसों बरिस बितला के बादो लोग एइपर हँसेला।

अब ई कुलि गारी गीतन के मोल मरजाद खतम होत जाता । मेहरारूओ बाड़ी, शुभ अवसरो बा, सब बा, बाराती, समधी, भसुर, देवर, गाजा बाजा सबकुछ, लेकिन लोक परम्परा के ऊ पारम्परिक गारी-गीत अब नइखे सुनात। आजु त आर्केष्ट्रा की कानफोड़ संगीत पर वीभत्स तरीका से नाचत पियक्कड़ लोग अउरी फिल्मी गारी गावत मेहरारू लोग के सुनि के ओ कुल पारम्परिक गीतन खातिर बाया तरसऽता, लेकिन अब कहीं नइखे सुनात। बियाह के ऊ कुलि गीत जौन सुनि के आँखि से झरझर-झरझर लोर झरे लागी, धीरे धीरे खतम होत जात बाड़ी सन। गारी गवला के ऊ परम्परा अउरी ऊ पारम्परिक गीत शायद अब इतिहास बनि गइल, अब ऊ नइखे आवे वाला। काहें. से कि लोक परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होखेवाला संस्कार ह। जब वर्तमान पीढ़ी पूर्वज की ए परम्परा के अपनावे के तइयारे नइखे त ई गारी गीत संरक्षित होई कइसे अउरी जब उनकी लगे कुछू रहबे ना करी त अपनी बाद वाली पीढ़ी के ऊ दीहें का? एहिसे बुझाता कि ई कुल अब खतमे हो जाई।

पहिले बेटहा की अंगना में जब तिलक चढ़े लागी त मेहरारू लोग तिलकहरू लोग के देखा-देखा अउरी हाथ चमका चमका के निहसइहें ।

इ जनि जनिहऽ समधी बटुला चढ़वले बानीं।

बटुला के मोल बड़ी थोर हो।

अइसन बटुलवा हम पँवरिया के दिहले रहनीं।

बाबू की जनमे की बेर हो ॥

सुनि के तिलकहरु लोग हँसी। ओही में एनहो से केहू हाथ चमका के रिगा दी, देखि के सभे हँसे लागी। तिलक चढ़ला की बाद तिलकहरू लोग के भोजन अंगना में होई। तिलकहरु के अंगना में ही खियवला के परम्परा रहल ह। जब तिलकहरु खाए बइठिहें त पर पट्टीदारी के मेहरारू लोग गारी गइहें। पहिले आदर्श गारी गइहें

"गाई के गोबर पीयर माटी हो

ए जी रचि रचि अंगना लिपाई,

हाय सियाराम से बनी।

रउरो के गारी रउरा बापो के गारी हो।

ए जी संगे राउर बूढ़ी महतारी ।

हाय सियाराम से बनी।

ओकरी बाद जौन माई, बहिन, फुआ, चाची अउरी मामी के गारी होखे लागी कि सुनि के तिलकहरू लोग के चेहरा आनन्द से खिल उठी। गारी की रोमांच में ऊ लोग दस पूड़ी बेसिए खइहें। घंटन ले झूठहूँ के बइठि के गारी सुनि सुनि के अउरी बिहसि बिहसि के लोग खाई।

हमरा तिलकहरू के तीन गो बहिनिया।

तीनू बहिनिया कटार,, रसना राम से भजी।

बड़की जे बीनेले हमरो भइयवा

छोटकी के कलुआ भतार,, रसना राम से भजी।

गारी सुनला से तिलकहरु भी पीछे ना हटिहें। जेतने मेहरारू गरियइहें ओतने लोग धीर-धीरे गारी के आनन्द ले ले के रसे-रसे भोजन करी। भोजन की बाद जब जाए लगिहें तब त अउरी गारी।

तनी सुनि लीं तिलकहरूजी तब भागीं,,

तनी सुनि लीं ॥

राउर माई गँवार राउर बहिना कटार।

राउर छोटकी बहिनियाँ ऊ घूमे बाजार ॥

तनी सुनि लीं ॥

बारात जब बेटिहा की दुआरे आई अउरी द्वार पूजा होखे लागी त मेहरारून के गीत गूँजे लागी।

हम बोलवनीं गोर गोर करिया काहें अइले रे ।

तोरी बहिन के चोट्टा मारो दुनियाँ हँसवले रे ॥

तरह-तरह के गारी, तरह तरह के गीत गवनई से मंजर गुलजार हो उठी। ओकरी बाद जबले बारात बिदा ना होई तबले गारी गीत गूँजते रही। गुरहथन की बेरा भसुर के गारी, बियाह की बेरा दुलहा के गारी, बाराती की खइला पर गारी, माथ ढक्का की बेरा समधी के गारी, गारी गीत से हरदम अंगना से ले के दुआर गुलजार रही। !लेकिन ऊ कुलि युग अब बीति गइल। ओ गारी मे केतना मिठास रही कि जेकरे नाव ध के गारी गवा जाई, ओकर चेहरा खिल उठी। एतना आनन्द कि ओकरा बुझाई कि कौनो निधि मिल गइल बा। ओ गारी मे अपनापन रहल ह, जोड़े के ताकत रहल ह, सम्बन्ध के प्रगाढ़ बनावे के ताकत रहल ह, लेकिन धीरे धीरे अब खतम होता। जबले गावल ना जाई खतम होइए जाई। एही से हमार सबसे निहोरा बा कि बेटिन से पारम्परिक गीत गावे खातिर ओकने के उकसावल जाउ, कहि के गवावल जाउ। तबे शादी बियाह के ऊ भावनात्मक संवेदना जीयत रही। नाहीं त अब ए परम्परा की मिटला में देर नइखे। ई सही बाति बा कि जौन समाज अपनी परम्परा से कटि जाला ऊ जिंदा रहला की बादो दुनियाँ से मिट जाला। हमार समाज जिंदा रहो, दुनिया में हमार भोजपुरिया पहिचान जिन्दा रहो, हमार नाम जिन्दा रहो एकर कसम लिहल जाउ अउरी एकरा खातिर ओ पारम्परिक गीतन के सहेजे खातिर अपनी बेटिन के उकसावल जाउ कि ऊ पारम्परिक गीत गावे सन।

जय भोजपुरी तय भोजपुरी।

◆◆◆

सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा
कुशीनगर उ0प्र0

चार मनहरण घनाक्षरी छन्द

अमही मिसिर भोरे जगही गोपालगंज ।
धाम भोजपुरी परनाम करत हईं ॥
जय भोजपुरी भोजपुरिया समाज जय ।
मंच के सरपंच हो गोड़ धरत हईं ॥
सुनि ए सतीश जी आ सुनी ए सुभाष भाई ।
भोजपुरी मोती बन ईंहा झरत हईं ॥
आज कुछ छन्द बाटे मनवा बुलंद बाटे ।
ख़ुशी ख़ुशी मन सुनि रस भरत हईं ॥

मनवा मे आस रहे, भितरे हुलास बहे ।
दिलवा के बात हम, केतना बताईं हो ।
हिया मे पड़ाका छूटे, ताबातोड़ लड्डू फूटे ।
चल देनी देखे बदे, आपन लुगाई हो ॥
तोख भरपूर देके, समझ सहूर लेके ।
छोड़ अईनी कईसे, कहीं दुःख भाई हो ।
टूटल आस सगरी, निरेख भर नजरी ।
थूक - थूक खइनी ऊ , बोले हरजाई हो ॥

प्यार प्यार कहेलु तऽ, काहे नाही करेलु तूँ ।
आज इहे बात तनी, हमके बताई दऽ ॥
एक बेर प्यार से तूँ, सुनना हो दिल जानी ।
मनवा के आस बाटे, सरधा पुराई दऽ ॥
तोहरे भरोसे बानी, जहर लागेला पानी ।
अंखिया से अपना तूँ, हमके पीआई दऽ ॥
बात नाही मनबू तऽ, आजु एगो काम करऽ ।
मुस के दवाई तनी, आई के खिआई दऽ ॥

अपने बियाह के हो बाति हम सबका से ।
बोलऽ ए संघाति अब कइसे सुनाईं हो ॥
लगल बियाह जब बॉबकट लइकी से ।
भोली-भाली तब ओके कइसे बताईं हो ॥
बड़ी प्यार से जब मिले गइनीं ओकरा से ।
बईठि पियत रहे अरि; मोरी माई हो ॥
अइसन शदिया से बढ़िया बा इहे राम ।
खाके सेलफास हम अब मरि जाईं हो ॥

◆ ◆ ◆

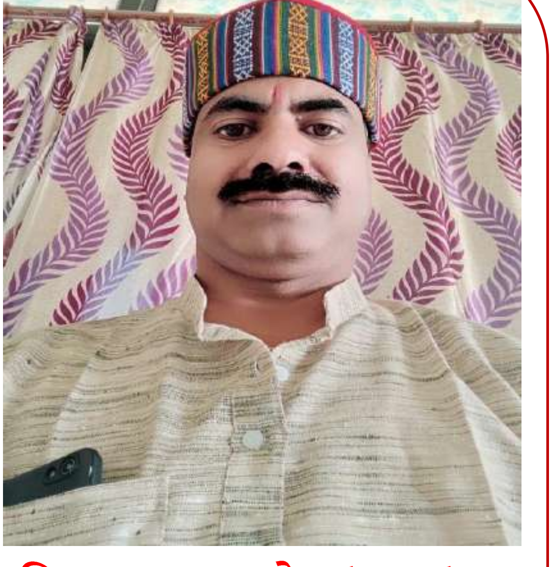

नित्यानन्द पाण्डेय 'मधुर'
कुशहरी देवरिया उत्तरप्रदेश

प्रीत के कोहबर

भोर भिनसहरे फूल तूड़ के, राधाकृष्ण के मूरत के धो धा के ऊ घंटो पूजा पाठ में रमल रहस। ओइजा से उठस त पहाड़ के भीतरी से मेंही-मेंही धार में बहत झरना के ऊ अपलक निहारत रहली, का जाने कवन इयाद रहें जवना संगे ऊ बन्हाई लपिटाइल जिनगी के नाइ के गते-गते खेवत रहली।

दिन भर इस्कूल में रहस, बालक बालिका के किताबी ज्ञान के साथ-साथ धर्म-सिच्छा आ समाजिक सिच्छा के बात भी खूब मन से सिखावत रहली। अपना गाँव वाला घर के बहरी ओसारा में इस्कूल खोलले रहली जेकर फीस ना मात्र के रहे ताकि लइका-लइकी मुफुत के पढ़ाई बूझ अइबे ना करस लोग।

ई कुल कुछ प्रक्रिया उनकर ऐतना नियम से रहे जे ओह गाँव से ले ले नगीचे के गाँव-गिरान तक के लोग अपना बेटी के एडमिशन ऐजुगा करा देले रहुअन जा।

पट्टीदार त पट्टीदारे होखेला, केहू चाहत ना रहे कि ई कुल कमाई आ पेन्सन के पइसा के हे तरे ओरवा देस। खेत बधार पर किसानी करे के बजाए आर्गेनिक पैदावार के बारे में बात विचार करे लागस।

गोतिआ के चाची सास आ भौजाई लोग दाँते तर अँगुरी जाँत लेत रही जा जे सहर-सहरात में रहल, पढ़ल-लिखल आ हतना रइसी आ ऐशोआराम के जिनगी के बाद हे तरीका के छोटहन चुकी पहाड़ी के गाँव में आ के खटानी के काम कइसे कर रहल बाड़ी?

अनिल रावत आ अमोला रावत हमनी के पड़ोस में आइल रहले जा, न्यू आफिसर कालोनी में । रावत जी डीडीसी रहुअन। स्वभाव से दूनो बेकत खूब सहमेलू रहले जा, सभकरा दुख-सुख में आगे बढ़-चढ़ के मदद करे वाला । भोर के चाह दूनो बेकत एकही संगे पीअत रहले जा, कवनो भजन भा भक्ति के गीत बहुत महीन आवाज में रेडियो भा टेपरिकार्डर प बाजत रहीं। पोसुआ कुकुर, बिलार, खरगोश चिरई, मय उनकरा लान में निफिकिर घूम सन्। दूनो बेकत के प्रेम के दँवक खातिर उहों कुल खखुआइल रह सन्...

ओह कालोनी में ऊ लोग के सभ केहू लवबर्ड्स कहत रहे।कबो केहू ओह दूनो बेकत के लड़त झगड़त ना देखले रहे। रोटरी क्लब के पार्टी में आधा से बेसी जोड़ा एक-दूसरा में नुक्स निकाले में रहे बाकिर ई दूनो जोड़ा एक ओरा गते-गते एक-दूसरा के एकटक देखत डाँड़ में हाथ डाल के नाचत रहे, ओइजा पसरल पुरवासाखी अरकच बथुआ से दूर एकदम दूसरे दुनिया में बिचरत रहले जा ।

कालोनी के सेवादार से मय बात बतकही एह घर से ओह घर ट्रांसफर होखे में इचिको देरी ना लागत रहे, बाकिर एह घर से कवनो मसाला कुटनी लोगन के ना मिल पावत रहे। खाली प्रेम, मधुर बेवहार आ सहमेलूपन के चरचा होखे।

बाकिर सुनले बानी जे बुला बेसी प्रेमों के दिन बेसी ना नू होला, आ लोग बाग के अँखियों में कबो-कबो आसुरी शक्ति भभकत रहे ला जेकरा प्रेम-व्रेम जइसन लसगर चीज बड़ा बाउर लागेला।

ओह कालोनी में अइला ऊ लोग के अभी सात आठें महीना भइल रहे तले एगो जेठ के अमावस के रात बहुत करेजा बीन्हे वाला बिलाप से आसपड़ोस के लोग के नींन टूट गइल, जब अखेयान लिहल गइल त ऊ आवाज अनिल रावत जी के घरे से आवत रहें आ उनकर महतारी के ऊ मार्मिक बिलाप रहे। केहूओं बिसवास ना कर पावत रहे जे नीके नीके हँसे बोले वाला रावत जी अब ऐह दुनिया में नइखन। मिनटे में आस पड़ोस के सभ केहू ओजुगा पहुँच गइल।

बिछौना प नीला सफेद कुरता पायजामा पेन्हले ऊ निश्चितता से सूतल रहुअन रावत बो पलंग के बगल में राखल सोफा प बइठ के उनकर हाथ अपना हथेली में कस के पकड़ले धियान से उनकर चेहरा के तिकवत रहली। उनकरा बगल के सोफा प उनकर बूढ़ सास के रोअल चिचिआइल....

डाक्टर नर्स आवत जात रहे लोग, आवाजाही मचल रहे। सभ केहू का जाने काहें एतना चलत रहे, जबकि डाक्टर ई बात डिक्लेयर कर देले रहुअन कि प्रान पखेरू हार्ट अटैक से ऐह

नश्वर देह के छोड़ चुकल बा।

अब सोझा रहे त बस माटी के देह, माटी में मिले खातिर राह खोजत बा। आ बेजान देह देखि के लोग-बाग भीरी सवाल के ढेरी लाग गइल रहे...

का भ गइल रहे?

कइसे भ गइल?

का कवनो बेमारी रहे?

कवनो परसानी रहे?

इलाज काहे ना करववनी जा?

दवाई बीरो टाइम से ना देत रही का?

आही हो दादा एकहू बाल-बच्चा भी ना भइल रहे!

एगो मूसो जन के दे देतन त बेचारो रावत बो के जिगनी पार हो जाइत!!

बिआहो के त बुला ढेर दिन ना भइल रहे!!

सवालन के ढेरी के बावजूद, का जाने कवन चुम्बक रहे जे अमोला जी ई कुल सवाल से निफिकिर एकटक रावत साहब के मुँह ओरी ताकत रहली , केहूओ के बात के कवनों जबाब ना देली। बुला उनकरा के कंठिआ मार देले रहे।

रावत जी के माई के बिलाप से लोगन के करेजा अँइठा जात रहे। रावत जी उनकर एकलौता बेटा रहुअन। गाँवे के घर दुआर, बर बगइचा, खेत बधार मय उनकर माई ही देखत सुनत रहली आ कबो-कबो बेटा भीरी भी चल आवत रहली त महीना-दू-महीना रह के फेर पहाड़ प चल जास। एक महीना से एजुगा आइल रहली ऊ का जानत रहली कि ऐह बार के आइल हइसन काल हो जाई?

आसपड़ोस के ऊ ई बात बतावत ना अघास कि हमर सवांग के बड़ा मन रहे जे हमर बबुआ बड़का अफसर बने, बाकिर बाबू जब अफसर बनले त ऊ ई सुख ना भोग पवले आ चटेपट में गुजर गइले।

ऊ रोवत चिचिआत इहें कुल कह कह के क-क बेर बेहोस हो जात रहली। नर्स सूई दवाई देवे में लागल रहली ....

अगिला दिन दस बजे ले हित नात रिस्तेदार लोग भी चहुँप गइल रहले जा। रावत साहब के लास के बहरी बाँस के बिमान प सुतावल गइल रहे। अन्तिम किरिआ करम के तइयारी करत करत बारह एक बज गइल रहे। जेठ के घाम देह जरावे वाला रहे। उनकरा देह प सोझें लहकत घाम लागत रहे, तनिके देर में अमोला जी दउरत लान में लास भीरी आके रावत जी के मुँह प अपना आँचर से तम्बू तान के धीरे-धीरे बेना डोलावे लगली आ तनी नरमे खीस में भाई से कहली-

"भइया इहाँ के हतना बिख लेखा घाम में सुता देले बाड़ लोग, इनकरा तनिको गरमी बरदाश्त ना होला हो, एक मिनट भी बिना ए.सी के ना रहे लन, आज बोलत नइखन त हइसन बेकदरी, सई मुठ्ठी के अदमी के एक्के छने एक मुठ्ठी के मत करऽ लोग।"

प्रेम के पराकाष्ठा में देह गौण हो जाला ऊ साँस के आवाजाही ना देखे ऊ त बस भाव से भरल होखे आ भाव ही लउके ला, संगे रह जाला मधुर इयाद जेकरा के ऊ चाहे त आपन जीअत जिनगी पोसले सम्भहरले रहे ला।

अमोला जी से लिपट के उनकर भाई बिलख-बिलख के रोवें लगलन बाकिर उनकरा आँख में एक ठोप भी लोर के नामोनिशान ना रहे। ऊ पगली लेखा भुइआ बइठल आँचर से बेना डोलावत रहली।

श्रद्धांजलि देबे खातिर आइल मय लोगन के आँख लोरा गइल रहे, बाकिर रावत बो के ऊपर कवनो असर ना होत रहे। उनकरा लोगबाग के आवाजाही प कवनों धियान ना रहे...

रावत जी के अंगुरी में दू गो सोना के अँगूठी रहे आ खूब मोटहने बुला बीस-पच्चीस ग्राम के सोना के सिकड़ी गरदन में रहे। जब उनकर चचेरा बड़ भाई जे गाँवे से आइल रहुअन निकाले लगलन त रावत बो एकदम कड़ेर होके बरिज दिहली

" ना ना भाईसाहब , एक्को गहना देह प से मत निकारी सभे, इहाँ के कतना बाउर लागी, कि आज हमार कवनो अख्तियार नइखे रह गइल त हमरा के छूछें धई दिहलन सन। जवन गहरा गुरिआ इनकरा देह प बा ऊ सभ कुछ ओसही रही, कुछु हटी ना।"

फेर कुछ घरी रूक के बोलली- "जब असली सोना सिगार ही नापता हो गइले त ई कुल मोह माया बिटोराइए के का होइ....सब जाये दी इनकरा संगे। "

सूखल मुँह झुराइल ओंठ संगे पगली लेखा भाग-भाग के किरिआ करम के काम देखत रहली...अइसन बुझात रहे जे उनकरा कपारे एकाएक कवनो जिम्मेदारी आन पड़ल बा आ कवनो कमी नइखे होखे के....

जब मन मनबे ना करी कि साथी के साथ छूट गइल त लोर कइसे निकसी....ऊ त बस ओजुगा से हेराइल रहले आ ऊ अपना भीतर उनकरा के संजोवत रहली।

दूनो बेकत के प्रेम अतना गहिर रहे ऐही से आज उ तन के बिदाई भी बहुत बेसी आदर आ सम्मान के साथ कइल चाहत रहली।

दाह संस्कार के बाद सभ केहू गाँवे जाए लागल लोग त आस पड़ोस के मेहरारू लोग रावत बो के पकड़ के रोवत रहे कि भाभी जी अब का जाने कब मुलाकात होखी, रउरा त दिल्ली अपना नइहर में नू रहब !!

ऊ बहुत शान्त भाव से बोलली- "अपना गाँव में ही रहब, रावत साहेब के इच्छा रहे कि रिटायर होखला के बाद गाँव में ही रह के गरीब-गुरबा बाल-बच्चन के सिच्छा-दीच्छा दीहल जाई, राधा-कृष्ण के मन्दिर बनवावल जाई। अब ई कुल कमवा त हमरे के नू उनकरा संगे मिल के ओरिआवे के बा.....

ओहीं मेहरारूअन के हुजूम में से आवाज आइल- "उनकरा संगे! आहीं हो दादा, संवाग के जइला से बुझा ता कि बउराहिन हो गइली।"

ई बात अमोला जी के कान में भी जरूर गइल होखी बाकिर ऊ कवनो जबाब ना देली, तले ओहीं भीड़ में से कवनो अकिला फुआ आपन सड़ल गन्हात विचार से सनाइल मुँह खोलली- "अरे, राउर अभी उमिर ही का बा, दोसर बिआह क लिही, पहाड़ लेखा जिनगी कइसे सम्हराई?"

तले दूसरी ओहू से बड़की आपन बसावन बिचार उझींलली-

"आ गांवे का जाइब गोतिअन के भीरी अउरी दुख सहे जी, सहर-सहरात में नइहर बा, सान से भाई-भौजाई प पइसा फेकीं आ ठाट से शहर में सुख सुबिधा से रही। "

ऊ उनकर बात सुन के बहुत स्थिर भाव से बोलली-

" हमार जिनगी त रावत साहेब भीरी बन्हकी बा, अब पहाड़ लेखा होखे चाहे खदकत अदहन लेखा का फरक पड़त बा? "

रोवें से मन हलुक हो जाला आ करेजा के अलम त आदमी फेर से मयावी दुनिया के तिकड़म बाजी में अझुरा जाला, बाकिर एजुगा त रावत बो के एक्को ठोप लोर ना बहल, बुला नमकीन पानी के लवण भीतरिए जमला से ऊ पाथर बन गइल रहली, आ एहीं से ओकरे सहारे ऊ बेसी करेर हो गइल रहली! ....

ना-ना ई त प्रेम के चरम ही रहे, जेकरा बाद ई मायावी दुनिया के लागलपेट के मन प कवनो असर ना होखेला....जब मन माने के तइयारे नइखे कि ऊ अब नइखन त फेर देह के गइला भा रहला से कवनो मतलब ना रह जाला।

ऐहिजा त मन से मन के गठजोड़ भ गइल रहें....

अमोला रावत अपना ससुरारि पहाड़ प गइली त फेर उनकर कवनो खोज खबर ना मिलल, कुछ दिन आस पड़ोस में भी ओहि लोग के बात होत रहे फेर सभ केहू भर भुला गइल।

ओह घटना के पच्चीसन साल बाद हम पहाड़ के सैर करे खातिर परिवार संगे गइल रहनी। तबे सड़क पार करत एगो अधेड़ उमिर के मेहरारू लउकली, नारंगी कढ़ाई दार फेरन नीला पैजामी आ कपार प छीटदार रूमाल से फेहटा बन्हलें खूब दिपदिप गोर गुलाबी चेहरा मोहरा प तनि मनि झुर्रियन के धारी

लउकत रहे। हम बहुत ध्यान से देखनी आ हमरा मुँह से अनायास ही निकल गइल- "अमोला चाची?"

ऊ रूक के हमरा के देखे लगली। बुला हमरा के चीन्ह ना पवले रही, जबकि हम जब ए आफिसर कालोनी में रहत रहली त कब बेरी ठेकुआ, पुआ आ मकूनी उनकरा घरे देबे गइल रहनी।

खैर ! ऊ आँख मिचमिचा के पहिचाने के कोसिस करे लगली। जब हम आपन परिचय दीहनी त उनकरा अधबूढ़ आँख में अजब तरह के चमक फइल गइल आ ओह घरी बड़ा मासूम मुस्कुराहट उनकरा चेहरा प उभर आइल रहे ऊ हमरा के पकड़ के अँकवारि में भर लीहलीं।

स्वभाव से मिलनसार चाची आजों ओइसने रहली, उनकर प्रेम से सनल आग्रह प हमनी मय परिवार चाची के घरे गइनी जा भीतरी साज सज्जा में शहरी रूआब के कवनो कमी ना रहें ।

पहाड़ के अतना निर्जन आ ऊँचाई वाला जगहा प मय सुख सुविधा के चीज सजल धजल रहे। हमनीं के पूरा परिवार के आव भगत में चाची कवनो कमी ना छोड़ली जबकि हम बीस पच्चीस साल पहिले चाची के पड़ोसी के बेटी रहनी ।

रात के बातचीत में चाची बतवली जे कइसे पट्टीदार लोग के विरोध आ बाउर बेवहार सह के अपना सास संगे एजुगा रहे जोग बनवले रहली। इस्कूल आ मन्दिर बनवावें में बहुत बेसी अड़चन आइल, बाकिर मन में जब प्रेम खातिर जुनून रही त बड़-बड़ अचड़न के कवनो अख्तियार ना होखेला।

 उनकरे से पता चलल जे चाचा के गुजरला के बाद उनकर माई दस बरिस ले जीअल रहली ।

भोरे भोरे हमनी जब उठनी त कवनो पनरह-सोरह साल के लइकी हमनी खातिर चाह नास्ता के तैयारी करके रखले रहे। तबे मन्दिर के घंटी संगे बहुत मधुर आवाज में भजन सुनाइल

 गोविदा ओ मुरलीमनोहर

सुध ली ओ हमरों गोपाला

 अरज निहोरा रौरे सौझा,

हलुक करी जिनगी के बोझा,

रौरा बिना हमर के बा सहारा

 गोविदा ओ मुरलीमनोहर....

 हार जीत अउर जीवन मरण से

हमरा कवनो फिकिर नाहीं,

रौरे दरसन के तड़पे करेजा

अउर कवनो बात के जिकिर नाहीं,

बनी सहारा ओ ब्रजलाला

 गोविदा ओ मुरलीमनोहर...

हम ओह लइकी से पूछनी कि अतना मधुर गान केकर ह , त ऊ बोलली जे अमोला माई के, रोज के भोर आ साँझ के ऊ नियम से भजन कीर्तन करेली...

तबे इयाद परल जे अमोला चाची रोटरी क्लब के पार्टी में भा केहू के घर में पार्टी होखत रहे त ऊ गाना जरूर गावत रहली, आ सब केहू उनकर आवाज़ सुन के मोहित हो जात रहे जा..।

ओही लइकी से पता चलल जे उनकरा भीरी पढ़े वाला आसपास के गाँव के मय लइका-लइकी उनकरा के अमोला माई कहेला लोग। ऊ सेब के बगान में काम करे वाला नेपाली मजदूर लोगन के मय परिवार के भी रहे के जगहा देले बाड़ी आ उहो लोग के खाली समय में पढ़ावे लिखावे के सिच्छा देत रहेलीं।

हमनी अमोला चाची से विदा लेबे खातिर मन्दिर में ही चल गइनी। ऊ हमरा के देखते आरती के दिआ भगवान जी के सोझा धई के हमरा के अ़कवारि में ध के बहुत मयगर हो के बोलली- " बहुत नीक लागल बेटा, पुरान याद ताज भ गइल,ऐने फेर कबो आवें के होखी त आपन घर समझ के बेझिझक आ जइह। ...फेर एक मिनट रूक के लमहर साँस ले के बोलली-" तोहार रावत चाचा आपन अरदोआय भी हमरे के दे के चल गइले नू, आ आपन मय ख्वाब भी हमरे संगे नाथ देहलन, ऐह से दू-दू जना के सन्तीर जिनगी जीअत बानी, काम उनकर एतना लमहर बा कि हमरा भोर-बिहान, साँझ-रात के खेआल ना रहे ला...।"

हम पूछनी- रउरा के कब्बो अउजाहट, डर भा अकेलापन ना लागेला?"

ऊ हमरा कंधा के अपना दूनो हाथ से जाँत के तनी गम्भीर होके बोलली - "कबो पते ना चलल कि उहाँ के नइखी, लोगबाग से सुनीला त हम फेर में पड़ जानीं कि ऊ कब हमरा संगे ना रहलन?"

हम उनकर दूनो हाथ चूम लिहनी...हमार आँख डबडबा गइल रहे....हम झटके से मुड़ के चले के भइनी त चाची हमरा हाथ के बहुत मजबूती से पकड़ के ओइजा पत्थर के बनल कुरसी प बइठा लिहली आ बोलली-"ई आँसू बहुत कीमती होला बेटा, ऐकरा के कतहुँ मत बहवा द। ई कबो-कबो बहुत मजबूत आदमी के भी जड़ से हलुकाह बना देला।"

"चाची जी, जइसे हँसल बोलल, खाइल पीअल, चलल बइठल सब काम जिनगी में जरूरी बा ओसही रोअला से भी मन हलुक हो जाला, त रउरा ओह बेरा रोअनी काहे ना...का रउरा के दुख ना होला आ जब दुख होला त रोआइ काहे ना आई?" हम बेताबी में बेतुका सवाल कइनी।

" जब रावत साहब जीअत रहले त हम तनिके बात प रो देत रहनी त ऊ कहस कि आज रोअत बाड़ू त कुछू नइखी बोलत बाकिर अमोला एक बात इयाद रख ल जब हम ना रहब त एक ठोप भी लोर के जिआन होखे मत दीह....हर बात प आँसू ना गिरावे के चाही, ई लोर आदमी के सबसे बड़हन दुसमन होखेला...आँसू के कबो आपन चाहे हमार पग बांधा मत बने दिह...जदि बेर बेर ,बात बात प लोर बहत रही त हमहूँ ऐही संगे बह जाइम। हमार प्रेम, हमार ख्बाब सब बह जाई.....लोर के भीतरी तह में संजो के आपन हथियार बना ल...फेर तू देखिह तहरा के केहू लछ से भटका ना पाइ....

हम उनकरा सरीर के गइला के बाद से एक्को ठोप आँसू नइखी गिरवले, आ ऐही के नतीजा बा जे उनकर अधूरा इच्छा पूरा कइल कबो कठिन ना लागल। "

स्त्री के किसिम-किसिम के रूप में ईहो त एगो रूप बा कि प्रीत के रंग में सनाइल मन सहज रूप से जिनगी के जी रहल बा। हलुक सेंकें लायक घाम चबूतरा प आ गइल रहे, सूरज देव के सुनहला रंग सोझे उनकरा चेहरा प गिरत रहे आ ओह से ऊ कवनो देवी समान लागत रहली। अपना अँगुरी के अँगूठी घुमावत ऊ बोलली- "रावत साहब जीअते जिनगी त हमरा के बहुत कम समय दे पवले , बाकिर ऐह पच्चीस साल में ऊ रूह लेखा हमरा संगे-संगे रहेलन, एक मिनट भी हमरा से दूर नइखन हो बेटा, ना त बहुत लोग अस्सी नब्बे बरिस संगे साथ एहवात के जिनगी जीयेला, बाकिर ओह लोग के जिनगी गेंग झगड़ा, मुँहफुलौअल करत बीतेला। आजो कतना रात ले हम उनकरा से बतिआवत रहीना, आगे के प्लानिग, बालिका सिच्छा के अऊर आगे बढ़ावे के मुहिम, पहाड़ के जनजीवन के बिकास, सब में उनकर भरपूर साथ रहेला , एहीं से अकेला जिनगी कबो पहाड़ ना लगल।"

तले एगो चिपुट नाक के बीस बाइस साल के लइका दू कप चाह ले के आ गइल, हम तुरंते बोलनी- " चाची हम त भोरही चाय नास्ता कर लेनी ह, अब दोहरिआ के चाह ना पीही। "

ऊ बहुत मेहीं आ मधुर मुस्कान संगे बोलली- " भोर के चाह आजो हम दू कप पीही ना, इयाद नइखे जे हम कबो एक कप चाह भोरे पीअले होखम। काहे से कि जब ऊ सरीर संगे हमरा भीरी रहले त बेसी काम के चलते साँझ के चाय त ना पी पावस, बाकिर भोर के चाय जरूर संगे पीअत रहुअन। जब परसान होखीना त ऊ सोझा खड़ा हो के मुस्किआत बोले लन अमोला हमर पहाड़ी शेरनी, आ हम फेर से शक्ति पा जाइना।"

" हम ई बात ना मानी ला जे कहेला कि शक्ति, अलम केहू के जीअते आ लगे रहला से होखेला.. ना बेटा सबसे बड़ शक्ति त प्रेम में होला, रूह से रूह के मिलन सबसे बड़ होला....

ऊ ई बात रोज समुझावे लन आ कहे लन जे तहार नाँव बेसक अमोला ह बाकिर तू हऊ बट के फेड़ जेकरा छाह तले बहुत निरीह आ टूअर टापर लोगन के जिनगी उजियार होखी।

जब नस नस में रोम रोम में प्रेम के प्रवाह होला तब जाके हम दुनिया के सच्चाई समझ पाइब....आधा अधूरा प्रेम आ बेसी अविश्वास होखला प जिनगी जीअल दुभर हो जाला, हरवक्त मन में हाही मचल रही त एकहू काज सुभहित ना हो पाई। हमार प्रीत के कोहबर त हर रोज सजल रहेला , हम हर वक्त उनकरा संगे रहीना...उठत बइठत..सांस सांस में ऊ बसल बाड़े, उ दूर कहां बाड़े? "

एह बार हम उनकरा बात से अतना सम्मोहित हो गइल रहली कि कुछ सुधबुध ना रहे, चले के सूचना मिलल त बिदा होखे खातिर उठनी। अबकी बार हम लोरा के आ दुखी होखे ना उनकरा से मुस्कुरा के गले मिलनी आ हँसी ख़ुशी से बिदाई लेके वापस चल देनी इहे सोचत कि आज भी अलौकिक शक्ति केहू केहू के भीरी मौजूद बा आ ऊ अपना दुनिया में प्रेम के भरोसे केतना खुशहाल बा मस्त आ ब्यस्त बा।

प्रेम त अमर होला आ जदि ठान लीहल जाये त आत्मा से आत्मा के मिलन भी जरूर होखेला। अब उ दूनो जाना के प्रेम बालिका सिच्छा , मन्दिर में राधा कृष्ण के सेवा के रूप में सार्वजनिक हो गइल बा।

प्रीत के कोहबर में प्रेम के दिआ जरत रहो....

◆ ◆ ◆

बिम्मी कुंवर

चेन्नई

ओ रे निनिआ

निनिआ कवने बने गइलू,
कवना देस में लुकइलू,
तोहके जोहत-जोहत भइलीं हरान...!
हमके काहे से भुलइलू,
ओ रे निनिआ...!

रतिया मातल भइल,
अखियाँ पाथर भइल,
चंदा चानी बनल, जोन्ही टिम-टिम करे
बाकिर रहिया कातर भइल,
ओ रे निनिआ...!

सुखवा त अम्मा पँजरी,
दुखवा के तीरी लगी,
रहिया हबडब करे!
कुफुत जिनगी से जकरी
ओ रे निनिआ...!

◆◆◆

बिम्मी कुंवर
चेन्नई

धोखेबाज हँसी

कुछ लोग के सेटिग में जन्मे से गड़बड़ रहेला जेकर खमियाजा उ लोग जिनगी भर भुगतेला।ओ में ओ बेचारा के कौन दोष!अब राजेश कुमार के की बोर्ड में र बटन के जगह ग बटन लाग गइल रहे त राजेश कुमार का करते उ त जिनगी भर र के ग ये बोलते।उपाय का रहे।कुछ अइसही सेटिग में गलती हमरो एगो मौसेरा भाई के चेहरा में रहे।रहे का अभियो बा।उनकर चेहरा कौनो एंगल से देखी हँसते नज़र अइहें।मोनालिसा के मुसकान के तरह ओमे कौनो कंफ्यूज़न ना होई कि उ मुस्कात बाड़ी कि रोअतरि।उनकर चेहरा पर एगो हँसी हमेशा खिलल रहेला।बुझाला कि हँसी के पोस्टर उनका मुँह पर सटल होखे।उ रो अस चाहे गावस हमेशा हँसते दीखेले।एक बार स्कूल में मास्साब के कौनो बात पर खीस पड़ गइल।धइल तमाचा खींच दिहले।मगर ई का?कहाँ ले थप्पड़ ख के रोअतन उलटे हँसत रहले।मास्साब के खीस आउर बढ़ गइल।नीमन से धब धबा देहले।उ त लड़िका सब चिल्लाये लगलसन-मास्साब उ हँसत नइखन रोअतरे।आँख से लोर झरत रहे आ चेहरा पर हँसी खिलल रहे।....एक बेर त ई हँसी उनकर जान ले लित।आजो उ घटना के इयाद करके देह सिहर जाला।

ननिहाल साइड से हम पूरा सम्पन्न हई।अम्मा हमार छ बहिन।दू भाई।हमनी के होश सम्भालेले चार बहिन के शादी हो गइल रहे।दुगो मौसी लोग अभी बियाहे के रहे अ एगो मामा।मामा त हमनी के हम उमिरिये रहले।चार-पांच साल बड़।गर्मी के छुट्टी होखे त एक ही कार्यक्रम रहे मामा किहाँ जायेके।पूरा गर्मी उहवे बीते।उ हे हमनी के शिमला कुल्लू मनाली ऊंटी मसूरी सब रहे।मामा के गांव के अमराई बाग बगीचा कौनो हिल स्टेशन से कम ना रहे।सबसे बड़का आकर्षण रहे पोखरा।गाँव के सीवान पर एगो बड़का पोखरा रहे।दू तरफ से पक्का घाट बनल रहे।एक तरफ से स्लोप वाला गाय गोरु के पानी पिये खातिर आ एक तरफ सीढ़ीदार।हर चार सीढ़ी के बाद एगो चौड़ा सीढ़ी रहे।सीढ़ी उतरत पानी थाह त चौड़का सीढ़ी पर जहां छाती भर पानी रहे उहें डुबुक-डाय होखे।जे तैराक रहे से पानी में पउड़ जाय।जे ना पौड़े ओकरा सख्त हिदायत रहे चौड़का सीढ़ी पर खड़ा होक छाती भर पानी मे नहा।ओकरा से नीचे नइखे उतरेके।

गरमी में पूरा ज़मात इकठ्ठा होखे।सीवान से हमनी के दू भाई मुन्नाजी मनोज।ताजपुरवाली मौसी आवस।उनकर दूगो मुन्ना मन्टू।कलकत्ता वाली मौसी के तीन गो झुन्ना रसगुल्ला आ पंतुआ।जउन गोर रहे तौन रसगुल्ला आ जौन सांवर रहे तौन पंतुआ।झुन्ना दुनु से बड़ रहले आ दुनु से अलग।आँख के सेटिग में भी तनी गड़बड़ रहे।बनारस ताकस त कासी ल उक जाव।लेकिन सबसे बड़ गड़बड़ी ओकरा चेहरा पर रहे।एगो हँसी स्थायी रूप से बनल रहे।रो अस त हँस स त।

सभे गर्मी के छुट्टी में मामा किहाँ पहुँच जाव।बहिन लोग पोस्टकार्ड लिख लिख के सेटिग कर लेव।सब कोई लगभग साथ ही पहुँचे।दू चार दिन आगे पीछे।नानिओ हमार पूरा तयारी कइले रहस।खजूर ठेकुआ छान के पुरे से राखस।नीमन से लुकवावस।बानर सेना के डरे।मज़ाल कि हमनी के ना खोज ली स।ओकरा बाद नानी के भनभनाहट शुरू हो जाव।कईसे एकनी के नज़र पड़ जाला।कहाँ लुकवले रनी ह।

गाँव पहुँचते पोखरा नहाये के तयारी शुरू हो जाव।मामा हमनी के गार्जियन बन जास।रिश्ता आ उमर में तनी बड़ रहलन।ना त के केकर गार्जियन।उ त नानाजी से पोखरा नहाये के परमिसन लेबे के पड़त रहे त मामा के आगे कर के कहिसन-मामा भी जात बाड़े।माने कि मामा हमनी के संभार लीहें।....उ त मामे बूझत रहले के केकरा के संभारी।खाली पोखरा पर पहुँचला के देर रहे।जहिया के बात ह ओ दिन झुन्ना भी साथे चले के तइयार हो गइल।हमनी के बीच उहे एगो रहले जेकरा पौड़े ना आवत रहे।बाकि सभे त ओलंपिक चैंपियन रहे।सब कोई एक स्वर से विरोध कइल।ना तू ना जइब।तहरा पौड़े ना आवेला।मगर उ लगले रिरियाए।भैया नु!हम किनारे ही रहेम। डुबाह्व में ना

जाएम ।काली माई के किरिया ।बात बात पर काली माई के किरिया ख़ास ।कलकत्ता से जे आइल रहले ।अब उनकर रिरिआइल देख के हमनी के मान गइनी सन् ।झुन्ना के जात देखनी त नानाजी टोकबो कइनी ।झुनवो जाता ।ओकरा के देखीह लोग ।मगर पोखरा पर पहुँचला के बाद के केकरा के देखत रहे ।झुन्ना के चौड़का सीढ़ी पर खड़ा कर के जहाँ कमर भर पानी रहे सख्त हिदायत दिआइल कि एकरा से आगे नइखे बढेके ।उहो बात मान के उहें खड़ा हो गइले ।काली माई के किरिया जे खइले रले ।ओकरा बाद शुरू हो गइल हमनी के ओलंपिक रेस ।जाट छू के घाट पर आवे के रहे ।ई तय ना रहे कि केतना बार ।जबले मन ना भरो ।मामा रेफरी के काम करस ।बीच बीच में चिल्लास ।अब हो गइल। चल लोग घरे ।मगर इहाँ सुनेवाला के रहे ।जबले थाकी सन् ना तब ले रेस चलत रहे ।ओ दिन मामा तनी खिसिआ के कहले त मन्टू पानी से निकल के उपरवाला सुखलका सीढ़ी पर जाके बइठ गइल ।हम जहाँ छाती भर पानी रहे ओ चौड़का सीढ़ी पर खड़ा हो गइनी ।ओहोजी दू हाथ पर झुन्ना नहात रहे ।डुबुक-डाय ।मूड़ी पानी के भीतर जाव फेर बाहर आव ।फेर भीतर फेर बाहर ।कमर भर पानी से उतरके कब छाती भर पानी में आ गइल रहे एपर हमार ध्यान ना गइल ।हम त इहे समझत रहनी कि डुबकी लगा के नहाता ।तले मन्टू चिल्लाइल ।मनोज भैया !झुन्ना भैया डूबऽतारे ।जइसे बिजली के करंट लागल ।लपक के झुन्ना के मूडी पकड़नी आ बाहर खींच लिहनी ।अभी जादे पानी ना पियले रले ।उभ चूभ हो गइल रहले ।एक मिनट आउर देर हो जाइत त मामला साफ़ रहे ।

मामा खिसी भूत !हई मनोजवा !सामने खड़ा बा ! ?एकरा बुझात नइखे कि झुनवा डूबता !उ त मन्टुवा ना चिल्लाइत त आज.....

हमरा त काठ मार देले रहे ।हमका जननी कि उ डूबऽतारे ।चेहरा पर त उहे हँसी खिलल रहे ।

भगवान अइसन धोखेबाज़ हँसी कोई के ना देस ।

◆ ◆ ◆

मनोज कुमार वर्मा
सीवान (बिहार)

माई

रात दिन ऊ जान दे।
देखि हठ का-का न दे।
छाँह आँचर के बना-
गुदगुदा मुस्कान दे।

हित न माई की तरे।
नात हित कवनो घरे।
झेलि ले सासति भले-
दुःख भय सगरो हरे॥

मारि के गरियाइ के।
सीख दे झहियाइ के।
पूज्य पहिला गुरु उहे-
मन कहे पतियाइ के॥

◆ ◆ ◆

माया शर्मा
प्रबन्ध सम्पादक- सिरिजन
पंचदेवरी, गोपालगंज
बिहार

पैनल इन्स्पेक्सन

हमनी में से जे पढ़ुआ लोग सन दू हज़ार से पहिले क पढ़ल होई,ऊ 'पैनल इन्स्पेक्सन' के नाम जरूर सुनले होई,अब त माध्यमिक स्कूलन से ई रिवाज कहियने के मेटि चुकल बा।लेकिन ओह घरी प्राइमरी स्कूलन में डिप्टी साहब क अवाई के डर से जवन तइयारी आ साफ सफाई होखे लागे ठीक वोहितरे माध्यमिक इस्कूलन में पैनल इन्स्पेक्सन खातिर होखे।पनरहियन पहिले से प्रार्थना से लगायत पढ़ाई, साफ सफाई,खेलकूद, स्काउटिग,लाइब्रेरी,विज्ञान के लेबोरेटरी,आफिस के एकाऊन्ट,बिल्डिग के रख रखाव,कक्षा में ब्लैक्बोर्ड ,यूनिफार्म आ साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रम क भी विधिवत तैयारी होखे लागे।काहें कि तीन दिन ले ई चले जौने में कम से कम तीनि गो कालेज के प्रिन्सिपल साहब लोग, आ डी आई ओ एस दफ्तर से इन्स्पेक्टर आफ स्कूल खुदे भा केहु उनुकी असिस्टेंट के साथे उनुकर अमला जुमला लोग टीम बना के कालेज पर चोहोंपे आ तीनि दिन ले हर एक गति विधि के मौका पर जाँच करे लोग ,राति में पढवइया आ मास्टर लो मिली के नाटक, गीति गवनई आ सांस्कृतिक कार्यक्रम करे लोग।ओकर रीपोट शिक्षा विभाग आ शासन के भेजल जा,ओही आधर पर स्कूलन के ग्रेड तय होखे।हमनी के जमाना मेंपैनल इन्स्पेक्सन के बड़ा क्रेज रहे। लेकिन सन अस्सी पचासी के बाद जइसे जइसे इस्कूलन क संख्या आ नेतागिरी बढ़त गइल , पैनल इन्स्पेक्सन के भाव आ एकर महत्त्व गिरत चलि गइल।दू हज़ार के आस पास बसपा के सासन काल में एक बेर फेरु पैनल इन्स्पेक्सन सुरू भइल रहे बाकि ओकर हालि एतना ले बदहालि हो गईल कि पूछीं जनि।वोही समय हमरो के दू तीनि गो पैनल इन्स्पेक्सन में जाए के मोका मिलल रहे जउने के हालि आगे कविता में बरनन कइलजा रहल बा।खाली नाम नाहीं दियाइल बा बाकी कमो बेस इस्थिति अइसने रहे- देखीं सभे' का जाने रउओ सब के किछु रस भेंटाउ -

पैनल इन्सपेक्सन

कईसालसेइस्कूलनकेबन्दरहेपैनलइन्सपेक्सन,
अवते बसपा सासन आडर भइल कि अब होई इन्स्पेक्सन।
पवते आडर डीआइओएस जी तुरतेलिस्टबनवलें,
कुछ पुरानकुछ नयाप्रिन्सिपल चुनिके हुकुम थमवलें ॥

जाँच करीं जा इस्कूलन के सब बिगड़ल बा लेखा जोखा,
जो नाहीं कुछ मिलीत लागीदुपहरिया में भउरी- चोखा॥
रउआ सब खुद आपन चेहरा दुसरा के अएना में देखीं,
होत पढ़ाई कइसन बाटे स्कूलन में जाके देखीं॥

पंचई घंटी से रउआ जब अपने भागल रहबि
'जनिभाग'लइकन मास्टर से रउआ कइसे कहबि,
इंस्पेक्टर क आडर लेके एक कालेज में गइनी
देखलीं जौन नज़ारा उहवां हम त ठकमुकभइनी॥

सगरी मास्टर एक जगे गोलियाके बईठल रहलें
प्रिन्सिपल साहब डंडा ले फिल्डे में टहरत रहलें।
अचकचाइके लइके जब गाड़ीके रूकत देखलें
सकपकाइके आगे पीछे ऊ कक्षा में भगलें॥

किछु लइके झटहा लेके आमेपर जूझल रहलें
बैटबाल लिहले कुछु बैटिग बालिग बूझत रहलें।
पान खात चउराहा पर कुछु टीचर लोग के देखलीं
ओक्का बोक्का खेलत हम कुछु लइकिनियन के पउलीं॥

लइका लइकीसब कमरनके बाहरघूमतरहलें
लातामुकीमारापीटी केतने कइले रहलें।
अबहिन ले कुछुमास्टरलो कुर्सी पर जमले रहे
पानी पीयत रहे लोग कुछु खैनी ठोंकत रहे॥

तबले देखल लोग गाड़ीके गेटकीभीतरढूंकत
दाबिरजिस्टरबगलीमें किनराइलसुर्ती थूंकत।
अबधीरे-धीरे सिक्षक लोग कक्षामेंजाएलागल
जे झपकीलेत रहल कुर्सी में ऊहो ताके लागल

गाड़ीसेउतरतदेखले त प्रिसिपलधावलअइलें
'बड़ेभागिसेआइलहसब'हाथजोरिके कहलें।
चपरासी बोलवाकेसबकेतुरते गोड़ धोववलें
आफिसमेंबइठा केसंउसेजरजलपानकरवलें॥

कहलें 'एह कालेजमें एसे पहिलेकेहूनआइल

रउआसबकेअइलासेकुछुहमकेखुसीभेंटाइल।
ओंनइसबीसढेरनाहोईरउआसबकी सेवामे
सबकुछ नीमन लिखीं त बोरबि हम दूधे आ मेवा में॥

तवलग एकखद्दरधारी सैकिल सेहाँफतअइलें
लड़खड़ातदेखलेंचपरासीउनुकरबाँहि पकरलें।
बड़वर कुर्सी पर लेजाकेउनका के बइठवलें
'इहे मनेजरसाहेब हवीं' प्रिसिपलजीबतलवलें॥

पुछलें'हमरीकालेजमेंअपनेसब कइसे अइनीहँ
अब कहीं कवन सेवाकरीं हम एहीसेनू अइनी हँ।'
का जनिहें प्रिन्सिपल नया हवें इनिका ना
कुछु मालुम बाटे,
हमरी घारी में दादाजी के खोलल ई कालेज बाटे॥

इहवांना कौनो चोरीबानाकौनों गबनघोटालाबा,
ना कमरन में चौकठ जंगलाना गेट प कौनो ताला बा।
संउसे विद्यालयखुलहर बाआवत भा केहू जात हवे,
चपरासीरिस्तेदार हवें,बाबू प्रिन्सिपल के सार हवें॥

मान्यता मिलल बा इंटर ले प्राइमरिओ साथ अटैच हवे,
केजी से पांचो कक्षा बा पर पासन एक्को बैच हवे।
टीचर सब पर-पटिदारी से रिश्तेदारीतक ले के बाटें,
केहू जीवन बीमा के एजेंट केहु गाडी के ड्राइवर बाटें॥

देखीं कुलि एकइस रूमन में होन्ने भँइसिनि के घारी ह,
गैराज होने बा ट्रैक्टर के फइलहरेबनल बखारी ह।
हउ थ्रेशर,इंजन भूसा के लमहर टीनशेड बनल बाटे,
बांचल सत्तह गो कमरन में चौचक इस्कूल चलत बाटे॥

फर्नीचर जतना टूटलभा,गड़हा गुड्ढी देखत बाड़,
ई लइकन के बदमाशी ह अचिको नालिखत पढत बाडें।

इस्कूले के प्रिंसिपल मास्टर ई कउड़ी काम के नइखें सन,
ना त तोहरे अस इन्स्पेक्टर कालेज में कबो देखइतन सन॥

हमरी खिलाफ जे चलल उहे मास्टर प्रेन्स्पल सस्पेंड भइल
,पइसा रुपया केतनो लागल कोरट ना उनुकर फ्रेंड भइल।
सब टीचर हमरे राखल ह,चपरासी आठ हवें दमगर।
जबतक मैनेजर हम बानी,केहु कछू बिगारी ना इनकर॥

रउआ सबके लिखले पढ़ले, का उखरे-फरिआये के बा,
इहवाँ सब हमरे राखल बा कहवां के के जाये के बा।
लेकिन देखिह अपनी रिपोट में ऊँच नीच जनि कुछुलिखिह,
हम आइबि तोहरे क्वाटर पर बतिआइबि ओंहिजे तूं मिलिह॥

जा भाग आपन काम कर,कालेज में फेरु से अइह जिन,
हमरे सरपुत शिक्षा मन्त्री,जा हमके आँखि देखइह जिन।
मन ही मन हम कहलीं ओहिजा,सब कुछु पहिले से देखल बा,
संउसे बारी बा कोइलासी त कइसे कहीं अदेखल बा॥

ई सोचि के कागज पत्तर ले हम जीपे पर भइलीं सवार,
चलि अइलीं बैरंग आफिस में फेरुसे पिटनी आपन कपार,
अब फेर फेर ना इन्सपेक्सन में जाइबि हम कउनों कालेज के,
ना जाने सत्यानास होई,कबले शिक्षा आ नालेज के॥

◆ ◆ ◆

इन्द्रकुमार दीक्षित
देवरिया

चिरई

उहाँ के चिरई हमरे इहाँ आके

खेत चुगत हई

दाना बिखेरत हई

हमरे इहाँ के चिरई

चहचहा के

संकल्प लेत हई

खेती के सुरक्षा खातिर कऽ

दाना बटोरले कऽ

लेकिन इनके मालूम नइखे

खाली चहचहइले से

ई काम सम्भव नइखे।

शशि बिन्दु नारायण मिश्र
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

◆ ◆ ◆

भँइस-भँइसा

भँइस

भँइस गोजातिये के एगो लगहर हिय।गाइ-भँइस दूनो के साथ ही प्रयोग होला।बाकिर; खाली गाइ-बैल में गला से नीचे ले लाम लटकल मास रहेला, भँइस-भँइसा में ना।कुछ लोग एकरा के विश्वामित्री सृष्टि में एकरा के मानेलें।का त ई गाइ आ सूअर के योग से बनलि।पता ना; काहें लोग अइसन मानेलें।बुला; एकर रंग-रूप देखिके कहेलें भा मानेलें।बचपन में एगो कहाउतो सुनले रहीं—

"गाइ हई लछिमी बयेल महादेव। भँइस हई सुअरी कतेक दूध देउ"।

माने; गाइ लक्ष्मी हई।बैल महादेव शिव हवें।भँइस सूअर हिय।ई कतना दूध देले! मतलब; बहुते दूध देले।

जे होखे; गाइ-भँइस के पालन आजु के एगो निमन रोजगार ह।एसे दूध, दही, घीव के साथे-साथ गोबरो से लाभ होला।गोबर भले गाइ के विष्ठा के वाचक होखे, गोंइठा भले गोविष्ठा के बोधक होखे, बाकिर जलावन खातिर गोल-गोल पथाइल आ सुखवावल गाइ, भँइस, बैलो के विष्ठा गोबरे कहाला आ एह सबके गोबर के जलावन खातिर पथाइल गोबर गोंइठे।तिल से बनल तेल शब्द जइसे अर्थविस्तार के कारण अनेक तेलहन के रस के तेले नाम ले लेलस, ओसही।हाँ; गदहा, घोड़ा के इहे चीझु लीद तब भेंड़, बकरी के लेंड़ी कहाला।

पहिले गोबर से घर-आँगनो लिपात रहे।अब पकिया मकान में कहाँ सम्भव बा! भले तिलक-बियाह में गवात होखे—"गाइ के गोबरे महादेव अँगना लिपाइ..."।

भँइसे के बच्चा पाड़ा-पाड़ी कहालें आ पाड़ा सेयान होला त भँइसा।हमनी किहाँ भँइसा के कवनो उपयोग ना रहल।हँ; बचपन में देंखी जे नगर-पालिका के भँइसा गाड़ी आवत रहे, जेपर कूड़ा-कचरा उठाके सफाईकर्मी ले जात रहन।का त कहीं-कहीं बैल के बदला भँइयो से हर जोताला।देश-काल के व्यवस्था हिय।

खैर; हमनी किहाँ त पशु-पालक लोग पाड़ी बियइला प बड़ा खुश होलें आ पाड़ा बियइला प दुखी।इहाँ ले जे पड़िया के मनगरे पोसेलें आ पड़वा के अन्हेरिया छोड़ देलें।ऊ बेचारा अपना भागे-तकदीरे जीयत भँइसा हो जाला।ना त मरिये जाला।

खैर; भँइस पालतू जानवर हिय।संस्कृत में भँइसा के महिष कहल जाला आ भँइस के महिषी। बाकिर; 'अमरकोश' के 'वैश्यवर्ग' में गाइ-बैल, बकरा-बकरी, भेंड़, ऊँट, गदहा-जइसन पशुअन के रखल आ महिष के सिहादिवर्ग में।एसे स्पष्ट होता जे ई पहिले पोसात ना रहे।ई जंगली जीव रहल।लागता जे जब लोगन के एकर दूध के अधिकता आ पौष्टिकता के पता चलल होई त पोसुआ बनावे लागल होइहें।काहेंकि; संस्कृत में महिषी के प्रयोग पटरानी के रूप में आइल बा।माने; ओह रानी खातिर जेकर पति के राज्याभिषेक के साथे अभिषेक भइल होखे।भले ओह राजा के अउरो रानी होखसु, बाकिर ऊ महिषी ना कहा सकसु।एही से त अमरसिह कहताड़ें—"कृताभिषेका महिषी भोगिन्योऽन्याः नृपस्त्रियः"।माने; जेकर अभिषेक कइल गइल होखे, ऊ महिषी आ अउर राजा के सभ पत्नी भोगिनी कहाली।

'रघुवंश' महाकाव्य में कालिदास गोसेवा-प्रकरण में महाराज दिलीप के पत्नी सुदक्षिणा खातिर महिषी के प्रयोग करत कहताड़ें—

"इत्थं व्रतं धारयतः प्रजार्थं समं महिष्या महनीयकीर्तेः।
सप्त व्यतीयुः त्रिगुणानि तस्य दिनानि दीनोद्धरणोचितस्य"॥(2.25)

अर्थात्; महर्षि वसिष्ठ के निर्देश पर उनुके आश्रम में रहत आ अपना पटरानी सुदक्षिणा के साथ पुत्रप्राप्ति हेतु गुरुजी के गाय नन्दिनी के सेवा करत महान यशस्वी आ दीन-हीन के उद्धारक राजा दिलीप के एकइस दिन बीतल।

एहिजा 'समं महिष्या' के प्रयोग भँइस के साथ ना, पटरानी के साथ खातिर प्रयोग कइल गइल बा।

'त्रिकांडशेष' कोश के रचयिता पुरुषोत्तम देवो महिष के 'सिहादिवर्ग' में रखले बाड़ें आ महिषी के 'नानार्थवर्ग' में रखत कहताड़ें— "महिषी राजपत्न्यपि" (षान्त.440)।मतलब कि राजपत्नी भी।एहिजा आकांक्षा उपस्थित होतिया।बाकिर; उत्तर नइखे लउकत।एक त ऊ राजपत्नी कहिके अमरसिह लेखा 'कृताभिषेका' ना कहलें, भँइसियो के उल्लेख ना कइलें।तबो; बुझाता जे ऊ कहताड़ें जे एह शब्द के अर्थ भँइस आ राजपत्नियो होला।

भँइस के पर्याय संस्कृत में ई आइल बा— महिषी, सैरिभी, मन्दगमना, महाक्षीरा, पयस्विनी, लुलापकान्ता, कलुषा आ तुरंगद्विषिणी।

एह समानार्थियन में पहिले महिषी प विचार कइल जाउ।ई सम्मान आ पूजा कइल अर्थ में प्रयुक्त 'मह्' धातु आ 'टिषिच्'+ 'ङीप्' प्रत्यय के योग से बनल बा।एसे बुझाता जे महिष आ महिषी सम्माननीय हवें।अइसना में पटरानी वाला

अर्थ त सम्मान के सूचक बड़ले बा, बाकिर भँइसिया कहाँ से सम्माननीय हो गइलि! अगर गाइ-भँइस एह सहचर शब्दन में देखल जाउ त हमनी किहाँ गाइ पुजइबो करेले, ऊ सर्वदेवमय मनइबो करेले, गऊ माता कहइबो करेले, बाकिर भँइसि कहाँ पुजाले, सर्वदेवमय कहाँ मनाले आ के भँइस माता कहेला! तबो; महिष बा त महिषी होई नू! एह बात प हमरा बुझाता जे राजा खातिर त महिष प्रयुक्त ना भइल, बाकिर उनुकर मुख्य रानी खातिर ई आइल।अइसनो हो सकेला जे कवनो महारानी पूरा मोट-झोट होइहें, राजा रिगावे खातिर सबके सामने भी ई कहतो होखसु।बाकिर; राजपद के समय दम्पती के अभिषेक भइला से ई सम्मानार्थक मान लियाइल होई।शब्दशास्त्री लोग त शब्द-निर्माता के साथे शब्द-व्याख्यातो त होलें!

अब सैरिभ से सैरिभी बनल बा।'त्रिकांडशेष' के अनुसार सैरिभ स्वर्ग के पर्याय ह।बाकिर; भँइसा आ स्वर्ग में का मेल? त; विद्वानन के पासे हर रोग के दवा रहेले नू! एसे व्युत्पत्तिवादी लोग पशु के अर्थ में "सीरे लांगलवहने इभ इव" लिहलें।एकर मतलब ई बुझाता जे जेकर हर नियन सींघ होखे।भँइसियो के सींघ ओसही होला, एसे ऊ सैरिभी कहाइलि।

भँइस के देह भारी होला, एसे ओकर एगो नाम मन्दगमना ह।माने; धीरे-धीरे चलेवाली। महाक्षीरा आ पयस्विनी एसे जे ई गाइ से अधिका दूध देले।एकर दुधओ गाढ़ होला।एकरा दूध के बारे में कहल गइल बा—

"माहिषं मधुरं गव्यात् स्निग्धं शुक्रकरं गुरु।

निद्राकरम् अभिष्यन्दि क्षुधाधिक्यकरं हिमम्"॥

अर्थात्; भँइस के दूध मधुर, गाइ से अधिक चिक्कन, वीर्यवर्धक, भारी, नीन लगावेवाला, रेचक, भूख बढ़ावेवाल आ ठंढा होला।

एही तरे एकर दही, घीव आ मक्खनो के विशेषता बतावल गइल बिया।

अब अगिला शब्द बा— लुलापकान्ता।लुलाप भा लुलाय; एह दूनो के प्रयोग भँइसा खातिर आइल बा।अमरसिह लुलापे लिखले बाड़ें।बाकिर; टीका में लुलायो आइल बा।कान्ता के मतलब प्रिया—'काम्यते असौ'।माने; जेकर चाह होखे।पुरुष के आकर्षण स्त्री प आ स्त्री के आकर्षण पुरुष प; ई प्राकृतिक गुण ह।यद्यपि मानव में जवन वैधानिक आ वैवाहिक स्वीकार्यता होले, ऊ अन्य जीवन में ना रहे, तथापि जवानी में कामात्मक प्रवृत्ति त पशुअनो में रहबे नू करेले! एही से महिषी खातिर महिष कान्त ह त महिष खातिर महिषी कान्ता।

कलुष के अनेक अर्थ बा, जवना में पाप के अलावे भँइसो बा।भँइसा के लेके व्युत्पत्ति में कहल गइल बा— 'कस्य जलस्य लुषः हिसकः, आविल-कारकः'।(क + लुष् + क (अ) प्रत्यय)। वस्तुतः भँइस-भँइसा के पानी से बड़ा लगाव ह।एसे नदी-तालाब आदि में घूसिके पूरा मथि के गन्दा क देलें।एही से जलहिसक मानत ई नाम परल।कलुष के स्त्री भइला से भँइसिया कलुषा कहाइलि।

अब बचल तुरंगद्विषिणी।त; एह शब्दे से अर्थ स्पष्ट बा जे घोड़ा जाति से एकरा स्वाभाविक वैर ह।

भँइस के एह विवेचन से स्पष्ट बा जे एकर अनेक नाम अनेक गुणवत्ता बतावही खातिर बाड़ें।बाकिर; गाइ के धार्मिक महत्त्व भले अधिक बा, तबो मानव-जीवन खातिर ई कम उपयोगी नइखे।एकरा दूध के बारे चरकसंहितो में आइल बा—

"महिषीणां गुरुतरं गव्यात् शीततरं पयः।

स्नेहानूनमनिद्राय हितम् अत्यग्नये च तत्"॥(सूत्रस्थान, 27)

एकर दही के बारे में कतना हृद्य प्रयोग बा, देखल जाउ—

"माहिषं च शरच्चन्द्र-चन्द्रिका- धवलं दधि"॥86॥

माने; भँइस के सजाव दही शरद ऋतु के चन्द्रमा के चन्द्रिका नियन देखनउक होला।

गोमूत्र के औषधीय गुण त विख्यात बड़ले बा, बाकिर एकरो मूत्र के औषधीय गुण बतावल बा।

भँइसा

भँइस-भँइसा ना त कवनो अनजान शब्दे ह आ ना अनजान पशुए।भँइस के पुंलिग भँइसा त भँइसा के स्त्रीलिंग भँइस।हँ; लक्षणा में कवनो मोटक्कड़ आदिमियो के देखिके ई नामो दिया जाला।मोटाके भँइसा भइल बा।बाकिर; ई लक्षणा के बात हिय।अभिधा में ई मात्र एगो जानवर ह, जवन गोजाति के ह आ लगभग साँढ़े नियन सींघ, नाक, मुँह, खुर आदि से युक्त होला।हँ; साँढ़ अस ककुद (डील) ना होखे।बाकिर; बैल-अस त होइबे नू करेला! एकरो बैल नियन हर जोते में, गाड़ी खींचे में कहीं-कहीं उपयोग होला।ना त साँढ़ लेखा अन्हेरिये घूमेला। चरत खात रहेला।

'दुर्गासप्तशती' के दुसरका आख्यान महिषासुर से सम्बन्धित बा।ऊ महिष महावीर आ महायोद्धा रहल।ऊ शक्तिशाली देवतनो के हराके राजा बनल रहे।ऊ मानवे रहे, बाकिर भँइसो के रूप ध लेत रहे।ऊ दुर्गाजी से जब लड़े लागल त कबो असुर रूप में, कबो महिष रूप में, कबो सिह रूप में त कबो हाथियो के रूप में।बड़ बहादुर के साथे महामायाबियो रहल।शायद; पशुरूप में भँइसा, हाथी आ सिह अधिके बलवान मानल जालें, एसे ऊ ई रूप धरे।तबो; ओकर मुख्य व्यवहार भँइसे लेखा रहल, एही से महिषासुर कहाइल।

जब ऊ माहिष रूप में आइल त देवीसेना में तबाही मचा देलस।कबो ढाही मारे त कबो दउरकिया मचाके रँउदे लागे।कबो जोर-जोर से क्रोधे हूँफे-डाँफे त कबो धसोर देबे।कबो पैर पटकिके भूचाल लिया दे त कबो वेग में दउरकिया मचा दे।

कहेके मतलब ई जे महिषासुर के चरित्र में महिष के युद्धकौशल स्पष्टतः वर्णित बा।

एकर पर्याय बाड़ें— महिष, लुलाप, लुलाय, यमवाहन, वाहद्विषा, कासर, सैरिभ, विषज्वरा, रजस्वल, आनूप, रक्ताक्ष, अश्वारि, घोटकारि, पीनस्क, रक्तकाय, क्रोधी, कलुष, मत्त, विषाणी, गवली आ बली।

अब एही समानार्थक शब्दन के माध्यम से एकर परिचय जानल जाउ।समानार्थियन में पहिला बा महिष।एह शब्द के निर्वचन में कहल गइल बा— 'महति पूजयति देवान् अनेन इति'।एकर मतलब ई भइल जे एकरा से लोग देवतन के पूजा करेलें।ई 'मह' धातु आ 'टिषच्' (इष) प्रत्यय के योग से बनल बा।

अब प्रश्न खड़ा होता जे भँइसा से केहू देवतन के पूजा कइसे करी? त; हमनी किहाँ पूजा में बलि-विधानो बा।बलि 'बल—प्राणने' धातु से बनल बुझाता।अइसे 'शब्दकल्पद्रुम' 'बल--दाने' अर्थ बतवले बा—'बल्यते दीयते इति'।तब त बलिदान में चर्वित-चर्वण हो जाई।एसे पहिलके मानिके हम कहतानी जे बलि से देवता लोगो के बल मिलेला।

खैर; सनातनी संस्कृति में देवाराधन में तीन तरह के बलि के विधान बा।ई तीनो हमनी के सात्त्विक, राजस आ तामस प्रवृत्तियने से जुड़ल बा।सात्त्विकी पूजा में सात्त्विक नैवेद्य फल, मिठाई आदि, राजसी पूजा में षड्रस भोजन के साथ मांसो आ तामसी में मांस, शराब।वास्तव में जेकरा जइसन रुचेला, ऊ अपना आराध्यो के ओइसने रुचिवाला मानिके अर्पण करेला।खास कके शाक्त साधना में पशु आदि के तान्त्रिक बलिविधान बा।एही में कतने पशु, पक्षी आ मछरियन के बलिफलो बतावल बा।एगो श्लोक देखल जाउ।एकरा में निर्देश कइल गइल बा जे बकरा, भँइसा, भेंड़ के बध कके ओकरा मांस आ रक्त से दुर्गाजी के प्रसन्न करीं—

"अजानां महिषांणां च मेषाणां च तथा वधात्।

प्रीणयेत् विधिवत् दुर्गां मांस-शोणित-तर्पणैः" ॥

अब देखल जाउ जे कहल गइल बा कि भँइसा के बलि से सइ बरिस आ बकरा से दस बरिस खातिर भगवती के तृप्ति होले— "महिषेण वर्षशतं दशवर्षं च छागलात्"।जब सइ साल खातिर फल कीने के होई त भँइसा चढ़ावे के परी नू! एही लेके महिष के व्युत्पत्ति बतावल गइल—'महति पूजयति देवान् अनेन इति'।

अब आईं लुलाप प।वामन शिव आप्टे के अनुसार ई शब्द 'लुल्' धातु + 'क' (अ) प्रत्यय + 'आप्' धातु+ 'अण्' (अ) प्रत्यय के योग से बनल बा।'अमरकोश' के 'रामाश्रमी' टीका में कहल गइल बा—'लुलेति।लुडति पंके।लुड संश्लेषे ... इति कः।डलयोरेकत्वम्।आप्नोति।आप्लृ
व्याप्तौ।अच्...।लुलश्चासौरापश्च।यद्वा लुड्यन्ते।लुड
विलोडने।...।लुला विलोडिता आपः येन'। पुनः 'शब्दकल्पद्रुम' के अनुसार— 'लुल्यते इति'।लुल—विमर्दने + भिदादित्वात् अङ्।लुलाम् आप्नोति।आप् + अण्'।

वास्तव में आचार्यन के प्रत्ययन के भिन्नता के बावजूद 'लुल' आ 'आप्' एह दू धातुअन के योग से ई शब्द बनल बा।'लुल्' धातुओ के अनेक अर्थ बा।तबो; एह नाम के सार्थकता इहे बिया जे ई पानी में घूसिके हँउड़ि देला आ पाँकी क देला।जब 'आप्' धातु के बदले 'इङ्' गतौ धातु के प्रयोग होला त लुलाय बनेला, जेकर अर्थ हँउड़ल पानी से निकलकि लेवरक लगवले जाला भा चलेला।

अब आइल जाउ यमवाहन।त; एकर मतलब हटे जे यम के वहन करे।एमें बहुव्रीहि समास बा।यम कहीं, यमराज कहीं, पितृपति कहीं भा काल, कृतान्त कहीं; ई सभ एके के पर्याय हवें। यम मृत्यु के देवता हवें आ मृत्यु सबसे बड़ भय हिय।एसे मृत्युदेवो के रूप भयंकरे बतावल गइल बा।ई दक्षिण दिशा के स्वामी हवें, इनिकर हथियार डंटा ह आ सवारी भँइसा।शायद; भँइसा एसे जे शाकाहारी पशुअन में ई देखहूँ में भयावन लागेला आ आँखि लाल कइले जेपर टूट परेला, ओकर काम तमाम क देला भा भागे-संयोगे बचियो गइलें त जिनगी भर ओकर मार ना भुलइहें।शायद; करिया लम्बा-चौड़ा यमराज के करिया भँइसा प बइठाके दूनो के भयंकरता के एकजुट कइल गइल बा।खैर; यमदेवो महिषवाहन के साथे-साथ महिषध्वज कहइलें।

घोड़ा के सबसे बढ़िया सवारी मानल गइल बा, एसे ओकरा के वाह आ वाहश्रेष्ठो कहल गइल बा।बाकिर; भँइसा ओकरा के आपन पकिया शत्रु मानेला।एही से द्वेष रखेला।वाह से स्वाभाविक द्वेष रखला से ई वाहद्विषा कहाइल।पता ना; विधाता के कइसन लीला बिया ई! सूर्य यमदेव के पिता हवें आ उनुका रथ में सातगो घोड़ा नधाइल बतावल बाड़ें।मतलब कि पिता के वाहन अश्व हवें।एने पुत्र के वाहन महिष।पिता-पुत्र में पटेला कि ना, ई एहिजा विषय नइखे।विषय ई बा जे दूनो के वाहनन में ना पटे।पुनः इहो स्पष्ट नइखे जे घोड़वा भँइसवा के कतना शत्रु मानेला! हँ; ई सहजे बुझाता जे भँइसवे दुसुमन मानेला।एही से वाहद्विषा के अलावहू हयारि, घोटकारि कहाइल।का जाने; ई हो सकेला जे महिष अपना के वाहश्रेष्ठे मानत होखे, बाकिर ई

उपाधि अश्व ले लिहलस।एही से ई शत्रुता पाल लिहलस।

अब आइल जाउ, कासर प।त; कासर यौगिक ह।एमें दूगो शब्द मिलल बाड़ें- 'क' आ 'आसर'।'क' के 'एकाक्षरीकोश' में कतने अर्थ बाड़ें, जवना में एगो जलो बा।आसर में 'आ' उपसर्ग आ 'सृ—गतौ' धातु बा।एकरा बाद 'अच्' (अ) प्रत्यय लागल बा।मतलब ई कि जे जल में जाके स्थिराह होखे भा जेकरा जल में रहे से हमेशा लगाव होखे।

सैरिभ के अर्थ "सीरे लांगलवहने इभ इव"।मतलब ई बुझाता कि जेकर हर नियन सींघ होखे। पता ना; एकर नाम विषज्वर कइसे परल।निर्वचन में त कहल बा— 'विष इव प्राणघातको ज्वर यस्य'।मतलब ई जे एकरा बोखार हो जाउ त जाने ले लेबेला।रजस्वल से बुझाता जे ई रजोगुणी ह।शायद; भँइसा दलदली वन, जलीय प्रदेश भा कीचड़ में रहल पसन्द करेला, एसे एकर एगो नाम अनूप आ आनूप ह।करिया रंग के भइला से कलुष आ कृष्णकाय कहाइल त लाल-लाल आँखि के कारण रक्ताक्ष कहाइल।

सामान्यतः आँखि लाल तब होले, जब क्रोध बढ़ेला।अगर केहू हमेशा लाल कइले होख त मतलब इहे जे ऊ क्रोधे मातल रहेला।अइसे त कबूतरो के रक्ताक्ष कहल जाला। बाकिर; ऊ बड़ा कमजोर जीव ह।ऊ केकरा प गभुआई! ओकर जान के गाहक त कतने लोग होलें।तबो; यदि ओकर नेत्र रक्त होलें त प्रकृति के देन ह।एही तरे ई संज्ञा चकोर आ सारसो के दिहल बिया। नेत्र सामान्य से विशेष के ओर जाके लाल होखे, तबे क्रोध के प्रवेश से उत्पन्न विकार मनाई। यदि भँइसा रक्ताक्ष ह त एहिजा ओकर क्रोधी भइल आ बली भइलो काम करताड़ें।क्रोध आ बल से केहू के जातीय गुण ना मानल जा सके।तब; महिष के क्रोधी आ बली पर्याय कइसे अइलें? मतलब इहे जे ई एकर जातीय गुण हवें, विशेषण से बढ़िके।शायद; बले आ क्रोधे मातल रहेला, एसे मत्तो कहाइल।छाती चाकर रहला से पीनस्क, सींघे मुख्य हथियार होखला से विषाणी आ गवल कहाइल।

प्रकृतिदेवी प्रत्येक जीव के कुछ-ना-कुछ विशिष्ट रूप आ गुण देले बाड़ी।ओही से तुलनात्मक अध्ययनो होला।भँइसो के एगो स्वभाव बा।बैल-साँढ़ लेखा होइयो के, ओइसन नइखे हो सकत। लोग जंगली से घरेलू बनावल।बाकिर; सुबहित उपयोग ना क पावल।तबो; एकर एगो उपयोगिता त लउकते बा जे एकरा बिना भँइस बच्चा ना दे पाई, दूध ना दे पाई।

◆◆◆

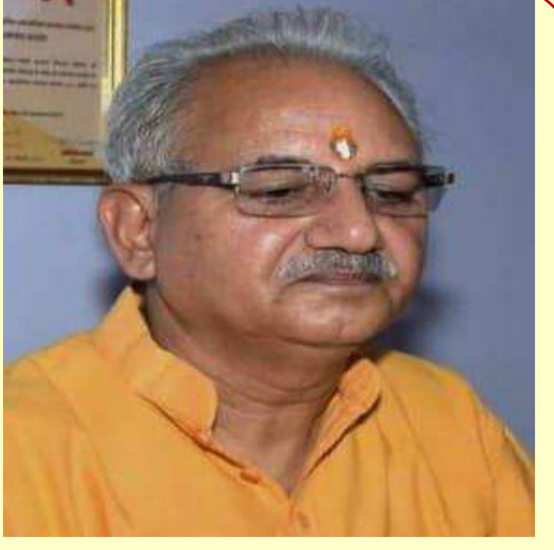

मार्कण्डेय शारदेय, पटना

बात दिल के

बात दिल के छुपा दीहीं कइसे?
राज सगरी बता दीहीं कइसे?

उनका सोझा त हम नाहीं जाइब,
शर्म के गाछ गिरा दीहीं कइसे?

प्रीत के रीत में अब दिल लागल,
आँख अचके, झुका दीहीं कइसे?

दाग लागल बा एह चुनरिया में,
हाथ से मलके छुड़ा दीहीं कइसे?

बोझ दुनिया के सर पे बा "अंशु",
खुद का सर से हटा दीहीं कइसे?

◆ ◆ ◆

बेवजह बात

बेवजह बात कइला से का फायदा?
हाथ अचके त धइला से का फायदा?

साथ बा गर निभावे क सपना कहीं,
सामने से लुकइला से का फायदा?

लोग अपने जमाना के समझी मरम
साथ सभका सनइला से का फायदा?

बा जमाना में आपन नया रुत कहीं,
छोड़ जंगल में गइला से का फायदा?

अब जिये के करामात हम का सिखीं?
सब लुटा के धधइला से का फायदा?

अश्क़ से "अंशु आपन दरद मत लिखऽ,
सब अनेरे बतइला से का फायदा?

◆ ◆ ◆

मन के बतिया

जंग दिन भर भइल बाटे,बाहर -भीतर।
मनवा कतना मइल बाटे, बाहर- भीतर॥

मन के बतिया कबो केहू पढ़ ना सकी।
हूक हियरा के कागज पे गढ़ ना सकी॥
दर्द जागी भीतरिया त हलचल होई,
झूठा वादा कइल बाटे, बाहर-भीतर॥

अश्क़ भीतरी से बाहर ना असहीं बहे।
नाम लेके विधाता के सब कुछ सहे॥
जोग,जप,तप बिना भाग्य पनपी कहाँ,
बतिया लिख के धइल बाटे,बाहर-भीतर॥

हम ई देखनी कि सपना त सपने होला।
दर्द जिनगी में होला त अपने होला।
लोर अँखियन से ढरकी के अतने कहे,
"अंशु" खातिर फइल बाटे, बाहर-भीतर।

◆ ◆ ◆

अनिल कुमार दूबे "अंशु"
सिवान(बिहार)

लोकगीतन में युग-बोध

'लोकगीतन में युग-बोध' शीर्षक विषय पर चर्चा करे के पहिले 'लोक' शब्द के ठीक-ठीक समझल जरूरी बा।

'लोक' शब्द कवनों नया शब्द ना ह। बाकिर समय के साथ एकरा अर्थ में परिवर्तन अवश्य भइल बा। आज के दौर में 'लोक' शब्द के अर्थ आमतौर पर नगर के विपर्यय के अर्थ में लेहल जाला। बाकिर आचार्य अभिनवगुप्त के अनुसार - "लोकोपाद जनपद वासी जन।" कहे के अर्थ ई कि जनपद में रहे वाला प्रत्येक जन ही 'लोक' ह। आचार्य अभिनवगुप्त के एह परिभाषा से ई बात बिलकुल स्पष्ट बा कि 'लोक' कहला से संपूर्ण समाज (नगर आ ग्राम्य दुनु) के ही बोध होला, ओकरा कवनों एक ईकाई चाहे एक क्षेत्र के ना। इहे कारण रहे जवना के चलते श्री जयप्रकाश नारायण के 'लोकनायक' कहल गइल। काहेकि श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा देश में आपातकाल लगवला के कारण देश में जवन परिस्थिति उत्पन्न हो गइल रहे, ओह परिस्थिति से छुटकारा पावे खातिर सब लोगन के एकजुट होके ओह आपातकाल से मुक्ति पावे खातिर एगो आन्दोलन करे के आवश्यकता महसूस कइल गइल। बाकिर ई काम आसान ना रहे। काहेकि ओह आन्दोलन के नेतृत्व करे खातिर एगो अइसन चेहरा के जरूरत रहे, जे सर्वमान्य होखे, यानी जेकर बात सभे मानें। एह से देश के एगो लोकनायक के जरूरत रहे, जे जन-जन के नेतृत्व कर सके। ई प्रतिभा ओह समय एके व्यक्ति में रहे आ ऊ रहलें आदरणीय श्री जयप्रकाश नारायण। एही से उनका के 'लोकनायक' जइसन सम्मानपूर्ण शब्द से विभूषित कइल गइल।

लोगन के नजरिया में परिवर्तन अइला के साथ ही एह 'लोक' शब्द के अर्थ में भी परिवर्तन आ संकुचन आ गइल बा। आज एह 'लोक' शब्द के अर्थ ग्रामीण जनजीवन तक ही सीमित कर देहल गइल बा। हालाँकि पहिले 'लोक' शब्द कहला से संपूर्ण समाज (नगर आ ग्राम्य) ही सम्बोधित होत रहे।

मानल ई जाला कि 'लोक' ऊ ह जे जीवन के अनगढ़ के भी बहुत ही सहज ढंग से स्वीकार करेला आ ओकरा के जियेला। एह अनगढ़पन में समाज के सामूहिक अनुभव आ विवेक होला, जे अपना स्वीकृति खातिर कवनों शास्त्र के बजाय जीवन के कर्मरत अनुभव आ परिस्थिति परक राग-अनुराग से उत्पन्न विवेक पर निर्भर करेला।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीजी के विचार भी 'लोक' शब्द के सम्बन्ध में आचार्य अभिनवगुप्त के एह विचार से बहुत अलग नइखे। हालाँकि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 'लोक' शब्द के अर्थ अपना एगो आर्टिकल में थोड़ा विस्तार से बतवले बाड़न। उनकर कहनाम बा कि 'लोक' शब्द के अर्थ जनपद ना बल्कि गाँव आ नगर में फइलल ऊ समूचा जनता ह, जेकर व्यवहारिक ज्ञान के आधार पोथी ना ह, बल्कि ई लोग त नगर में परिष्कृत रुचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाये वाला लोगन के अपेक्षा अधिक सरल, अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होला। बाकिर परिष्कृत रुचि वाला लोगन के समुचा विलासिता आ सुकुमारता के जीवित रखे खातिर जवन भी वस्तु जरूरी होला, ओकरा के उत्पन्न करेला। (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जनपद-1, अंक-1, पृष्ठ- 65) कहे के अर्थ ई बा कि इहे समाज अपना जीवन के अनुभव के अपना विवेक के आधार पर विविध कलात्मक रूपन में अभिव्यक्ति देला। एही कलात्मक अभिव्यक्ति के लोक साहित्य चाहे ओकरा कला के द्वारा पहचान कइल जाला।

'लोक' शब्द के कुछ लोग अंग्रेजी शब्द 'फोक' के पर्यायवाची के रूप में समझेला। बाकिर 'लोक' 'फोक' ना ह। ई फोक से भिन्न ह। काहेकि फोक के संबंध भुलाइल- बिसरल चीज, परम्परा, रीति-रिवाज, कथा, गीत के संकलन-संग्रह आ इयाद से रहेला। जबकि अपना भारतीय परम्परा में 'लोक' सदा विकास के प्रक्रिया में रहे वाला मानवीय तत्त्व ह। एह से लोकवार्ता, लोकसाहित्य, लोकसंगीत, लोक कला इत्यादि शब्द पश्चिमी सभ्यता के फोकलोर के अवधारणा से भले ही जुड़ल होखे, बाकिर 'लोक' शब्द के भारतीय अवधारणा में ठीक ओही संदर्भ में एकर व्याख्या कइल कठिन होई। काहेकि फोकलोर में पुराकथा, आख्यान, लोककथा, मौखिक परम्परा से लोककंठ में जीवित, अलिखित लोकगीत, कहावत, पहेली, लोक विश्वास, लोकरीति, लोकाचार, लोककर्मकाण्ड, जादू-टोना सब कुछ समाहित बा। एतने भर ना, उन्नीसवीं शताब्दी में पूँजीवाद के विकास के साथ ही साइंस के एगो मुख्य मिथक के रूप में स्वीकार कइल गइल। कहे के अर्थ ई कि फोकलोर में ओह समग्र ज्ञान के कहे के चेष्टा कइल गइल बा, जे साइंटिफिक नॉलेज से अलग बा।

संस्कृत वाङ्मय में 'लोक' शब्द बर्बर, असभ्य, अविकसित, अवैज्ञानिक, समुदाय चाहे वर्ग ना ह। ई त सर्वोच्च मौखिक परम्परा आ अलिखित परम्परा ह। बाकिर जवना के सर्वथा दिव्य, दोषरहित, पूर्ण आ शाश्वत मानल गइल बा। ऊ वैदिक परम्परा ह। एह से फोकलोर के जे व्याख्या कइल गइल बा, ऊ भारतीय संदर्भ में 'लोक' के अर्थ में अर्थहीन हो गइल बा। जहवाँ सामंती विकास के अंतिम दौर में भी सर्वशुद्ध, दोषरहित,

शाश्वत आ परिष्कृत परम्परा के प्रतिनिधित्व मौखिक परम्परा ही करेला। एकरा साथ ही कृषक वर्ग के पूरा संस्कृति के बर्बरता, असभ्यता, अविकसित चाहे पिछड़ापन के दृष्टि से कतई ना देखल जा सकेला। साथ ही एकरा विपरीत लोक आ शास्त्र में एक सतत् संवाद आ आदान-प्रदान के सम्बन्ध बा। एतने भर ना जवन भी चीज लोक में बा उहे कभी आश्चर्यजनक रूप से शास्त्र बनत भी हमनी के लउकेला। उहईं दोसरा ओर ठीक एकर विपरीत परिस्थिति रहेला। आज जवना के शुद्ध शास्त्रीय रूप हमनी के लउकता, ऊ कालान्तर में शास्त्रीय ना रहके लोक में ही जीवित लउके लागी।

जब हम लोक आ शास्त्र के गहराई से छानबीन करेनी त पावेनी कि लोक आ शास्त्र के मध्य विग्रह चाहे विरोध के भाव कम ही दिखेला जबकि संवाद आ विनिमय के संबंध ही अधिक दिखेला। एही से जब कवनों शास्त्रीय आ अभिजात संस्कृति मलिन होखे लागेला, चाहे मुरझाये लागेला तब लोक से ही ओकरा जीवन-रस मिलेला। एह बात से ई बिलकुल स्पष्ट हो जा रहल बा कि लोक-संस्कृति आ नागरिक सभ्यता के परम्परा में क्रिया-प्रतिक्रिया सतत् होत रहेला। एही क्रिया-प्रतिक्रिया से दुनु संस्कृति के निर्माण भी भइल बा।

लोक साहित्य, शिष्ट साहित्य से अलग सामूहिक विवेकशील जीवन-पद्धति के प्रतिबिम्ब होला। ई सरल, सहज आ भौतिकवादी भइला के साथ ही आपन जीवन्त परम्परा के दैनिक जीवन के संघर्ष से जोड़त रहेला। लोक साहित्य के एगो अउर विशेषता इहो ह कि एमे व्यक्ति के बदले सामूहिक अनुभव आ संघर्ष से उत्पन्न रागात्मकता महत्त्वपूर्ण होला। एही से लोक साहित्य के 'अपौरुषेय वाङ्मय' कहल जाला। काहेकि मानल ई जाला कि लोक साहित्य के हर रचना के कवनों व्यक्ति विशेष के नाम से चिह्नित ना कइल जाला। काहेकि एकरा के सामूहिक अभिव्यक्ति के रूप मानल जाला। एह से लोकाभिव्यक्ति में लोक के ही सामूहिक प्रयत्न होला। हालाँकि लोकगीत आकाश में से टपके ना बल्कि ऊ केहू ना केहू के रचना ही होला। बाकिर कवनों व्यक्ति विशेष के नाम से रचल ऊ रचना ओह व्यक्ति तक ही सीमित ना रहे। काहेकि अनुभूति के, अभिव्यक्ति के संदर्भ में ऊ रचना ओह समूह के दोसर-दोसर लोगन के भावोद्गार से भी जुड़त चलत जाला। एही से एकेगो गीत अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग रूप में मिलेल। एह तरह से विविध रूपन में लोक-साहित्य बनत-सवँरत रहेला।

लोक-साहित्य में एगो सबसे बड़हन विशेषता ई पावल जाला कि ई अपना आरम्भ से ही वाचिक परम्परा के द्वारा जन-जन तक पहुँचेला। काहेकि एकरा में सबसे महत्त्वपूर्ण बा 'लोक'। एही से लोकमत, लोकमन, लोकसंस्कार, लोकरीति, लोकजीवन जइसन लोक से संबंधित हर पहलू लोक-साहित्य में सहज ढंग से संवाद करे लागेला। वाचिक रूप से जे लोक रचना कहल जाला। ऊ कवनों दोसरा लोक से उधार त लेहल ना जाला बल्कि मूल रूप से कवनों एके व्यक्ति के रचना होला। बाकिर ओकरा में समय-समय पर दोसरा लोगन द्वारा भी जोड़ल-घटावल जाला। एकर नतीजा ई होला कि ऊ रचना कवनों एक व्यक्ति के ना होके सबकर हो जाला।

लोक-साहित्य के मजबूत मौखिक परम्परा बा। जवना में कवनो रचना एक दूसरा के मुँह से सुनत-गुनत आगे बढ़त लम्बा फ़ासला तय करेला, जवना के चलते ओकर स्वरूप भी बदलत रहेला। ओह रचना के केहू गढ़ेला-माँजेला, त केहू ओह गढ़ल रचना के तुक से तुक मिलाके कुछ जोड़ देला। एतने भर ना ओह रचना के केहू काट-छाँट के सवाँर भी देला। एह तरह से आखिर में ई रचना आपन जातीय समूह के अनुभव अपना में रचा-पचा के ओह संस्कृति के लोक-साहित्य बन जाला। फेर एगो अइसन मधुर रस तैयार हो जाला, जेकरा के सभे आपन कहेला।

भारत एक कृषि प्रधान देश ह। किसानी में शारीरिक श्रम अधिक लागेला। एह से दिनभर के अपना काम से थाकल, हारल शरीर आ मन के सामूहिक आनन्द चाहीं। जवना के परिणति लोकनृत्य, लोकगीत आदि में होला। एही से सोहनी, रोपनी, जंतसार, पूर्वी, चैता, कजरी, सोहर, झूमर आज भी लोकगीतन में, लोक- संस्कृति में सुरक्षित बा।

लोकगीत साधारणतया आम जनता के लोकप्रिय गीत होला। एह गीतन के भाषा जन साधारण के बोलचाल के ही भाषा होला। जवना के नतीजा ई होला कि ई अपना में घर-घर के भाव लेहले रहेला। लोकगीत मानव-जीवन के अनुभूत अभिव्यक्ति आ हृदयोदगार ह। ई जीवन के साफ़- स्वच्छ दर्पण भी ह। जवना में ओह समाज में व्यक्त जीवन के प्रतिबिम्ब भी दिखाई देला। लोकगीत मनुष्य के स्वाभाविक, भावनात्मक स्पंदन से जेतना जुड़ल रहेला, ओतना ऊ वाणी के कवनों रूप से भी ना जुड़ल रहे। लोकगीत ही लोकजीवन के वास्तविक भावना के प्रस्तुतकर्ता भी ह।

लोक साहित्य में लोकगीतन के ही उल्लेख सबसे पहिले भइल। गीत भावुक, संवेदनशील मानव के हृदय के स्वाभाविक उद्गार के रूप में प्रकट भइल। कवनों देश के लोकगीत ओह देश के जनता के उद्गार होला। साँच पूछी त ऊ ओह देश के लोगन के भावना के सच्चा प्रतीक भी होला। एही से जब कवनों सभ्यता के अध्ययन करे के होखे त सबसे पहिले ओह सभ्यता के लोक गीतन के ही अध्ययन करे के चाहीं। काहेकि लोक गीतन से ही ओह सभ्यता के बारे में बहुत कुछ जाने-समझे के मिल जाई। एही से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपना 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखतारे- "भारतीय जनता का सामान्य स्वरूप पहचानने के लिए पुराने परिचित ग्राम गीतों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। केवल पंडितों द्वारा प्रवर्तित काव्य परम्परा का अनुशीलन ही अलभ्य नहीं है। जब-जब शिष्टों का काव्य पंडित बन्धकर निश्चेष्ट और संकुचित होता तब-तब उसे सजीव और चेतन प्रसार देश की सामान्य जनता के बीच स्वच्छंद बहती हुई प्राकृतिक भावधारा से तत्त्व ग्रहण करने से ही प्राप्त होगा।" डाॅ. विश्वनाथ के शब्दन में- "लोकगीतों में जन-जीवन की सच्ची झाँकी है। ग्राहस्थ का निर्मल दर्पण है। भारतीय संस्कृति की सुनहरी श्रृंखला है। काव्य का सरल, सहज सौंदर्य है। भाषा का बहता नीर है। समाज और लोकाचार का सजीव इतिहास है। नर-नारियों के मनोभावों और सुख-दुःख की अनुभूतियों की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक भंगिमाएँ भी तथा विज्ञान की उपयोगी सामग्री भी है। जिसका जिस पक्ष में रुचि हो उसका स्वाद ले।" (भोजपुरी लोकगीतों के विविध रूप, आजकल, मार्च 2015, पृष्ठ-8)

परम्परा के अर्थ केवल रूढ़ी ना भइल। काहेकि ओकरा में विकास के बीया रहेला। जवन जाति अधिक परम्परा प्रेमी होला, उनका लोकगीतन में ओतने अधिक अन्विति रहेला। उच्च वर्गीय शिष्ट समाज अपना रचना के लिपिबद्ध करके ओकरा के अध्ययन-अध्यापन के परम्परा द्वारा अपना समस्त अर्जित ज्ञान के सुरक्षित आ संरक्षित करे के प्रयास कइलस।

लोक-साहित्य में लोकगीत के ही सबसे सशक्त विधा मानल जाला। काहेकि लोकमन में जे रसवंती गंगा प्रवाहित होत रहेले, उहे लोकगीतन में अपना संपूर्ण आवेग, संवेग आ संवेद के संगे प्रवाहित होला। एकर एगो इहो कारण बा कि एही गीतन में लोकजीवन के समस्त रीति-रिवाज़, लोक परम्परा, धार्मिक कृत्य-विधान, मिथक, लोककथा के साथ ही युग-बोध भी सुरक्षित बा। भारतीय जनमानस में जन्म से लेके मरण तक के विविध संस्कार अपना लयपूर्ण संगीत के साथ ही लोक के सहज भावना के संगे उत्सव रूप में जुड़ल बा। जवन तीज-त्योहार से लेहले विवाह-संस्कार, बच्चन के जन्म से लेहले अंत्येष्टि तक त रहबे करेला साथ ही ओह बच्चा के जीवन के विभिन्न संस्कार में भी ई देखे के मिलेला।

लोकगीतन में युग-बोध जइसन विषय सुने में भले ही रोचक ही ना अनूठा भी लागत होखे, बाकिर एमे सचाई बा। काहेकि लोकगीत हमनी के विविध संस्कार, त्योहार, कृषि, ऋतु आदि से सम्बंधित त होखबे करेला, साथ ही ई रस से भी परिपूर्ण होला। हालाँकि नौ रसन में से वीर, श्रृंगार, करुण, हास्य, शान्त रस के ही लोकगीतन में अधिक प्रयोग होला।

कविता में गेयता होखे चाहे ना होखे, बाकिर ऊ अपना हर रूप में मानवीय अभिव्यक्ति के माध्यम आ प्रेरणा के श्रोत त रहबे करेला। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन एकर उत्कृष्ट उदाहरण रहल बा। ब्रिटिश शासन के विरोध में संघर्ष के शंखनाद फूँकत राष्ट्रीय लोकगीत जन साधारण के एह संघर्ष खातिर प्रेरित कइलस। भोजपुरी के गीत-लोकगीत एकर सशक्त उदाहरण बा।

भोजपुरी के सपूत बाबू कुँवर सिंह जइसन लोग जवना भाषा के बोलत होखे ओह भाषा में भला ब्रिटिश शासन के विरुद्ध बगावती तेवर कइसे ना आ पाइत? बाकिर ब्रिटिश सरकार भला एह बगावती तेवर के कइसे वर्दाशस्त करीत? एह से भोजपुरी के अनेक गीतन के सरकार द्वारा दमनात्मक कार्रवाई करत प्रतिबंधित कर देहल गइल।

भोजपुरी क्षेत्र के एगो प्रमुख क्रान्तिकारी रहले बाबू रघुबीर नारायण सिंह। ऊ 'बटोहिया' गीत के लिख के संपूर्ण उत्तर भारत में तहलका मचा देहलें। काहेकि एह गीत में भारत-दर्शन के साथ-साथ भारत के प्रमुख व्यक्तियन के, ओह लोगन के विचार के, देश के नदियन के, वनस्पतियन के, आ साथ ही पशु-पक्षियन के बारे में अत्यंत जीवंत वर्णन प्रस्तुत कइल गइल बा। एह गीत के पढ़के, गाके चाहे सुन के एह क्षेत्र के लोगन पर अइसन प्रभाव पड़ल कि अपना सुन्दर मातृभूमि के प्रति अपना के न्योछावर करे के उत्कंठा के भाव ओह लोगन में सहज ही जाग गइल-

"सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देशवा से,

मोर प्रान बसे हिम खोह रे बटोहिया।

एक द्वार घेरे रामा हिम-कोतवालवा से,

तीन द्वार सिधु घहरावे रे बटोहिया ।"

एही तरे एगो दोसर साहित्यकार रहलें प्राचार्य मनोरंजन प्रसाद सिह। उनकर 'फिरंगिया' नामक गीत अत्यंत लोकप्रिय भइल। एह गीत में अंगरेजन के शासन-काल में भारत के बिगड़त आर्थिक, राजनीतिक आ धार्मिक स्थिति के उल्लेख करत देश वासियन के आह्वान कइल गइल बा कि जइसे भी होखे अपना देश के रक्षार्थ अपना देश से यानी भारत से अंगरेजन के भगावहीं के पड़ी। प्राचार्य मनोरंजन प्रसाद के लिखल ई गीत प्रवासी भारतीयन के बीच बहुत लोकप्रिय हो गइल। एही से एह गीत पर बाद में ब्रिटिश शासन द्वारा प्रतिबंध लगा देहल गइल-

" सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा

आज इहे भइल मसान रे फिरंगिया

अन्न, धन, जन, बल, बुद्धि सब नास भइल

कौनों के ना रहल निसान रे फिरंगिया।"

एही कड़ी के एगो दोसर नाम रहे श्री गोपाल शास्त्री के। ऊ सारण ज़िला के संस्कृत के विद्वान रहलें आ सन् 1932 में उत्तर प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष भी चुनाइल रहलें। शास्त्री जी गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन के अगुआ भी रहलें। शास्त्री जी द्वारा रचित राष्ट्रीय लोकगीत बहुत लोकप्रिय भइल। साथ ही ओकर प्रचार भी बहुत भइल। एकर नतीजा ई भइल कि शास्त्री जी अंगरेजन के नज़र पर चढ़ गइलें। एह से उनकर संपूर्ण साहित्य के ब्रिटिश सरकार द्वारा ज़ब्त कर लेहल गइल। शास्त्री जी के राष्ट्रीय गीत के एगो बानगी देखीं-

" उठु-उठु भारतवासी अबहु त चेत करू,

सुतले में लुटलसि देश रे विदेशिया।

जननी-जनमभूमि जान से अधिक जानि,

जनमेले राम अरुं कृष्ण रे विदेशिया।"

ई कड़ी इहईं रुकल ना, बल्कि एही श्रृंखला में शाहाबाद के निवासी सरदार हरिहर सिह के नाम भी श्रद्धा से लेहल जाला। सरदार हरिहर सिह जी सन् 1969 में बिहार के मुख्यमंत्री भी बनलें। ऊ एगो उच्चकोटि के साहित्यकार भी रहलें। असहयोग आन्दोलन, नमक आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन के साथ ही हिन्द फौज के गतिविधियन के बारे में ऊ नया ढंग से तथ्यन के प्रस्तुत कर परस्पर सौहार्दपूर्ण भावना जाग्रत करे आ अंगरेजन के अपना देश से बाहर करके अपना देश के ब्रिटिश शासन से मुक्त करावे के आह्वान भी कइलें। इनकर ओह समय एगो गीत बहुत प्रसिद्ध भइल रहे-

"चलु भैया आजु सभे जन हिलिमिलि

सूतल जे भारत के भाई के जगाई जा।"

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जवन भी आन्दोलन गाँधीजी द्वारा चलावल गइल, ओह सब आन्दोलन के सफलता के पीछे गाँधीजी के व्यक्तिगत जीवन के भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहे। गाँधीजी अपना व्यक्तिगत जीवन के एगो साधक के रूप में विकसित करे खातिर सदैव तत्पर रहस। एकरा खातिर ऊ रस्किन आ टाॅलस्टाॅय के अध्ययन के साथ ही गीता के भी अध्ययन कइलें। एतने भर ना ऊ विभिन्न धर्म गुरुअन के शिक्षा से भी प्रभावित भइलें। एही जन भावना के ओह घड़ी के लोक गीतन में भी प्रदर्शित कइल गइल रहे-

"गाँधी कहै, गाँधी कहै, मन चित्त लाइके,

गंगा सरजू चाहे कूपा पर नहाई के।

लिहले अवतार एही देशवा में आई के,

चक्र के बदला में चरखा चलाई के।"

गाँधी-दर्शन में चरखा के महत्त्वपूर्ण स्थान बा। काहेकि चरखा खाली सूत कातके वस्त्र बनावे, तन ढके के ही साधन मात्र ना रहे। यूरोप में औद्योगीकरण के चलते मशीनीकरण के युग के शुरुआत हो चुकल रहे। एकर प्रभाव अपना देश पर भी पड़े लागल। एही से गाँधीजी चरखा के जरूरत महसूस कइलें। गाँधीजी सार्वजनिक रूप से चरखा के विषय उठाके एकरा के अपना चिन्तन आन्दोलन के एगो अंग घोषित क देहलें, जवना के देख के सब लोग हतप्रभ हो गइल।

गाँधीजी सूत कात के चरखा के बढ़ावा देत रहलन। एकर अर्थ ई ना भइल कि उनका आधुनिकीकरण चाहे आधुनिक यंत्रीकरण से विरोध होखे। बाकिर उनकर ई स्पष्ट विचार रहे कि कवनों हालत में आदमी के कद से मशीन के कद बड़ा ना हो सकेला। काहेकि ऊ अपना सामाजिक मूल्यन के बरकरार राखत सामाजिक व्यवस्था के अधीन व्यक्ति के वर्चस्व के अवमूल्यन

के पक्षधर ना रहलें। काहेकि गाँधीजी के कहनाम रहे कि ऊ चर्खा के रूढ़ ना बनावे के चाहत रहलें। उनकर स्पष्ट कहनाम रहे कि जनता के वर्तमान आर्थिक संकट के दूर करे खातिर अगर केहू दोसर उपाय बता देव त ऊ चरखा जलावे तक खातिर तइयार बाड़ें। गाँधीजी अमेरिका के समक्ष भी चरखा के एगो मशीन नाहिन पेश करे के चाहत रहलें। उनका अनुसार उनका चरखा से ही विचार-मंथन के प्रेरणा मिलेला।

गाँधीजी के इच्छा रहे कि सगरी व्यवस्था में पवित्रता आवे। साथ ही व्यक्ति के भागीदारी में कहीं भी उपेक्षा ना होखे। काहेकि अगर व्यक्ति के उपेक्षा होई त व्यवस्था के प्रति लोगन में अविश्वास के भाव जागी। औद्योगीकरण के समय भी गाँधीजी चरखा के ही भारत के स्वावलम्बन आ आत्मनिर्भरता के प्रतीक बनवलन। एतने भर ना गाँधीजी अपना एह चरखा के शारीरिक श्रम, स्वदेश के भावना, सहकारिता आ सर्वधर्म समभाव के भी आधार बनवलन। एही से डॉ. राजेन्द्र प्रसाद लिखले बाड़न कि जब चरखा तलाश करके बापू ओकरा के चलावल शुरू कइलें त देश में भुलाइल, बिसरल एगो चीज़ के उहाँ के फेर से प्रतिष्ठित कइनीं। ओकर सगरी इतिहास हम अपना आँखन से देखले बानीं। धीरे-धीरे चरखा लोकप्रिय हो गइल। गाँधीजी राजनीति के क्षेत्र में मानव आ मानव- मूल्यन के प्राथमिकता देके ओकरा के सर्वोपरि रखे के चाहत रहलें। गाँधीजी के राजनीति धर्म-विहीन चाहे आचरण-विहीन ना रहे। चरखा के माध्यम से ऊ राजनीतिज्ञन में भी विनम्रता, उदारता, सम्यक् दृष्टि के भाव के साथ ही समभाव के विस्तार करे के भी चाहत रहलें। कल-कारखाना के होते गाँधीजी चरखा के देश के सामने रखलें आ साथ ही एह बात के चुनौती भी देहलें कि चरखा के द्वारा हम ना केवल स्वराज लेब, वरन् एगो नया समाज के स्थापना भी करेब। स्वराज बापू के नज़र में मूल्यवान अवश्य रहे, बाकिर ऊ अंतिम आदर्श के वस्तु ना रहे।

गाँधीजी के चलते चरखा के एतना प्रचार-प्रसार हो गइल कि घरे-घरे एकरा से सूत बनाके लोग सूत के बदला वस्त्र ले जाये लागल। देखते-देखते चरखा एतना लोकप्रिय हो गइल कि चरखा के प्रशस्ति में असंख्य लोकगीतन के रचना भी होखे लागल-

1- "देसवा के लाज रहीहें चरखा से,
गाँधीजी के मान सनेसवा
पिया जनि जा हो विदेसवा।"

2- चरखा में बड़ा गुन भइया घोरवा सुन-सुन,
खेल-खेल में काम सिखावे बड़ा हुनर बड़ा गुन।"

चरखा से ही सम्बंधित खादी के कार्यक्रम गाँधीजी चलवलन। ऊ कार्यक्रम आ खादी वस्त्र एतना लोकप्रिय भइल कि संभ्रांत परिवारन में भी खादी आपन स्थान बना लेहलस। देखते ही देखते खादी पहिनल प्रतिष्ठा के विषय बन गइल। असहयोग आन्दोलन के समय भी गाँधीजी के एगो इहो माँग रहे कि कवनों तरह विदेशी वस्त्रन के आयात ना बढ़े पावे।

पद्मश्री श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी के लोकगीतन में भी जहाँ एक ओर खादी पर चुनरी छपवावे के बात कहल गइल बा, उहईं दोसरा ओर गाँधीजी के नाम बहुत श्रद्धा से लेहल गइल बा-

1- "अद्भुत मोर चुनरिया खादी में रंगवइह बलमू,
आजादी के रंग तिरंगा रंग से चुनर रंगवइबे,
राष्ट्रपिता गाँधी के सन्देसवा मध्यभाग छपवइबे,

वीर जवाहर लाल नाम मोर आँचल में लिखवइबे

चूनर पर इन्दिरा गाँधी के चरण-चिह्न छपवइबे बलमू।"

भोजपुरी लोकगीत समय के साथे कदमताल करत चलेला। एही से मुगल शासन काल के लोकगीतन में ओह समय के छाप रहे-

" रुखे पुरनूर का सेहरा मुबारक हो। मुबारक हो॥"

ब्रिटिश शासन काल में जे लोकगीत रहे ओह में ओकर छाप रहे-

"नाजुक बहियाँ न मोड़ो माई डियर! कृष्ण कन्हाई।"

अइसहीं लोकगीत युग सापेक्ष होला। जवन समय रहेला ओकर छाप ओह समय के लोकगीतन में भी देखे के मिलेला। एह तरह से हम कह सकतानीं कि लोकगीतन में युग-बोध करावे आ समय के साथे चले के अद्भुत क्षमता होला।

◆ ◆ ◆

डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद

जियरा जुड़ा गइल

अँचरा के छाँह पाके, जियरा जुड़ा गइल बा।
माई क नेह पवते, अँखिया लोरा गइल बा॥

कपरा प हाथ धइ के, हमके सँवारि दिहलू,
कजरा लगा के तनिके, नजरी उतारि दिहलू,
तोहरे दुलार हमके, राजा बना गइल बा।
माई क नेह पवते, अँखिया लोरा गइल बा॥
अँचरा........

गीतिया सुना-सुना के, दूध-भात तू खियवलू,
हमके सुतावे खातिर, अपना के तू जगवलू,
हमरे खुसी में तोहके, सब कुछ भुला गइल बा।
माई क नेह पवते, अँखिया लोरा गइल बा॥
अँचरा........

आपन परान जइसन, रखलू जोगा के हमके,
कुल दुःख बिसार दिहलू, गोदिया में पाके हमके,
भगवान माई बन के, धरती प आ गइल बा।
माई क नेह पवते, अँखिया लोरा गइल बा॥
अँचरा........

◆◆◆

शिब्बू - ग़ाज़ीपुरी

तोहार किरिये,हम लाजे ना अइनीं (किरिया-कसम-शपथ-एगो तुलना)

एगो नायक से ओकर मेहरारू पुछऽतिया सवाल-

"हमार बलमू, रात काहे ना अइलऽ?"

जवाब बहुत ही भावुकता भरल बा-

"धोती फाटल रहे, कुरता मलिन रहे,

तोहार किरिये, हम लाजे ना अइनीं!"

एह में एगो शब्द बा-"तोहार किरिये",

हमनीं के इहवे धेयान देवे के बा - ई शब्द का ह, किरिया के माने का होई? ई कब से हमनीं के लोक में आइल? का कारन रहल होई एकरा हमनीं के बीच आवे के?आउर त आउर,अगर लोक में एकर एतना चलाना बा त शिष्ट में ई कतहूँ लउकेला कि ना? अइसने कुछ सवालन के जवाब खोजे के उतजोग बा हमार। आईं सभे, एकर जवाब खोजाव-

हमरा हिसाब से जब कवनो आदमी अपना बात के सही रुप से समझावे में असमर्थ हो जाला, ओकरा बतकही पर केहू के विसवास ना रह जाव, तब ओह परिस्थिति में ऊ एगो अइसन सत्ता के सहारा लेवेला, जवन ओकर एकदम आत्मीय होखो। एकरा अलावे ऊ कवनो दिव्य सत्ता के भी अपना सोझा खड़ा कर लेवेला।हलाँकि ओह सत्ता के सामर्थ्य के ओकरा भान रहेला कि अगर हम गलत कहीं त हमार सब कुछ ओरा-बुता जाई, तहस-नहस हो जाई। ओह आदमी के एह घोषणा के बाद सामने वाला भी मान लेवेला कि ई झूठ नइखन बोलत आ तब सब तर्क एक तरफ हो जाला आ किरिया के खइलका बाजी मार ले जाला। अब ऊपरवाला गीत के पंक्ति में जब ऊ एह बात के सिद्ध करे खातिर कि साँचहूँ उनकर धोती आ कुरता मलिन रहे, ऊ

अपना मेहरारुए के सोझा राख के ई किरिया खा लेत बारें कि "तोहार किरिये -हम लाजे ना अइनीं। खूबी देखाव कि एह जगहा पर उनकरा मेहरारू के तब विसवास भी हो जाता कि ई झूठ नइखन बोलत। इहाँ उनकरा मेहरारू के ई लागऽता कि हमार मर्द, ई कबहूँ ना चहिहन कि हमार कुछ खत नागा होखो। ई तेवर आ ई शोखी बा एह "किरिया" में।

शिष्ट भी एह बात के अपना ढ़ंग से रखले बा आ आजो राखेला। एगो चर्चित हिदी सिनेमा के गीत से समझ लेब सभे-

"करवटें बदलते रहे सारी रात हम,

आप की कसम--"

माने इहवों नायक अपना दुख के, सत्यता के साबित करे खातिर कसम ही खाता आ उहो अपना सब से निकटतम आत्मीय के।

सिनेमा ही के बात होता त कव कव गो सिनेमा के नाम भी एही कसम पर रखाइल बा-

कसम हिदुस्तान की,

कसम वर्दी की

तीसरी कसम -ना जाने केतना ले बा?

तीसरी कसम त आंचलिक कथे पर फिलमावल गइल सिनेमा बा, जवन कसम से शुरु हो के कसम पर ही ओरियाता। अपना जमाना के चर्चित एह फिलिम में जब राजकपूर कवनो नौटंकी के पुतरिया से मुहब्बत ना करे के कसम खा तारें त सभे देखनिहार के उनका संगे हमदर्दी हो जाता। अलबत्ते परभाव उभर के आवता एह कसम के ओह फिलिम में।

चलीं, हम मननीं कि ई त गीत-गवनई भा फिलिम में देखे के मिलल। का एह शब्द के सामान्य जीवन में भी कतहूँ प्रचलन बा? बा आ खूब बा-

अभी त पूरा देस एह शब्द पर खूबे कूदल ह, फानल ह, जब प्रसून जोशी जी के कविता तहलका मचवलख ह-

"सौगंध मुझे इस मिट्टी की,

मैं देश नहीं बिकने दूंगा।"

भा

"सौगंध राम की खाते हैं,

हम मंदिर वहीं बनायेंगे।"

विसवास कइल जाव, खूब बा प्रचलन आ ओह पर विचार कइला के बाद हमरा अइसन आदमी त भकुआ गइल बा। तनी अपना अपना लइकाईं में झाँक के रउओ सभे देखब त सब कुछ सोझा झलके लागी। "विद्या कसम से ले के भगवान कसम" तक के बतकही त सहज लगबे करी, कोट-कचहरी में जज के सोझा

गीता पर हाथ रख के ई बोलल कि "मैं गीता पर हाथ रखकर यह कसम खाता हूँ कि मैं जो कुछ कहूँगा, सच कहूँगा। सच के सिवा कुछ नहीं कहूँगा! "जज भी ओह आदमी के गवाही के मान्यता दे देवेलें आ ई मान लेवेलें कि ई झूठ ना बोलिहें।

ई बात भारतीय शिष्ट के दुनिया में होखो भा लोक में तब नू कहाव। तनीं पाश्चात्य जगत तक में भी एकर पकड़ पर एक हाली नजर डाले के पड़ी। कवनो भी बात के सिद्ध करे खातिर वेस्टर्न कल्चर में एगो शब्द के खूब प्रयोग होला-"By God." माने हम जवन कहतानीं, ऊ हम नइखीं कहत, ई बात ईश्वर कहऽतारें।

मतलब रउआ एह बात में एको रत्ती के अन्तर ना आई। ई सोरहो आना साँच ह।

अब हमनीं के सोझा जवन जवन शब्द आइल, ओकर स्वरुप देखीं -किरिया खाइल, कसम खाइल, सौगंध खाइल भा सौगंध उठावल, शपथ लिहल आ By God -ई सब एके गोदाम से निकलल शब्द बा आ सबकर एके गो अर्थ बा-अपना बात के, अपना तर्क के साँच सिद्ध करे खातिर कइल जा रहल एगो ऊ प्रयास, जवना के साँच साबित करे के कवनो आधार त नइखे बाकिर जवन बा, ऊ साँच बा!

माने इहाँ ई स्पष्ट बा कि एह शपथ-कसम-किरिया-सौगंध के प्रभाव खाली लोक में ही ना, वैश्विक स्तर पर भी बा। मतलब ई क्रिया-विशेष के खास रुप भलहीं सामाजिक दायरा में बन्हाइल बा बाकिर ई सांस्कृतिक स्तर पर वैश्विक जतरा कइले बिया। एकर पहुँच लोक-शिष्ट भा वैश्विक ही ना, घरे-घर तक बा।

बिआहे के विधि पर बात उठावल जाव त देखे के मिलेला कि कनिया आ दुलहा जब सेनूरदान के बाद आग के सोझा भाँवर घूमत सात गो वचन, एक दोसरा के संगे निभावे के वचन लेवेला लोग त ओकरा के का कहल जाई? ई आगि के सोझा ठाढ़ हो के किरिये नू खाइल कहाई। इहाँ सोझा अग्नि देवता रहेनीं आ समाज के लोग से कहीं जादा आग (रुपी देवता) के महत्व दरसावत ई विधि के निपटावे के विधान कइल गइल बा। मतलब इहो निकल सकऽता कि समाज के सोझा भलहीं ऊ दुलहा भा कनिया झूठ बोल देवे लोग, आगि के सोझा एह किरिया के खा के अगर एक-दोसरा से बेईमानी करी लोग त देवता कुपित हो जइहें।

किरिया नाम पर अब एगो बात त उठते नू बा कि आखिर ई खाइल कइसे जाला आ शपथ के लिहल कइसे जाला? हमरा हिसाब से किरिया खाइल एगो क्रिया ही ह। अइसन काम, जवन करल जा रहल बा, ऊ किरिया ह। ई स्त्रीलिंग रूप में गिनाला।

सतजुग में प्रह्लाद नाम के विष्णु जी के एगो भक्त रहलें।उनकर बाबू जी के नाम हिरण्यकश्यप रहे। प्रह्लाद जेतने पूजा-पाठ में मन लगावस, उनकर बाबू एकर ओतने विरोध करस। एक दिन ई बात तूल धइलख-बाबू कहलें कि तू ई कइसे साबित कर सकेलऽ कि तहार ई भगवान इहवों बाड़ें? प्रह्लाद कहलें कि हम ओहि विष्णु भगवान के किरिया खात बानीं। अगर ऊ बाड़ें त परगट हो जइहें।हिरण्यकश्यप एगो देवार में गदा से चोट कइलें आ साँचहूँ तब नृसिह के रुप में भगवान विष्णु आ गइनीं। सारा बधार एह खिस्सा के तब अपना आँख से देखलख आ किरिया के मोल भाव बुझल।

हमरा हिसाब से ई प्रथा सतजुग से ही चलल आवता। खूबी त ई बा एह में कि जेकरा के जादा मानेला आदमी अपना मन से,ओकर किरिया खइलका पर लोग जादा विस्वास करेला। त्रेता में भी एकर झलक भेंटात लउकता।

राजा दशरथ जी अपना रानी कैकेई के किरिया धरवला पर उनका के वचन देहलें कि तहरा जवन मांगे के होखऽ, ऊ मांग लऽ। रानी भी समझदार बाड़ी - ऊ एकरा के बाद में मांगे के बात कह के आगे खातिर टार देत बाड़ी। कुछ बरिस के बाद तब ले ऊ दिन आइए नू जाता। अब किरिया धरवा के नू वचन लेहल बा ई, एकरा के केहू नकारो त नकारो कइसे? इहवें महाकवि गोस्वामी जी एह के अपना ढ़ंग से रेखांकित करत चौपाई लिखले बानीं-

"रघुकुल रीत सदा चली आई

प्राण जाए पर वचन न जाई"

किरिया धरवा के केहू वचन ले लेले बा, ई किरिया तूरल संभव नइखे, जवना कारने राम जी के चउदह बरिस खातिर बनवास जाये ला आ राजगद्दी भरत जी के देवे के वचन निबाहे के पड़ता।

द्वापर में भी भीम द्रौपदी के सोझा किरिया खा के छाती ठोकत ई कहऽष्तारें कि जवन तहरा के जांघ पर सुतावे के कहले बा, हम तहार किरिया खातानीं कि ओकरा ओहि जांघ के चीरेब आ ओह में से जवन खून निकली, ओह खून से तू अपना केस के धोइहऽ। एह किरिया के भीम लाज रखले भी बाड़ें आ द्रौपदी ओह खून से आपन माथा के केस धोवले भी बाड़ी।

अउसे लइकाईं में रउआ भी किरिया धरावेवाला खेला खेललहीं होखेब-"सात आदमी के छुवऽ ना त लइके रहबे"से ले के"हमार डोई पहाड़ पर"-ई किरिये धरावल नू

भइल! छोट-छोट बात पर ई कहल कि"चल मंदिर में आ किरिया खो कि तें साँच बोलऽतारिस" भा "झूठ बोलत होखेब त हमार बेटा मर जाई" आखिर का ह?

एगो अइसन परंपरा, जवना के आजो हमनीं के भोजपुरिया समाज में ओतने पकड़ बा, केतना नीमन बा!हम त भगवान से गोहराएब कि बचल रहो ई आस्था, बनल रहो ई विस्वास ताकि हमनीं के भोजपुरिया बधार कबहूँ भी केहू के सोझा आपन बात साबित करे में समर्थ रहो।

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया बधार

◆◆◆

उदय नारायण सिंह,
छपरा

खुश बानीं हम गाँव में बानीं

आम नीम की छाँव में बानीं।
खुश बानीं हम गाँव में बानीं।

शुद्ध हवा बा साफ बा पानी।
मिसिरी घोरल सबकर बानी ।
चार कोस ले सबसे परिचय,
के बा राजा के हऽ रानी।
सरिसो के फुलवा मुसुकाला,
पायल बनि के पाँव में बानीं।
खुश बानीं हम गाँव में बानीं।

गाँव एक परिवार बुझाला।
सुख-दुख में सब साथ हो जाला।
लोग इकट्ठा होला सगरो,
जब कतहूँ दुख दर्द सुनाला।
लाख अभाव बुझाला तबहूँ,
सरग नियन हम ठाँव में बानीं।
खुश बानीं हम गाँव में बानीं।

बाग बगीचा भरल दुपहरी।
सभे मिलेला गाँव की बहरी।
अलग रंग के अपनापन हऽ
शाम-सबेरे जमे कचहरी।
आपन माटी आपन थाती,
अपनापन की नाँव में बानीं।
खुश बानीं हम गाँव में बानीं।

◆ ◆ ◆

सन्तोष विश्वकर्मा सूर्य

भोजपुरी परम्परागत झूमर गीत

मोरे सिया जी के भींजे चुनरिया
बदरिया तनि थमि के गिरऽ ॥

रहिया में कँटवा अपार मिलि जइहें
हई सुकुमारि मइया बडा़ दुख पइहें।
उपरा से तड़के बिजुरिया,
बदरिया तनि थमि के गिरऽ ॥

वन में ठिकाना बा, का ऊ खइहें?
भारी बिपतिया, वन में सहिहें।
छोड़ि अइली महल अटरिया
बदरिया तनि थमि के गिरऽ ॥

दिन के अन्हरिया में का ऊ सुझिहें,
जनक दुलारी सिया अकुलइहें।
छा जा तू बनि के अंजोरिया
बदरिया तनि थमि के गिरऽ।

◆ ◆ ◆

मोहन पाण्डेय भ्रमर
हाटा कुशीनगर उत्तर प्रदेश

1. शत-शत नमन...

सरहद पर नित मरे सिपाही,
भीतरघात से अलग तबाही।
परसाशन के गला घोंटाता,
नियम के कुछऊ अता ना पाता।
झूठा फरमान जारी होला समाधान के,
शत-शत नमन भारतीय संविधान के।

जात धरम के नाम पर दंगा,
कदम-कदम पर इंगवा पंगा।
आरक्षण के नाम से शोषण,
देश के सबसे बड़ा कुपोषण।
भाषणे में होला खाली बात कल्याण के,
शत-शत नमन भारतीय संविधान के।

घुसखोरी त चरम प बाटे,
ना कोई हक करम प बाटे।
मानव जीवन बदतर लागे,
लोग जियत बा अपना भागे।
कृषि परधान बुरा हाल बा किसान के,
शत-शत नमन भारतिय संविधान के।

2. वर्तमान में भविष्य के...

इम्तहान जिनगी के सब
पास कइल ठीक ह,
वर्तमान में भविष्य के
तलाश कइल ठीक ह।
प्रेरणा के श्रोत बा
अतीत बस मान लीं,
हो जाई आसान राह,
मन में अगर ठान लीं।
जवन चाहेब सब मिली
प्रयास कइल ठीक ह,
वर्तमान में भविष्य के
तलाश कइल ठीक ह।

ऊँच-नीच सब मिली
सम्हर के चली राह में,
टक लगाके बइठल बा
कोई ना कोई चाह में।
आगे बढ़ीं बढ़त रहीं
प्रयास कइल ठीक ह,
वर्तमान में भविष्य के
तलाश कइल ठीक ह।

कबो खुशी मिली कबो
गम के परछाई,
नफरत जे आज करत बा
काल्ह दी बधाई।
कह गइल पुरखा जवन
विश्वास कइल ठीक ह,
वर्तमान में भविष्य के
तलाश कइल ठीक ह।

◆ ◆ ◆

सुजीत सिह
छपरा

लउकत खाँटी प्यार कहाँ बा

लउकत खाँटी प्यार कहाँ बा?
पहिले जस ब्योहार कहाँ बा?

ओल्हा-पाती, आइस-पाइस-
बचपन के संसार कहाँ बा?

मोबाइल में फँसल जिनिगिया-
अंतरदेसी, तार कहाँ बा?

फइलल बाटे घोर अन्हरिया-
जिनगी में उजियार कहाँ बा?

स्वारथ में सब जीयत बाटे-
अब नेहिया के धार कहाँ बा?

अपना के सब बड़वर बूझे-
रिसतन में मनुहार कहाँ बा?

"कृष्णा" मन में डाह के डेरा-
मनभावन तिउहार कहाँ बा?

◆ ◆ ◆

कृष्णा श्रीवास्तव
हाटा, कुशीनगर

जिनिगिया के कथरी

सियले ना सिआए जिनिगिया के कथरी
बेरि-बेरि खुलि जाता बान्हीं चाहे गठरी।

गुनवा अवगुनवा के चिरकुट लगवनीं...
लाल करिया पियर करमवा के मोटरी।
बेरि-बेरि खुलि जाता...

केहू से कहियो न नींक बोली बोलनीं...
पइसा के गरबे उमर ढलल सगरी।
बेरि-बेरि खुलि जाता...

सवारथ लागि सब टेड़-सोझ कइनीं ...
लालच के फेरवा उतार देनीं पगरी।
बेरि-बेरि खुलि जाता...

देखे ना पवनीं केहू अगवा जे बढ़ल..
रसे-रसे रिसेला पपवा के गगरी।
बेरि-बेरि खुलि जाता...

गउवाँ समजवा में झगरा लगवनीं...
होखे जब हल्ला त भाग गइनीं कगरी।
बेरि-बेरि खुलि जाता...

नींक बात तनिको ना कबो सोहाइल...
दंगा -फसाद करीं बार देनीं लूतरी।
बेरि-बेरि खुलि जाता...

नीमन जे होखे ऊ आके फरिआवे
रंगल दुनिया में के बाटे सुथरी।
बेरि-बेरि खुलि जाता बान्हीं चाहे गठरी।
सियले ना सियाए जिनिगिया के कथरी।

◆ ◆ ◆

शालिनी रंजन
प.चम्पारण,बिहार

कलजुगिया माई

प से पाई,म से माई
बाबू पढले इहे पढ़ाई।

अउरी अछर इयाद ना आवे
बस पइसा अउर पइसा भावे।

का बा घर में का ले आईं
बाबू पढले इहे पढ़ाई...

धरती पर बस बिया माई
ओकरे लागी खूब कमाई।

सगरो दुनिया गइल भुलाई
बाबू पढले इहे पढ़ाई...

पइसा लागी छोड़ले नारी
बाल-बच्चा गइले बिसारी।

बेटा के बस फरज निभाई
बाबू पढले इहे पढ़ाई...

पइसा-पइसा खूब बिछवले
माई के खोंइछा भर ना पवले।

कलजुगिया माई कहाँ जुड़ाई
बाबू पढले इहे पढ़ाई...

रिश्ता सगरो ताक पर रखले
बस माई अउर माई जपले।

दुनिया उपर हमरो माई
बाबू पढले इहे पढ़ाई...

समय फेरा से के बा बाँचल
पइसा के टकटकी लागल।

छन में भइली माई पराई
बाबू पढले इहे पढ़ाई...

नाता सगरो निबाहे के चाहीं
ना त पाछे फिर पछताई ।

बितल समइया लौट ना आई
बाबू पढले इहे पढ़ाई....

प से पाई,म से माई
बाबू पढ़ले इसे पढ़ाई...

◆ ◆ ◆

शालिनी रंजन
प.चम्पारण,बिहार

गाँव के राजनीति

अब त गाँव में भी देखनीं ढेर ढेर होखत राजनीत बा
जे मुँह पर मुँहपुराई करे उहे असली लउकत हीत बा

साँच बात कहला पर एह घरी छुट जात बा संघत
लांगा लफंगन के साथ में चलत बा पार्टी में पंघत
इज्जतदार लंगन लफुअन से हो जात भयभीत बा

पहिले आपस के मनमुटाव आपस में फरियात रहे
गलती करेवाला बड़ के हाथ से थप्पड़ से पिटात रहे
आज त तनिमुनी बात पर गेंड़ात आंगन में भीत बा

जगह जगह पर ताश जुआ खेले के बनल स्थान बा
बाप दादा के मान सम्मान के कवनो नाहीं ध्यान बा
अपना स्वार्थ खातिर केहुए के केहे से रहत प्रीत बा

मुँह देख देखके आज काल्ह पर पंचायत होखत बा
जबर के डर से त डेराके अबर अब नाहीं खोंखत बा
जेकर झोरी दाम से भरल बा ओकरे होखत जीत बा

पहिले इज्जत खातिर भाई भाई के गोड़ परत रहे
उनकरा गोड़वा पर अपना माथ के पगरी धरत रहे
बेटा अब अजय बाबूजी के ही हो जात विपरीत बा

◆ ◆ ◆

कुमार अजय सिह
आरा, बिहार

1. कहऽ नमस्कार सबके

सुन लऽ बतिया दिल से हमरो इयार हो
कहऽ नमस्कार सबके।

कइसन बावे खेती बारी
कइसन बाड़े सब नर नारी
कइसन बावे आपन गँउवा जवार हो
कहऽ नमस्कार सबके।

कइसन बाड़ें बरमबाबा
कइसन बाड़ें दुखी बाबा
कइसन सिरी मसान बाबा चमत्कार हो
कहऽ नमस्कार सबके॥

कइसन बाड़ी काली मइया
कइसन बाड़ें गँवई भइया।
कइसन बावे आजु पकवा इनार हो
कहऽ नमस्कार सबके॥

पोखरा पानी बा कि नाहीं
तुरते हमके दिहऽ बताई
करब मेह से दुहाई बार बार हो
कहऽ नमस्कार सबके॥

अइहऽ जब उहवाँ से भाई
अइहऽ तनिको लेके लाई
मिलके खाइल जाई चिउरा कसार हो
कहऽ नमस्कार सबके।

असहों ना गइनीं हम गाँवें
नाहीं गइनी माई थावे
मनवाँ रोवत बावे बानीं मन मार हो
कहऽ नमस्कार सबके॥

कुछहु नाहि लियइबऽ झटपट
होई तहरा से तब खटपट
लेले अइहऽ माटी पाकिठ में प्यार हो
कहऽ नमस्कार सबके॥

◆ ◆ ◆

अरविन्द तिवारी,
प्रवक्ता, बागपत

2- कइसे लोगवा चलिहें चिन्ता में बा सरकार

जस टूटे गठबन्धन तस टूटे पुलवा यार
कइसे लोगवा चलिहें चिन्ता में बा सरकार ।

कहेलें फलाना काम हवे ना हमार हो
कर सरकार ओकर बावे सरोकार हो
सभे कह कह के भागल बावे मन मार
कइसे लोगवा चलिहें चिन्ता में बा सरकार।

जनता के वोट लेके के ना खुशहाल बा
कहीं पुल गिर जाता कहीं जन बेहाल बा
देखि दुरदासा झरे अँखियाँ हमार
कइसे लोग चलिहें चिन्ता में बा सरकार।

जान माल के छती बाटे पी के सराब से
लेकिन उनका चेहरा बा सचहूँ खराब से
डुबल बावे नासा में सगरो जवार
कइसे लोगवा चलिहें चिन्ता में बा सरकार।

केकरा से आस करी परजा दुखारी रे
अँचरा पकड़ रोवे बिटिया दुलारी रे
बुद्ध महावीर भूमि करेला पुकार
कइसे लोगवा चलिहें चिन्ता में बा सरकार।

हाथ जोड़ि कहे अरविन्द अब सुन लीं
आपस में नेह करीं भेदभाव भुन लीं
लिहीं अपना देसवा के फिर से सम्हार
कइसे लोगवा चलिहें चिन्ता में बा सरकार।

◆ ◆ ◆

अरविन्द तिवारी,
प्रवक्ता, बागपत

धुमिल मन किसनवा ए हरी

अरे रामा बरसे न बदरा असढ़वा,
धुमिल मन किसनवा ए हरी।

लागि लागि बदरा उड़ि उड़ि जाला
बइसाख असाढ़ के घाम ना सहाला
अरे रामा मोरवा न नाचेला वनवा।
धुमिल मन किसनवा ए हरी।

ताल पोखरिया के सुखि गइले पानी
चिरई चुरुंग तरसे याद आवे नानी
अरे रामा सुखताने खेतवा में धनवाँ
धुमिल मन किसनवा ए हरी।

रात-दिन गर्मी जीव जन्तु सतावे।
सजनी सजना के संग नभावे।
अरे रामा मधुसूदन तरसेला मनवाँ
धुमिल मन किसनवा ए हरी।

◆ ◆ ◆

ए सखि हमरी दुवरिया

कुहकत बाड़ी कोइलिया
ए सखिहमरी दुवरिया।
लागेला करेजवा में गोलियां
ए सखि कोइलरि बोलिया॥,1

पिछला जनमवाँ में का हम बिगरलीं।
जवने के फल विधना हमरा के दिहली॥
थिर नाहीं आँसू बहे दिन रतिया
ए सखि हमरी दुवरिया--

मन्डूप देखि हमके टर-टर बोले
मोरनी संग मोर वनवाँ में डोले॥
विनु बरखा भींजे चुनरिया
ए सखि हमरी दुवरिया----

एक छन हमरे बिना रहि न पावें।
मटकल देखि हमें घण्टन भरमावें।
उनहूँ के होते होई ससतिया,
ए सखि हमरी दुवरिया--

खुश करे खातिर रुप रचि बनाईं।
लाज हया छूटल अब का लजाई॥
मधुसूदन कब होई पिरितिया,
ए सखि हमरी दुवरिया--

◆ ◆ ◆

मधुसूदन पाण्डेय
देवरिया बाबू, कोटिया

दहाए लगली दिल्ली राजधनिया

ठीक में कहल गइल बा कि भगवान देवे लन त छान्ह फाड़ के आ लेवे लन त कुंचा मार के।दु दिन पहिले लोग पानी बिना बेहाल रहे।लोग खलिहो टैंकर देख के बाल्टी लेके टूट पड़त रहे।टूटो काहे ना पानी बिना काम चल जाए के रहित त रहीम काहे के लिखतन , 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून...बाकिर उनकर कहे के मतलब कुछ आउर रहे। आज उ बात नइखे।आज पानी के रहला से बेसी फायदा पानी के ना रहला में बा।पानी के सुतार रही त नेता ,सत्ता आ राजनीत के उबार ना होई।पानी नइखे तबे नु केहु आमरण अनशन क के फोटो खिचवावता।केहु सरकार के नाकामी बतावता त केहु हरियाणा के ओड़हन देता।एहु से दु डेग हट के केहु मटुकी फोड़ता।अकरहर के हद बा।बताईं इ काम त कृष्णा जी के रहे बाकिर राजनीत जवन ना करावे।कृष्णो जी के अधिकार छीने से लोग बाज नइखे आवत।एही से नु एह लोग प संबिधान प हमला करे के अछरंग लागता।अब बेचारे कृष्णा जी का करस।खीसे इन्द्र भगवान के लगाम छोड़ देलन।कहलन कि मन मना के बरख ल। हम कनगुरी अंगुरी प गोबरधन त ना उठाइब।तब का, पहिलके बरखा में दिल्ली दरियाव हो गइल।असहुंओ पहिले दिल्ली के नाम इन्द्रप्रस्थ रहे। जबसे नेता लोग एहिजा जुट के संउसे देश से दिलगी करे लागल त एकर नाम दिल्ली हो गइल।झुठहुं लोग कहेला कि दिल्ली दिलवालन के ह। बाकिर अबके बुझाइल कि दिल्ली दरियावन के ह।जेने देखीं पोरसा भ पानी लउकता।मंत्री, नेता आ साहेब लोगन के घरे पानी ढुक गइल बा। हवाई आडा के छान्ह- छप्पर गीर गइल।

पानी ना रहे त दिल्ली सरकार हरियाणा के माथे खेलत रहे।गाय प गदह चढ़ावत रहे।अब सोच में पड़ल बा। फर माथे फलहार करे के कवनो चांसे नइखे।

 रिकिया के पापा के हीं..हीं...हीं...हँसे के सुतार लाग गइल।"जहंवा ना जाए दुनिया , ओहिजा जाए मीडिया" ।मीडिया वाला सब भिजत- भांजत आपन बाइसकोप लेके पहुंच गइलन स रिकिया के पापा भी। उनका त बस मौका मिले के चाँही। बाइसकोप देखते आलाप लेवे लगलन, छोट- मोट बरखो के ठाटत नइखे पनिया,

दहाए लगली दिल्ली राजधनिया।

दिल्ली के गली-गली , आर.के.पुरम भरल नली,

 हवाई आडा के ढ़ह गइल छन्हिया,

दहाए लगली दिल्ली राजधनिया।

आम जानता के दुख बुझे वाला के बा।पहिले उनका घरे पानी ना रहे त परशान रहन, अब घर में पानी ढुकला से परशान बारन।एह तरे संउसे दिल्ली में हराहोर मचल बा।

बाकिर के केकरा फेरा में बा?अपने लगने चेरिया बाउर, के कुटी सरकार के चाउर।कांग्रेस संविधान बचावे में लागल बा, आप केजरीवाल बचावे में लागल बा, आ बी.जे.पी. सरकार बचावे में लागल बा।दरियाव के फेरा में के बा?एही से दिल्ली में आज एके गो गीत सुनाता, ' दहाए लगली दिल्ली राजधनिया'।

◆ ◆ ◆

बिनोद सिह गहरवार
राँची

घर भर के पोस देले घर के बड़का भाई

जिनगी बिता दिहले करे में कमाई
घर भर के पोस देले घर के बड़का भाई

बचपन जवानी अउरी आइल बुढापा
इनके कपारे लागल बइमानी के ठापा
भरल जवानी बीतल करे में भलाई
घर भर के पोस देले घर के बड़का भाई

इज्जत बचवले अपना कुल खानदान के
घुसे ना दिहले घर मे केहू अनजान के
लोगवा बिला गइल लगावे में लड़ाई
घर भर के पोस देले घर के बड़का भाई

सातों दिन साल भर घामें नधइले
मिलते मजूरी घरे बैंक से पेठइले
सब लोग काटे चानी खाले मलाई
घर भर के पोस देले घर के बड़का भाई

बुझले ना कबो अपना देहिया के दासा
रहे ना उनका लगे इचिको कवनो नासा
छूटते नोकरिया लोग से भइले पराई
घर भर के पोस देले घर के बड़का भाई

◆ ◆ ◆

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"

सते आगरह के उषा जे बनली आजादी के ऊर्जा

शीतल राय ,गुलाब शेख आ पंडित राजकुमार
'बिपलवी तिरमुरती' फिरंगीके माथाके भार
बन गईल आखिर सतेआगरहके पोखता हथिआर
इसवी सातसे निलहन पर जे डरके भूत सवार
कोनो बहाना तिनू जनेके बने जेल ससुरार
काट सजाय, भरस जुरमाना, करस भिड़ाई आवते बहरा
लेकिन रूके पावे काहाँ निलहा अतेयाचार
निलहा सभे तऽ सैताननके पक्का रिसतेदार
तिनकठियासे तंगहाल चम्पारन परिवार
कैफिन 'साठी'के होखो भा 'कुड़ियाकोठी'के एवरेट
'बेलवा'के एमन सभ रहे दू के दुन्ना चार
ब्रजकिशोर बाबू ,रामनवमी बाबू, राजकुमार
सन् सतरे सतेआगरहके सेनानी तइयार
धाकड़ पत्रकार, लेखक आ इनके दहिना हाँथ
पीर मोहम्मद मूनिस, जिनके चोख कलमके धार
गोहरवलन जा के बापूके 'सुकुल' छोड़ घर-बार
चम्पारन धइके ले अइलन ऐतिहासिक औतार
सतेआगरहके उक्खा बनली सोतंत्रताके उरजा
टुक्की-टुक्की भईल फिरङिया सासनके पुरजा-पुरजा
असहजोग आनदोलन, खादी, बुनियादी तालीम
चहुँपल सत्त-अहिसासे आजादी अपन दुआर
"चम्पारनमें दू अकतूबर" दिलसे ढेर दुलार
एही दिन तऽ "चम्पारनके गाँधी" के औतार
धन्न "प्रजापति मिश्र" कहइलन जे "गाँधी चम्पारनके"
जिनके दम पर भईल बापूके सपना साकार
खोलवौलन पचास पाठशाला सिच्छाके आधार
"सघन छेत्र वृन्दावन"से जे विद्याके विस्तार
"उत्तर बुनियादी विद्यालय" कुंवरबागमें बनल
देसके पहिल आ एक्के ठो संसथा अइसन रहल
सुरू प्रयोगशाला "सुक्कल" जी बापूके चम्पारनमें
दोसर "मिस्सिर" जी खोलनीं बुनियादी आंदोलनमें
दुनू प्रयोगशाला गाँधीके बा नामी चम्पारनमें
आश्रम एगो भितिहरवा तऽ दोसर वृन्दावनमें
जै सतेआगरह! जै चम्पारन ! दुन्नू गाँधीके जै जै !
संताओन , सतरे, सैतालिस भारतमाताके जै जै !

◆ ◆ ◆

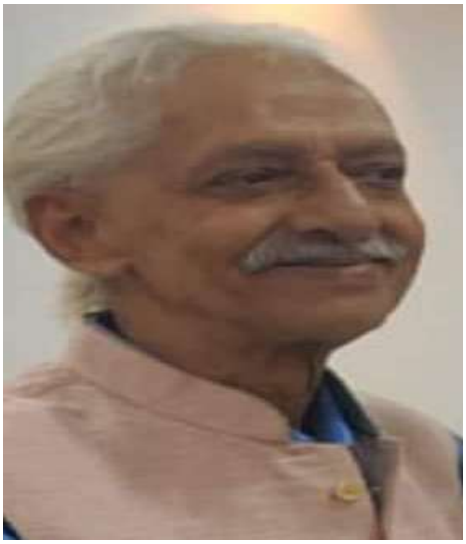

नक्क मझव्वी
पुणे

ठीक बा नू ?

हमरा पाले खुरपी हँसुआ टङ्ली
उठौनीं रउआ कुदारी , ठीक बा नू ?
कोदो मड़ुवा खेसारी हमरा उपज ,
कुंडा डेहरी भा डरामके गरज,
भराईं धान रउआ बखारी,ठीक बा नू ?
हमरा धरा के , रहिया लमहरा के ,
धइनीं रउआ खुद़ारी , ठीक बा नू ?
कब ले भला बाँचो , जबाना घूसके ,
घरवो हमार भीतके - फूसके
हाँथे रउआ लुकारी , ठीक बा नू ?
अन्हारोमें लउके लागेला
जब मनइयो उल्लू बऽनेला
अवासी जोजना खटाईमें
कोवाटर रउआ सरकारी, ठीक बा नू?
मीठे-मीठे बतिया के
गेयानके गगरी छलका के
भट्ठा कए जनेके बइठा के
अब बनीं रउआ पुजारी, ठीक बा नू?
माने ,बड़हन-बड़हन सपना देखा के
उमेदके अंजा खिया के
कुर्सिया धइनीं अंकवारी,ठीक बा नू ?
' नक्क़ ' के टुटही मड़ैया एकचारा
का अङना आ काहाँ दुआरा ?
सोभो रउआ कोठा-अटारी,ठीक बा नू
फुटपथवो नसीब कहाँ ?
खेदाय के जोगाड़ जहाँ !
बनौनीं रउआ भिखारी, ठीक बा नू ?

◆ ◆ ◆

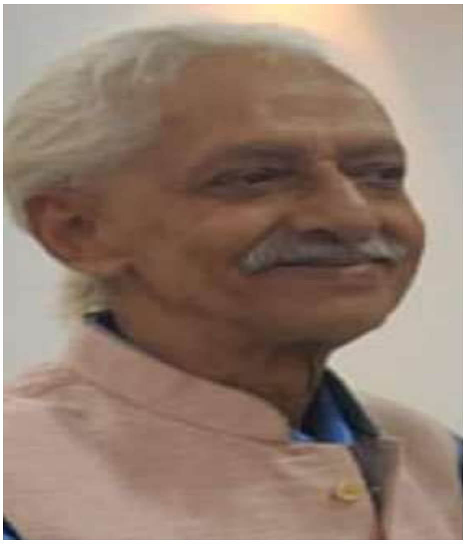

नक्क़ मझव्वी
पुणे

रमेसर अपना दुनू बेटवन का साथे टीभी देखत रहन।
उनका पियास लागल। बड़का बेटा से कहलन-"ए रामू! बड़ा पियास लागल बा। जा एक गिलास पानी ले आवऽ।"
रामू-"लउकत नइखे, हम टीभी देखऽ तानीं। जा अपने से लेलऽ।"
छोटका बेटा कहलख-"ए बाबू! भैया बड़ा बेकहल बा।एकरा बाप-मतारी के लेहाज़ नइखे। का करेम? जा पानी पी लऽ आ एक गिलास हमरो खातिर लेले अइहऽ।"

दु गो मेहरारू लोग आपस में बतियावत रहे।

पहिलकी-"कई बरिस पहिले एगो बाबा कहले रहस भगवान तहरा के अतना दीहें कि तूँ सम्हार ना पइबू।

दूसरकी-"त का भइल?'

पहिलकी-"अब बुझाइल कि ऊ वजन का बारे में कहत रहस।"

डॉक्टर साहेब-राउर बेटवा पगला कइसे गइल?
बाप-"पहिले ऊ जेनेरल बोगी में जतरा करत रहे।
डॉक्टर-"एसे का भइल?"
बाप-ट्रेन में लोग बोलत रहे तनी खिसकऽ, तनी खिसकऽ।
खिसकते खिसकते पूरा दिमागे खिसिक गइल।"

लड़िका लड़की से-"आई लव यू"

लड़की-"एक झापड़ मारेम नू त पटना चल जइबऽ।

लड़िका-"तनी धीरे से मरिहऽ। हाजीपुर एगो काम बा।"

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

नवकी कलम

मन

केतना कुछ बिखरल भइल,
सियाही से बटोरेला ई मन;
फेर एगो उजर पन्ना पर,
कवनो कविता लिखेला ई मन।

हियरा के टोवेला,
भाव के तउलेला;
सिक्का के दुनो ओरी पर,
तब जा के कहीं कुछु बोलेला ई मन।

जिनिगी के जवन बा बन्हाइल गाँठ,
पाँति दर पाँति;
भर जिनिगी खोलत रहेला ई मन।

◆ ◆ ◆

सुहानी राय

कहानी ससुरारी के

आश्चर्यचकित रह गइनीं, देख के मारामारी के,
लाज लागऽता कहे में, कहानी ससुरारी के।

एके लइका एके पतोहि, तबो होखे रगड़ा,
एको दिन सलहन्त ना रहे, रोजे होखे झगड़ा।
सारो बुरबक बुझे ना, मेहरिया के चाल,
ताल में ताल मिला के, उहो बजावे गाल।
जे देखी रोवल कहि ,शासत होता बेचारी के..
लाज लागऽता कहे में,,

सास का करिहें गजन, सासे के निकललस लासा,
पता ना चले ओकरा , कथी के धइलस नाशा।
खदेरे चाहे सास के, निकाल के उनुकर गलती,
चार दिन के दुलहिन, चलावे चाहे चलती।
कइले बिया पी एच डी, काटल, काटल गारी के..
लाज लागऽता कहे में,,

एको पैतरा छोड़लस ना, ऊ बने चाहे फ़ाइन
रातो दिना जून महीना, घर में भइल कचाइन।
तंग आ गइनीं देखि के, हम अइसन व्यवहार,
लूटत इज्जत देखनीं, हम होत तार, तार।
लइको ना इज्जत करे, अचिको महतारी के...
लाज लागऽता कहे में,,

खोजत रहे ओर हमेशा, करे ख़ातिर लड़ाई,
दुश्मन ओकर बनी जाई, जे ओके समझाई।
धमकी देले कटे मरे के, पी लेले फिनाइल,
घर में रहल काल भइल, चैन से बइठ के खाइल।
नाँव हँसा के रख देले बिया ऊ तऽ नारी के..
लाज लागऽता कहे में,,

लूर कुछो के हइए नइखे, ना बोली में रस,
लिहाज ना करे छोट बड़ के, करेले बहस।
बाँहि ममोरे सास के, अपना गटई देले दाब,
लाज शरम घोर के पियलस, तनिको नइखे आब।
कतना करस बड़ाई, दीपक दुराचारी के..
लाज लागऽता कहे में,,

◆ ◆ ◆

दीपक तिवारी
श्रीकरपुर,सिवान

इनरा

नल जबसे गड़ गइल
हमार बहुते तिरस्कार बा
नवका बाबू से कहि दिहऽ
कि इनरा बीमार बा

छोट ज़ब रहलें त एहिए नहात रहलें
लोटा केहू छीन ले त बड़ा खिसियात रहलें
हमार त अब्बो उहे पुरनका दुलार बा
नवका बाबू से कहि दिहऽ
कि इनरा बीमार बा

साँस अब अंतिम बा
केहू बा न आगे पाछे
जमिनियो अब पानी
देवे में देले डाँटे
जान जा अब बबुओ
केकर कवन व्यवहार बा
नवका बाबू से कहि दिहऽ
कि इनरा बीमार बा

बाबूजी जबले रहलें
तबले हमरो खयाल कइलें
केहू कुछ फेंक दिहलें त
बहुते बवाल कइलें
अब कहीं दिखत नहीं
वइसन दुलार बा
नवका बाबू से कहि दिहऽ
कि इनरा बीमार बा

दाँत ज़ब टूट जा त
हमरे लग्गे लावें
हे इनार दाँत जमा द
कई बार गोहरावें
आसानी से लग्गे आ न पइहें
इहाँ बहुते लौजार बा
नवका बाबू से कहि दिहऽ
कि इनरा बीमार बा

जियल अभिन चाहत बाटीं
बस उनके भरोस बा
जाके बस गइले शहर
उनके कवन दोष बा
काश कि सुन लें
इहे अंतिम पुकार बा
नवका बाबू से कहि दिहऽ
कि इनरा बीमार बा

◆ ◆ ◆

सिद्धार्थ गोरखपुरी
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

सफर जिनगी के

सफर जिन्दगी के कटल जा रहल बा,
कई बात मन में खलल जा रहल बा।

बहुत लोग मिललें, बहुत लोग छुटलें,
मने मन सजी दुख सहल जा रहल बा।

दिखाइल ह बचपन के फोटो में चेहरा,
उमिर रोज कुछ कुछ ढलल जा रहल बा।

झराइल रहे कहियो हिप्पी के जइसन,
लगे अब त केसियो झरल जा रहल बा।

बड़ा अंगनइया के घर नींक लागे,
तबो बीच से ही गेंड़ल जा रहल बा।

सजी नेह नाता सवारथ में टूटल,
कहल मेहरी के सुनल जा रहल बा।

बनल नाहि किछुवो ना किछुवो किनाइल,
बपौती रहे ऊ बेंचल जा रहल बा।

◆◆◆

रामेश्वर तिवारी 'राजन'

लागल आग बुझावल जाला

लागल आग बुझावल जाला
डाल के तेल न धधकावल जाला
प्रेम क आग होखे चाहे
होखे फसल के आग।
दुनो के प्रेम से बुझावल जाला
लागल आग के लपट होखे ला जादा।
अंतर ह दूनो के आग में लेकिन
फसल के आग होखेला खारा
प्रेम के आग में ताप होखेला
जीवन के पूरा नाप हाेखेला।
फसल के आग त पानी से बुझेला
प्रेम के आग न बुझवले बुझाला
प्रेम के आग त प्रेम से बुझी।

◆◆◆

मनोज कौशल
कुदरा (कैमूर) , बिहार

हम गीत कहाँ से ले आईं?

हम कइसे गीत सुनाईं,
हम गीत कहाँ से ले आईं?

सून भइल अंगना दुआर,
साँप लोटे चौबार।
कारी बदरिया रस्ता भुलाइल,
झुलुहा कहाँ लगाईं,
हम कजरी कइसे गाईं?
हम गीत कहाँ से ले आईं?

अंगने में ही ना,
अब मन मे भी परल दिवार।
भाई भाई दुश्मन भइल,
टूट गइल घर परिवार।
टुट गइल तुलसी चउरा,
संझा कहाँ जराईं,
प्रभाती कइसे गाईं?
हम गीत कहाँ से ले आईं?

◆ ◆ ◆

सुमन सिह
(शिक्षिका)

बाउर दरुइया

लूटि लेला घर परिवार हो रामा ,
बाउर दरुइया -२
बाउर दरुइया हो , बाउर दरुइया -२
लूटि लेला घर परिवार हो रामा ,
बाउर दरुइया , २ ।

माई बाप रोए देखि पियत संतान के , २
पार घाट लागी कइसे बिटिया सेयान के - २
कइसे चली कलगुजरीया हो रामा ,
बाउर दरुइया ,
लूटि लेला घर परिवार हो रामा ,
बाउर दरुइया -२ ।

बबुआ ना सुनलें हो तनिको कहनवा , २
बेचीं बेचि पियत गइलें माई के गहनवा , २
नीनरी ना आवे घर में रतिया हो रामा ,
बाउर दरुइया ,
लूटि लेला घर परिवार हो रामा ,
बाउर दरुइया -२ ।

लिखि दिहलें खेत पांचि काठावा कोणार के , २
थूकेला समाज देखि देखि व्यवहार के , २
पी के पनरोहवा लोटालें हो रामा ,
बाउर दरुइया ,
लूटि लेला घर परिवार हो रामा ,
बाउर दरुइया -२

लेखनी चलावे ऋषि संझियां विहान हो , २
मन थोर करि रहे लोगवा जहान हो , २
होई कइसे खतम बेमरिया हो रामा ,
बाउर दरुइया ,
लूटि लेला घर परिवार हो रामा ,
बाउर दरुइया ।

◆ ◆ ◆

ऋषि तिवारी
चकरी , सिवान

करऽ ना छिछालेदर

भाखा भोजपुरी क करऽ ना छिछालेदर, ए बबुआ !
हमरे पुरुखन के ह थाती हमार जेवर, ए बबुआ !

कासी कबीर अउ गौतम गोरख के धरती ह भोजपुरिया,
नीमन छोरि न बाउर करिबा खा ला अब तू किरिया,
भउजी के माई जस जाने जहवाँ देवर, ए बबुआ !

याद करा मंगल पाड़े बंधू सिंह के कुर्बानी,
अस्सी बरस के छरफर बाबू कुँवर के जवानी,
बचा ला एकर लाज अउरी राखा तेवर ए बबुआ !

दू पइसा के लालच में जो कलम तुहार बिकाई,
आगे नवहन के हाथे में जागीर कवन दिआई,
चाहे जनि लिखा, बकिर लिखा त सुन्नर, ए बबुआ !

◆ ◆ ◆

मनुहार सुना हे जगजननी

मनुहार सुना हे जगजननी,
साकेत सिंहासन से उतरा,
कइसन कइसन पे कइलू कृपा,
अब दया करा हमरो उपरा,,

रक्तबीज संहारे के तू
काली बनि के धावेलू,
जब जब पाप बढ़ल धरती पर
दुर्गा बनि तू आवेलू,
हमरो उद्धार करे के माई,
अवतार कवन होई दुसरा,,

बानर भालू पे भी ममता,
तू सीता बनि के लुटावेलू,
राधा बनि के द्वापर में तू,
कान्हा के नाच नचावेलू,,
कवना रूप में ए मइया,
फेरबू हथवा हमरे कपरा,,,

नारी धरम सिखावे के तू,
बन के दुखवा सहि गइलू,
रावन अंत करे खातिर,
कइसन गजबे माया रचलू,
फेरु आवा धरती पर मइया,
अ पुरवा हमरे मन के कसरा,,

होखे न विधिना क लेख भले,
हमरी खातिर तू चलि अइहा,
अँचरा से ढाँपि हमें मइया,
अपना गोदिया में बइठइहा,
सब पूजत होखी देवता पित्तर,
बा 'गोपला' के तुहरे असरा,,
मनुहार सुना हे जगजननी,
साकेत सिंहासन से उतरा,,

◆ ◆ ◆

गोपाल दूबे
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे ।

◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

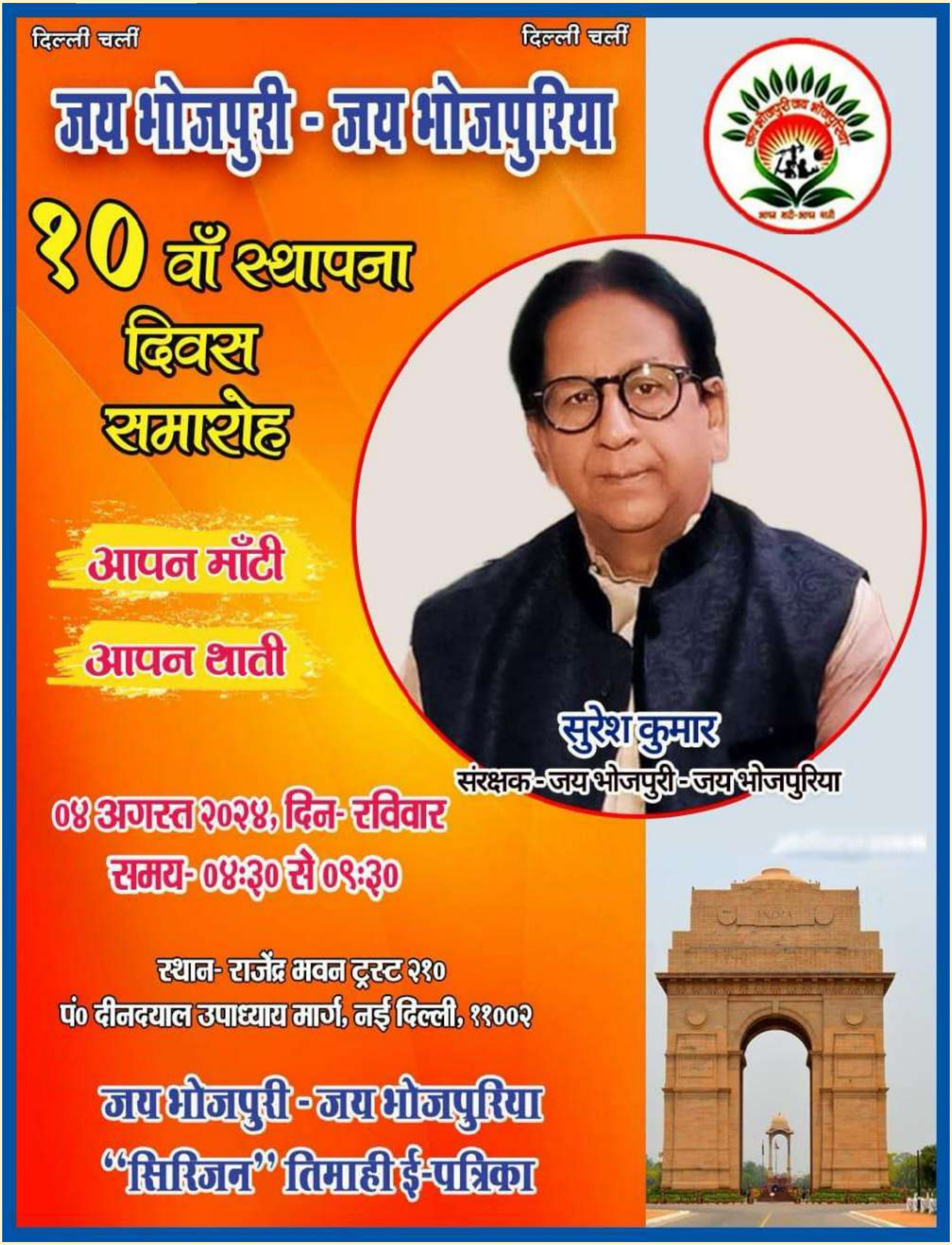

सादर नेवता

रउआ सभे सादर आमंत्रित बानी

www.bhojpurisahityangan.com

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

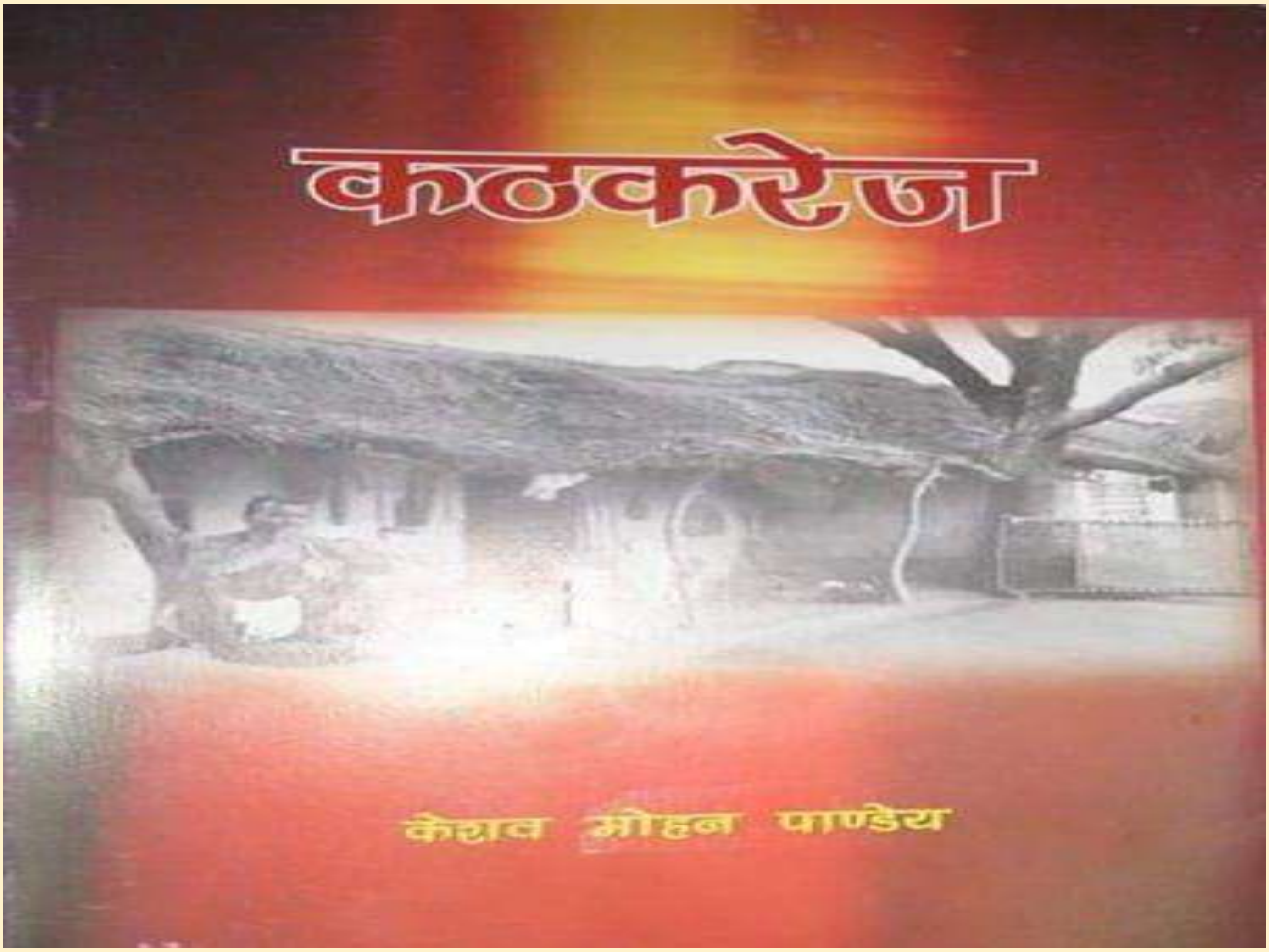

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, सरंक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण तारा श्री केशव मोहन पाण्डेय जी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।